ज्योतिष योग

कुण्डली के बारह भावों में आपका रूप-रंग, वर्ण-भेद, सुख-दुःख, माता-पिता, पति-पत्नी, शत्रु-मित्र, वंधु-बान्धव, रोग-शोक, आय-व्यय एवं आजीविका सम्बन्धी सब रहस्य निहित हैं। इन रहस्यों का पता लगाने के लिए ज्योतिष सम्बन्धी विविध योगों का सहारा लेना पड़ता है। प्रस्तुत पुस्तक में ज्योतिष के अनेक प्रसिद्ध योग, उनकी परिभाषा, उनसे निष्पन्न फल एवं सम्बन्धित टिप्पणी देकर विषय को पूर्णतः स्पष्ट कर दिया गया है।

ज्योतिष-प्रेमियों के लिए एक आवश्यक पुस्तक !

अनुपम पॉकेट बुक्स के अन्तर्गत अनुभवी व्यवस्थापकों के निदशन में तैयार की गई, देश-विदेश के लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकारों की अत्यन्त सुरुचिपूर्ण पुस्तकें ही प्रकाशित होती हैं।

ज्योतिष-योग

डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली
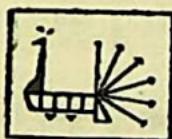
अनुपम पॉकेट बुक्स
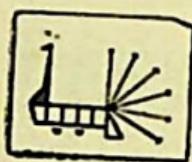
प्रकाशक	अनुपम पॉकिट बुक्स, शक्तिनगर, दिल्ली-७
कॉपीराइट	प्रकाशकाधीन
द्वितीय संस्करण	अगस्त, १९७१
कलापक्ष	शुक्ल, दिल्ली
मुद्रक	पुष्प प्रिंटिंग प्रेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-३२

मूल्य : दो रुपये

अपनी बात

ज्योतिष एक उपयोगी विज्ञान है जिसके द्वारा प्रत्येक मानव अपने भूत, भविष्य और वर्तमान की सम्पूर्ण कहानी जान सकता है और ज्योतिष के आधार पर बनाई गई कुण्डली मानव के मन, मस्तिष्क और सम्पूर्ण शरीर का एक्स-रे है, जिसके बारह भावों में मानव का रूप-रंग, वर्ण-भेद, दुःख-सुख, माता-पिता, पति-पत्नी, शत्रु-मित्र, बन्धु-बान्धव, रोग-शोक, आय-व्यय एवं आजीविका सम्बन्धी रहस्य निहित हैं, लेकिन इन रहस्यों का पता लगाने के लिए ज्योतिष संबंधी विविध योगों का सहारा लेना अत्यन्त आवश्यक है।

प्रस्तुत पुस्तक में ज्योतिष के अनेक प्रसिद्ध योग, उनकी परिभाषा उनसे निष्पन्न फल एवं सम्बन्धित टिप्पणी देकर विषय को पूर्णतः स्पष्ट कर दिया गया है।

मैं उन सभी ज्ञात-अज्ञात विद्वानों एवं ग्रंथों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करता हूँ जिनकी सहायता से यह पुस्तक तैयार हो सकी। विशेष रूप से मैं प्रकाशक महोदय का आभारी हूँ, जिनके निरन्तर आग्रह, लगन और तत्परता के कारण ही यह पुस्तक इतने सुन्दर रूप में आपके हाथों तक पहुँच सकी है।

—नारायणदत्त श्रीमाली

विशिष्ट कुण्डलियाँ

अनुक्रमणिका

प्रस्तावना

आकाश की ओर दृष्टि डालते ही ग्रहों और उनके अनवरत चक्र को देखकर मानव आश्चर्यान्वित हो उठता है। उसके मन में सहज ही उत्कंठा जाग्रत होती है कि ये ग्रह क्या हैं? सूर्य नित्य प्रातः पूर्व की ओर से उगता और सायं पश्चिम की ओर डूबता क्यों दिखाई देता है? ये ज्योत्सनित ग्रह क्या हैं? नक्षत्र क्या हैं? तारे क्यों और कैसे टूट-टूटकर गिरते हैं? पुच्छल तारों का रहस्य क्या है? ये और ऐसे सैकड़ों रहस्यमय प्रश्न मानव-मस्तिष्क में उठते हैं और उनका हाल तथा समाधान पाने को वह बेचैन और आतुर हो उठता है।

मानव-स्वभाव ही ऐसा है कि उसके दिमाग में जब भी 'क्यों' प्रश्न उठता है, वह उसे सुलझाने को जी-जान से लग जाता है और इस जिज्ञासा की भूख ने ही बर्बर मानव को बीसवीं शताब्दी का सभ्य मानव बना दिया है। मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से विश्लेषण करने पर पता चलता है कि मानव की जिज्ञासा ने ही उसे ज्योतिष शास्त्र जैसे गूढ़ और गम्भीर विषय की ओर प्रवृत्त किया। उसने अपनी आंखों से आकाशीय ग्रह-पिण्डों का अध्ययन किया और उसके निश्चित सिद्धान्त स्थिर किये। धीरे-धीरे हमारे पूर्वज ऋषि-महर्षि ज्योतिर्विज्ञान की अनेकानेक गुत्थियाँ सुलझाते गये और तब उनके सामने जो सत्य प्रोद्भूत हुआ, वह अनिर्वचनीय और सत्य के अधिकाधिक निकट था। ग्रहों के माध्यम से उनका भूत, वर्तमान और भविष्य स्वयं उनके सामने साकार उपस्थित हो गया और इसी तत्त्व को समझने के कारण वे 'दिव्यद्रष्टा' ऋषि कहलाये।

ज्योतिर्विज्ञान भी अन्य विज्ञानों की तरह ही निश्चित रूप से एक विज्ञान है, जो परीक्षण और अनुसंधान की कसौटी पर खरा उतरता है। इसके भी निश्चित सिद्धान्त हैं, और उन सिद्धान्तों को जब प्रयोग का कसौटी पर कसते हैं, तो वे बिल्कुल सत्य सिद्ध होते हैं, लेकिन जिस किसी भी विज्ञान के सिद्धान्त समझ लेने मात्र से उस विषय में वह प्रकार पारंगत नहीं हुआ जा सकता, ठीक उसी प्रकार ज्योतिर्विज्ञान में भी सिद्धान्तों के साथ-साथ प्रयोगों की महत्ता भी अनिवार्य है। एक डाक्टर केवल 'थ्योरी' पढ़कर ही कुशल डाक्टर नहीं बन सकता, जब तक कि उसके पास उसका अनुभव नहीं हो, क्योंकि बिना 'प्रेक्टिकल' के 'थ्योरी' जड़ है। ठीक इसी प्रकार ज्योतिर्विज्ञान में भी पारंगत होने एवं इसके रहस्यों को समझने के लिए 'थ्योरी' के साथ-साथ 'प्रेक्टिकल ज्ञान' भी अनिवार्य है।

कुण्डली अपने आप में जीवन का सम्पूर्ण चित्र है। इसके बारहों भाव मानव-जीवन की समस्त आवश्यकताओं को अपने आप में समेट लेते हैं। मानव, उसका रूप-रंग, वर्ण भेद, सुख, दुख, माता-पिता, व्यवसाय, धन, बन्धु, विद्या, शत्रु, रोग, मृत्यु आजीविका, आय-व्यय, आदि सैकड़ों तथ्य अपने आप में समेटे हुए है, लेकिन जब तक सिद्धातों के आधार पर रहस्यों को स्पष्ट न किया जाय, कुण्डली रहस्यमय ही बनी रहती है।

आर्ष ऋषियों ने कुण्डली में छिपे इन रहस्यों को स्पष्ट करने के लिए विभिन्न योगों का सहारा लिया। योग मुख्यतः तीन प्रकार से बनते हैं—

१. ग्रहों का ग्रहों से संबंध होने पर; २. राशियों का राशियों से संबंध होने पर; ३. ग्रहों का राशियों से संबंध होने पर।

राशियों तथा ग्रहों से बनकर योग मानव-कुण्डली पर अपना विशेष प्रभाव डालते हैं। इन योगों में भी मुख्यतः तीन प्रकार के योग हैं—

१. शुभ योग ; २. अशुभ योग ; ३. राज योग।

कुण्डली का समस्त रहस्य ही इन योगों तथा उनके समझने में

निहित है और जब योग स्पष्ट हो जाते हैं तो देखने वाले के सामने मानव-जीवन का सम्पूर्ण चित्र उपस्थित हो जाता है।

हिन्दी में इस प्रकार की कोई पुस्तक उपलब्ध नहीं है, जो योगों को माध्यम बनाकर लिखी गई हो या जिसमें सभी योगों का विवेचन किया गया हो। जो छोटी-मोटी पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, उनमें भी कुछ राजयोग ही अंकित किये गये हैं। सभी योगों को समझना अथवा उनको स्पष्ट करना सभी के वश की बात भी नहीं। इस प्रकार की पुस्तक की हिन्दी में नितान्त आवश्यकता थी, जो योगों का पूर्ण विवेचन उपस्थित करती हो। कुण्डली के मूल रहस्य को स्पष्ट करने के लिए मैंने सभी प्रकार के योगों का विवरण इस पुस्तक में स्पष्ट किया है, परन्तु योगों का विवेचन करने से पूर्व यह आवश्यक है कि पाठकों को राशियों एवं ग्रहों से सम्बन्धित मोटी-मोटी बातों को स्पष्ट कर दिया जाय, जिससे पाठकों को योग समझने में सुविधा हो।

जातक—जिस पुरुष या स्त्री की कुण्डली होती है, उस व्यक्ति या स्त्री को जातक के नाम से पुकारा जाता है।

कुण्डली—जिस विशेष द्वादश चक्र द्वारा ग्रहों की स्थिति स्पष्ट की जाती है, वह कुण्डली कहलाती है।

भाव—कुण्डली में कुल बारह घर बने होते हैं, ये बारह घर ही भाव कहलाते हैं।

लग्न—कुण्डली में ऊपर की ओर मुख्य भाव को लग्न कहते हैं।

लग्नेश—लग्न के स्वामी को लग्नेश कहते हैं।

भावेश—प्रत्येक भाव के स्वामी को भावेश कहते हैं।

कुण्डली-निर्णय—कुण्डली बनाने की दो पद्धतियाँ हैं—

१. भारतीय पद्धति; २. पाश्चात्य पद्धति।

भारतीय पद्धति में कुण्डली के चौकोर हिस्से को बीचोबीच से तिरछी रेखाएँ काटती हैं और फिर प्रत्येक हिस्से को दो-दो भागों में बाँटकर कुल बारह भाव बनाये जाते हैं, परन्तु इसमें लग्न का स्थान सर्वोपरि होता है। लग्न चौथी राशि का होता है तो सबसे ऊपर के खाने में ४ का अंक लिख दिया जाता है और यदि १०वीं राशि का लग्न हो तो ऊपर के खाने में १० का अंक लिख दिया जाता है।
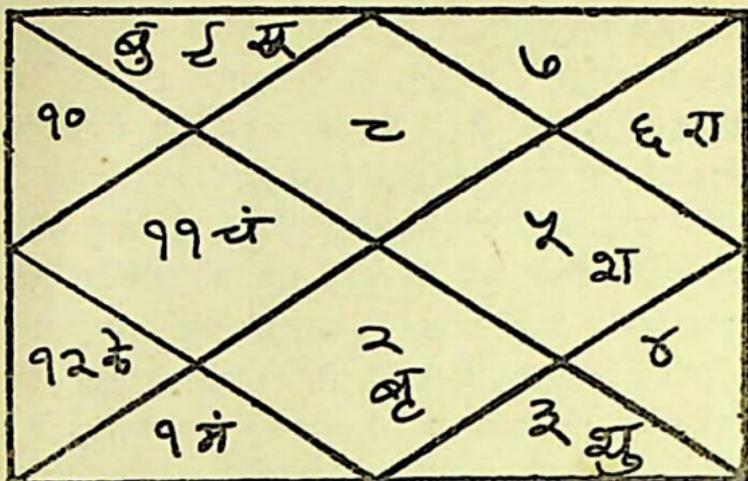
लग्न किस राशि का है, इसका पता उसमें अंकित अकों से चल जाता है। उदाहरणार्थ, उपर्युक्त कुण्डली में सबसे ऊपर ८ का अंक है। अतः स्पष्ट है कि इस कुण्डली का लग्न आठवीं राशि का है। कुल राशियां १२ होती हैं, अतः बारह के अंक के बाद फिर एक दो के अंक लिख लिये जाते हैं।

ग्रहों के संक्षिप्त नाम—कुण्डली में कुल नौ ग्रह लिखे रहते हैं, पर उनका पूरा नाम न लिखकर ग्रहों के संक्षिप्त अक्षर ही लिखे रहते हैं। ग्रहों से सम्बन्धित संक्षिप्त अंक इस प्रकार हैं—

सूर्य	=	सू०
चन्द्र	=	च०
मंगल	=	मं०
बुध	=	बु०
बृहस्पति	=	बृ०
शुक्र	=	शु०
शनि	=	श०
राहु	=	रा०
केतु	=	के०

इसके साथ ही साथ पाठकों के लिए यह भी आवश्यक है कि वे ग्रहों के अंग्रेजी, अरबी और संस्कृत पर्यायवाची शब्द भी जान लें। पाठकों की जानकारी हेतु आगे ग्रहों के बारे में पूर्ण जानकारी प्रस्तुत कर रहा हूँ।

क्रम संख्या	ग्रहों के प्रसिद्ध नाम	अंग्रेजी नाम	अरबी नाम	पर्यायवाची संस्कृत शब्द
१.	सूर्य	Sun	शम्स आफताव	आदित्य, अर्क, अर्यमा, इन, ऊष्ण, रश्मय, गृहपति, दिवाकर, दिनकर, प्रभाकर, रवि, विभाकर, दिनेश, भानु, सूर, सविता, भास्कर, मार्तण्ड।
२.	चन्द्र	Moon.	कमर माह (फा०)	इन्दु, कलानिधि, चन्द्र, द्विजराज, नक्षत्रेश, मृगांक, मयंक, राकेश, रजनीश, विधु, सोम, शशि, शशांक, शशधर, सुधाकर, हिमांशु, तारापति, तारेश।
३.	मंगल	Mars	मरीक मिर्रीख (फा०)	अंगारक, कुज, भौम, महीसुत, मिर्रीख, भू-सुत, लोहितांग, धराज, अवनिज, क्रूरनेत्र, क्षितिनन्दन।
४.	बुध	Mercury	उतारद तीर (फा०)	इन्दुसुत, चन्द्रपुत्र, चन्द्रात्मज, ज्ञ, बोधन, वित्, सौम्य, रोहिणेय, श्यामगाव, हेम्न, तारासूनु।
५.	बृहस्पति	Jupiter	मुश्तरी अहूरमज्द (फा०)	अंगीरस, अंगिरा, आर्य, गुरु, जीव, सुराचार्य, वाचस्पति, सुरगुरु, सूरि, देवगुरु।

६.	शुक्र	Venus	जुहरी नाहीद (फा०)	उसना, कवि, भार्गव, भृगु, भृगुसुत, दैत्यगुरु, सितसूनु, काण, दानवेज्य ।
७.	शनि	Saturn	जुहल केदवान (फा०)	असित, आर्कि, छायात्मज, मँद, शनैश्चर, सूर्यपुत्र, रविज, पंगु, सौरि, भाष्करी ।
८.	राहु	Dragons head	रास	अगु, तम, स्वर्भानु, अभि, कृष्णांग, कपिलासदीर्घ, असुर, गुह सर्प, फणि, आगव ।
९.	केतु	Dragons tail	जनब	ध्वज, शिखि, राहु-पुच्छ ।
१०.	वरुण	Uranus Harschel		—
११.	वारुणी	Neptune		—

ग्रहों का अंग-विचार—कौन-कौन-सा ग्रह किस अंग या भाव को विशेष रूप से प्रभावित करता है, इसे निम्न प्रकार से जानना चाहिए।

१.	सूर्य	आत्मा
२.	चन्द्र	चित्त (मन)
३.	मंगल	पराक्रम
४.	बुध	वचन(वाणी, वाक्-शक्ति)
५.	बृहस्पति	सुख, विज्ञान
६.	शुक्र	भोग-विलास (काम)
७.	शनि	दुःख

कुण्डली में जो ग्रह बली होता है तो उससे सम्बन्धित अंग भी बली होता है, इसके विपरीत दुर्बल या कमजोर ग्रह होने पर उससे सम्बन्धित अंग भी निर्बल होता है।

ग्रहों से सम्बन्धित रंग—

१.	सूर्य	श्याम और लाल मिश्रित।
२.	चन्द्र	सफेद
३.	मंगल	लाल और सफेद मिला हुआ वर्ण।
४.	बुध	हरित वर्ण (दूर्वा के समान)
५.	बृहस्पति	पीला
६.	शुक्र	सफद
७.	शनि	काला
८.	राहु	नीला
९.	केतु	विविध रंग मिश्रित

ग्रहों की अवस्था—ग्रहों की कुल दस प्रकार की अवस्थाएँ होती हैं, जिसे जानना पाठकों के लिए आवश्यक है। पाठकों के लाभार्थ ग्रहों की अवस्था आगे के पृष्ठों पर स्पष्ट कर रहा हूँ।

क्रम संख्या	ग्रह-अवस्था	ग्रहावस्था कारण
१.	दीप्त	अपनी उच्च राशि में या त्रिकोण में स्थित ग्रह 'दीप्त' कहलाता है।
२.	मुदित	मित्र की राशि पर बैठा हुआ ग्रह 'मुदित'

		कहलाता है ।
३.	स्वस्थ	अपनी राशि पर जो ग्रह होता है वह 'स्वस्थ' कहलाता है।
४.	शान्त	शुभ ग्रह के घर में बैठा ग्रह 'शान्त' ग्रह कहलाता है ।
५.	शक्त	स्फुट रश्मि जालों से अत्यन्त शुद्ध ग्रह 'शक्त' होता है।
६.	प्रपीड़ित	ग्रहों से पराजित होने पर ग्रह 'प्रपीड़ित' माना जाता है ।
७.	दीन	शत्रु की राशि या नवांश में शत्रु की राशि पर होने से 'दीन' ग्रह माना जाता है।
८.	खल	पाप ग्रहों के बीच पड़ा ग्रह 'खल' होता है।
९.	भीत	नीच ग्रहों के साथ होने से ग्रह भीत कहलाता है।
१०.	विकल	जो ग्रह कुण्डली में अस्त होकर पड़ता है वह ग्रह 'विकल' कहलाता है।

ग्रहों के रत्न—यदि ग्रह वक्री या निर्बल होता है तो शुभकार्य के लिए ग्रह से सम्बन्धित रत्न धारण किया जाता है। नीचे ग्रह से सम्बन्धित रत्न और धातु के नाम दिये जा रहे हैं—

क्रम संख्या	ग्रह	धातु	रत्न
१.	सूर्य	स्वर्ण	माणिक्य
२.	चन्द्र	चाँदी	मोती
३.	मंगल	विद्रुम	मूंगा
४.	बुध	स्वर्ण	पन्ना
५.	बृहस्पति	चाँदी	पुखराज
६.	शुक्र	चाँदी	हीरा
७.	शनि	लोहा	नीलम
८.	राहु	पंचधातु	गोमेदक
९.	केतु	पंचधातु	वैदूर्य

ग्रह जाति

१.	सूर्य	क्षत्रिय
२.	चन्द्र	वैश्य
३.	मंगल	क्षत्रिय
४.	बुध	शूद्र
५.	बृहस्पति	ब्राह्मण
६.	शुक्र	ब्राह्मण
७.	शनि	शूद्र
८.	राहु	शूद्र
९.	केतु	शूद्र

ग्रह दिशा स्वामी

१.	सूर्य	पूर्व दिशा
२.	चन्द्र	वायव्य
३.	मंगल	दक्षिण
४.	बुध	उत्तर
५.	गुरु	ईशान
६.	शुक्र	अग्निकोण
७.	शनि	पश्चिम
८.	राहु	नैऋत्य
९.	केतु	नैऋत्य

ग्रह विचार—ग्रहों की पूर्ण जानकारी के लिए यह भी आवश्यक है कि पुरुष, स्त्री तथा नपुंसक संज्ञक ग्रह भी जान लें।

१.	सूर्य	पुरुष
२.	चन्द्र	स्त्री
३.	मंगल	पुरुष
४.	बुध	नपुंसक
५.	गुरु	पुरुष
६.	शुक्र	स्त्री
७.	शनि	नपुंसक
८.	राहु	नपुंसक
९.	केतु	नपुंसक

शुभ ग्रह—चन्द्र, बुध, शुक्र, केतु और बृहस्पति ये क्रम से अधिकाधिक शुभ ग्रह माने गये हैं।

पाप ग्रह—सूर्य, मंगल, शनि और राहु ये क्रम से अधिकाधिक पाप ग्रह माने जाते हैं।

शुभग्रह और पापग्रहों की जानकारी के पश्चात् स्वगृह, मूल त्रिकोण, उच्च और नीच ग्रहों की जानकारी भी आगे का विषय समझने के लिए अनिवार्य है।

स्व-ग्रह

१.	सूर्य	सिंह राशि का स्वामी
२.	चन्द्र	कर्क राशि का स्वामी
३.	मंगल	मेष और वृश्चिक राशि का स्वामी
४.	बुध	मिथुन और कन्या राशि का स्वामी
५.	गुरु	धनु और मीन राशि का स्वामी
६.	शुक्र	वृष और तुला राशि का स्वामी
७.	शनि	मकर और कुंभ राशि का स्वामी
८.	राहु	कन्या राशि का स्वामी
९.	केतु	मीन राशि का स्वामी

उच्च ग्रह

क्रम संख्या	ग्रह नाम	उच्च राशि	अंश जहाँ तक ग्रह उच्च माना जाता है
१.	सूर्य	मेष	१० अंशों तक
२.	चन्द्र	वृष	३ ,, ,,
३.	मंगल	मकर	२८ ,, ,,
४.	बुध	कन्या	१५ ,, ,,
५.	गुरु	कर्क	५ ,, ,,
६.	शुक्र	मीन	२७ ,, ,,
७.	शनि	तुला	२० ,, ,,
८.	राहु	मिथुन	१५ ,, ,,
९.	केतु	धनु	१५ ,, ,,

जो ग्रह जिन-जिन राशियों पर उच्च माने जाते हैं, उससे सातवीं

राशि पर वही ग्रह नीच का माना जाता है। पाठकों को सुविधार्थ नीच ग्रह व उनके अंश भी स्पष्ट कर रहा हूँ।

नीच ग्रह

क्रम संख्या	ग्रह नाम	नीच राशि	अंश जहाँ तक ग्रह नीच माना जाता है
१.	सूर्य	तुला	१० अंशों तक
२.	चंद्र	वृश्चिक	३ ,, ,,
३.	मंगल	कर्क	२८ ,, ,,
४.	बुध	मीन	१५ ,, ,,
५.	गुरु	मकर	५ ,, ,,
६.	शुक्र	कन्या	२७ ,, ,,
७.	शनि	मेष	२० ,, ,,
८.	राहु	धनु	१५ ,, ,,
९.	केतु	मिथुन	१५ ,, ,,

उच्च-नीच ग्रह व उनके अंश जान लेने के पश्चात् पाठकों को ग्रहों की मूल त्रिकोण राशियों व उनके अंशों को भी सावधानीपूर्वक जान लेना चाहिए। पाठकों के हितार्थ नीचे जातकों के मूल त्रिकोण राशियाँ व उनके अंश दिये जा रहे हैं—

क्रम संख्या	ग्रह	मूलत्रिकोण राशि	अंश जहाँ तक ग्रह मूल त्रिकोण रहता है
१.	सूर्य	सिंह	१ से २० अंशों तक
२.	चंद्र	वृष	४ से ३० अंशों तक
३.	भौम	मेष	१ से १८ अंशों तक
४.	बुध	कन्या	१६ से २० अंशों तक
५.	बृहस्पति	धनु	१ से १३ अंशों तक
६.	शुक्र	तुला	१ से ३० अंशों तक
७.	शनि	कुंभ	१ से १० अंशों तक
८.	राहु	कर्क	१५ से २५ अंशों तक
९.	केतु	मकर	१५ से २५ अंशों तक

ग्रहों का मैत्री विचार—ग्रहों में परस्पर पाँच प्रकार की मित्रता

होती है—१. अधिमित्र (घनिष्ठ मित्रता) २. मित्र ३. सम ४. शत्रु ५. अधिशत्रु (घोर शत्रुता)

कुण्डली में यदि कोई ग्रह अपने मित्र के घर में पड़ा होता है तो शुभ फल देता है, परन्तु शत्रु के स्थान पर पड़ा ग्रह पूर्ण फल नहीं दे पाता।

सूर्य के चन्द्र अधिमित्र, बुध मित्र, मंगल, गुरु सम, शुक्र शत्रु तथा शनि अधिशत्रु है। चन्द्र के बुध अधिमित्र, शुक्र गुरु, शनि मित्र, सूर्य सम तथा मंगल शत्रु है। मंगल के शनि मित्र, सूर्य-चन्द्र-गुरु सम, शुक्र शत्रु तथा बुध अधिशत्रु हैं। बुध के सूर्य अधिमित्र, गुरु मित्र, चन्द्र-शुक्र सम, मंगल शनि शत्रु हैं। गुरु के मंगल-चन्द्र अधिमित्र, शनि मित्र, सूर्य सम तथा शुक्र-बुध अधिशत्रु हैं। शुक्र के गुरु मित्र, सूर्य-चन्द्र, बुध-शनि सम तथा मगल शत्रु हैं तथा शनि के गुरु मित्र, चन्द्र-मंगल-बुध-शुक्र सम तथा सूर्य अधिशत्रु हैं।

पाठकों की सुगमता के लिए नीचे ग्रहों का मैत्री-चक्र दिया जा रहा है।

ग्रहों का मैत्री-चक्र

	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
अधिमित्र	चन्द्र	बुध	राहु केतु	सूर्य	मंगल चन्द्र	—	—	मंगल केतु	मंगल राहु
मित्र	बुध	शुक्र गुरु शनि	शनि	गुरु	शनि	गुरु	राहु केतु गुरु	शनि	शनि
सम	मंगल गुरु	सूर्य	सूर्य, चन्द्र, गुरु	राहु, केतु चन्द्र, शुक्र	राहु, केतु सूर्य	राहु, केतु सूर्य, चंद्र बुध, शनि	चन्द्र, मंगल बुध, शुक्र	बुध गुरु शुक्र	बुध गुरु शुक्र
शत्रु	शुक्र	मंगल	शुक्र	मंगल शनि	—	मंगल	—		
अधिशत्रु	राहु, केतु शनि	राहु, केतु	बुध	—	शुक्र बुध	—	सूर्य	सूर्य चन्द्र	सूर्य चन्द्र

तात्कालिक मैत्री—स्थायी मैत्री के अतिरिक्त ग्रहों में परस्पर तात्कालिक मैत्री भी होती है जो निम्न प्रकारेण है।

जो ग्रह जिस स्थान पर है, वह उससे २,३,४,१०,११, और १२ वें भाव के ग्रह के साथ मित्रता रखता है तथा १,५,६,७,८, और ६वें भाव के ग्रह के साथ तात्कालिक शत्रुता रखता है।

ग्रहों के बल—ग्रहों के कुल ६ प्रकार के बल होते हैं।

१. स्थान बल—जो ग्रह उच्च, स्वगृही, मित्रगृही और द्रेष्काणस्थ होता है, वह ग्रह स्थान बली कहलाता है। चन्द्र और शुक्र, वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर तथा कुम्भ में स्थान बली तथा सूर्य, भौम, बुध, बृहस्पति और शनि, मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुंभ राशियों में स्थान बली कहलाते हैं।

२. दिग्बल—लग्न में बुध और गुरु, चौथे भाव में शुक्र और चन्द्र, सातवें भाव में शनि तथा दसवें भाव में सूर्य और मंगल ग्रह हों तो वे दिग्बली कहलाते हैं।

३. कालबल—रात में जन्म लेने वाले जातक की जन्मकुण्डली में चन्द्र, शनि तथा मंगल एवं दिन में जन्म लेने वाले जातक की कुण्डली में सूर्य, बुध और शुक्र कालबली कहलाते हैं।

४. नैसर्गिक—शनि से मंगल, मंगल से बुध, बुध से गुरु, गुरु से शुक्र, शुक्र से चन्द्र और चन्द्र से सूर्य उत्तरोत्तर नैसर्गिक बली कहलाते हैं

५. दृग्बल—शुभ ग्रहों से देखे जाने वाले ग्रह दृग्बली कहलाते हैं।

६. चेष्टा बल—मकर, कुंभ, मीन मेष, वृष मिथुन राशियों में सूर्य और चन्द्र, चन्द्र और मंगल, चन्द्र और बुध, चन्द्र और गुरु, चन्द्र और शुक्र तथा चन्द्र और शनि साथ-साथ बैठे हों तो वे चेष्टा बली कहलाते हैं।

बलवान ग्रह अपने स्वभाव के अनुसार जिस स्थान पर होता है, वहां वह वैसा ही फल देता है।

ग्रहों की दृष्टि—प्रत्येक ग्रह अपने स्थान से सातवें भाग को पूर्ण दृष्टि से, तीसरे और दसवें भाव को एक चरण दृष्टि से, पाँचवें और नवें भाव को दो चरण दृष्टि से तथा चौथे-आठवें भाव को तीन चरण दृष्टि से देखता है, परन्तु मंगल चौथे-आठवें भाव को, बृहस्पति पाँचवें-नवें भाव को तथा शनि तीसरे-दसवें भाव को भी पूर्ण दृष्टि से देखते हैं।

पाठकों की सुगमता हेतु ग्रहों की दृष्टि नीचे स्पष्ट कर रहा हूँ ।

ग्रहों की दृष्टि

ग्रह	एक चरण दृष्टि	दो चरण दृष्टि	तीन चरण दृष्टि	संपूर्ण दृष्टि
सूर्य	३,१०	६,५,	८,४	७
चन्द्र	३,१०	६,५	८,४	७
मंगल	३,१०	६,५	८,४	४,७,८
बुध	३,१०	६,५	८,४	७
बृहस्पति	३,१०	६,५	८,४	५,७,६
शुक्र	३,१०	६,५	८ ४	७
शनि	३.१०	६,५	८,४	३,७,१०
राहु	३,६	२,१०	स्वयं के घर में	५,७
केतु	६	२,१०	स्वयं के घर में	५,७

दृष्टि प्रकार—सूर्य और मंगल की ऊर्ध्व दृष्टि है, शुक्र और बुध की कटाक्ष दृष्टि है, चन्द्र और बृहस्पति की सम दृष्टि है तथा शनि एवं राहु की दृष्टि नीचे रहती है ।

ग्रह-स्वभाव—सूर्य स्थिर बुद्धि, चन्द्र चंचल, मंगल क्रूरमति, बुध निश्चित स्वभाव, गुरु कोमलमति, शुक्र लघु बुद्धि तथा शनि तीक्ष्ण प्रकृति का होता है ।

ग्रहों से देखे जाने वाले फल

१. सूर्य—सूर्य से पिता, आत्मा, प्रताप, आरोग्यता, आसक्ति और लक्ष्मी का विचार किया जाता है।

२. चन्द्र—चन्द्र से मन, बुद्धि, राजा की प्रसन्नता, माता और धन का विचार करना चाहिए ।

३. भौम—पराक्रम, रोग, गुण, भाई, भूमि, शत्रु और जाति के संबंध में मंगल से विचार करना चाहिए ।

४. बुध—विद्या, बन्धु, विवेक, माया, मित्र और वचन का विचार बुद्ध से होता है ।

५. गुरु—बुद्धि, शरीर-पुष्टि, गौरव, बड़ा भाई, धन-दौलत, पुत्र और ज्ञान का विचार गुरु से होता है ।

६. शुक्र—शुक्र से रुचि, वाहन, भूषण, कामदेव, व्यापार और सुख का विचार किया जाता है।

७. शनि—आयु, जीवन, मृत्यु का कारण, विपत्ति आदि का विचार इसी ग्रह से होता है।

८. राहु—इससे पितामह (दादा) का विचार करें।

९. केतु—इससे मातामह (नाना) का विचार करना चाहिए।

ग्रहों की वृद्धि—सूर्य के साथ शनि हो तो उसका बल बढ़ता है। शनि के साथ मंगल हो तो मंगल अधिक बलशाली हो जाता है। मंगल के साथ गुरु, गुरु के साथ चन्द्र, चन्द्र के साथ शुक्र, शुक्र के साथ बुध तथा बुध के साथ चन्द्र के होने पर उनका बल बढ़ता है।

मंगल के साथ गुरु हो तो गुरु का बल बढ़ता है, इस प्रकार गुरु के द्वारा चंद्र का चंद्र के द्वारा शुक्र का तथा शुक्र के द्वारा बुध का एवं बुध के द्वारा चंद्र का बल बढ़ता है।

ग्रहों की हानि—सूर्य के साथ चंद्र, लग्न से चौथे भाव में बुध, पाँचवें भाव में गुरु, दूसरे भाव में मंगल, छठे में शुक्र तथा सातवें भाव में शनि हो तो वे उस भाव को विफल कर देते हैं या उस भाव की हानि कर देते हैं।

ग्रह दोषापहरण—राहु का दोष बुध नाश करता है। इन दोनों के दोषों को शनि नाश करता है। इन तीनों के दोषों को मंगल नाश करता है। इन चारों के दोषों को शुक्र नाश करता है। इन पाँचों के दोषों का नाश बृहस्पति करता है। इन छहों के दोषों का संहार चंद्र करता है तथा इन सातों के दोषों का हनन सूर्य करता है। अर्थात सूर्य यदि कुण्डली में उच्च या बली होकर पड़ा हो तो वह जातक की कुण्डली में पड़े अन्य अनिष्टों को नष्ट कर देता है।

ग्रह जाग्रत अवस्था—उच्चांश में तथा अपने नवांश में ग्रह जाग्रत होते हैं। मित्र के नवांश में रहने वाले ग्रह स्वप्नावस्था के होते हैं। और नीच शत्रु के नवांश में ग्रह सुप्त कहलाते हैं।

राशियाँ—कुल राशियाँ १२ मानी गई हैं। पाठकों की जानकारी हेतु राशियों का विस्तृत परिचय आगे दिया जा रहा है।

राशि परिचय

क्र० सं०	रशियों के प्रसिद्ध नाम	अंग्रेजी नाम	पर्यायवाची संस्कृत शब्द	फारसी नाम	अरबी नाम
१	मेष	Aries	अज, क्रिय, एडक छग, प्रथम, बस्त, आद्य	बरे	हमल
२	वृष	Taurus	वृषभ, तापुरी, भद्र, बलीपर्द	गत्व	सोर
३	मिथुन	Gemini	जितुम, नृयुक, यम	दोपेकर	जौजा
४	कर्क	Cancer	कुलीर, कर्कट, आटक	खरचंग	सरतान
५	सिंह	Leo	लेय, कठीरव, मृगेन्द्र, हरि	शीर	असद्
६	कन्या	Virgo	पाथोन, तन्वी, वरुणी, कुमारी	खुशे	सम्बला
७	तुला	Libra	जूक्, वणिक्, घट्, तौलि	त्राजु	मीजर
८	वृश्चिक	Scorpio	कौर्प्य, अलि, द्रुण, अष्टम	कभदुम	अकरव
९	धनु	Sagittarius	चाप, धन्वी, शरासन	कमान	कोस
१०	मकर	Capricornus	मृग, आकोकेरी, वक्र, एण	बोभ	जद्दी
११	कुंभ	Aquarius	घट, धराभिधान	दुल	दुल
१२	मीन	Pisces	अन्यभ, भख, भिय, रिष्फ	माही	हूत

राशियाँ—कुल राशियाँ १२ मानी गई हैं। पाठकों की जानकारी के हेतु राशियों का विस्तृत परिचय नीचे दिया जा रहा है।

राशि जाति—राशियों के नाम, अंगेजी, अरबी, फारसी में जानने के पश्चात् राशियों के बारे में थोड़ी बहुत और जानकारी भी आवश्यक है। पाठकों के हेतु, राशि जाति नीचे दी जा रही है:—

क्रम संख्या।	राशि नाम	पुरुष/स्त्री
१	मेष	पुरुष
२	वृष	स्त्री
३	मिथुन Gemini	पुरुष
४	कर्क Cancer	स्त्री
५	सिंह	पुरुष
६	कन्या	स्त्री
७	तुला Libra	पुरुष
८	वृश्चिक	स्त्री
९	धनु Sagittarius	पुरुष
१०	मकर	स्त्री
११	कुंभ	पुरुष
१२	मीन	स्त्री

राशि संज्ञा—राशि के संज्ञा प्रकार तीन हैं, जो कि निम्नलिखित हैं।

१. चर राशियाँ— मेष, कर्क, तुला, मकर

२. स्थिर राशियाँ— वृष, सिंह, वृश्चिक, कुंभ

३. द्विस्वभाव राशियाँ— मिथुन, कन्या, धनु, मीन

राशि तत्व—राशि तत्व निम्न प्रकार के हैं :

मेष	अग्नि
वृष	भूमि
मिथुन	वायु
कर्क	भूमि
सिंह	अग्नि
कन्या	पृथ्वी
तुला	वायु
वृश्चिक	जल
धनु	अग्नि
मकर	पृथ्वी
कुंभ	वायु
मीन	जल

राशि स्वामी (दिशा) मेष पूर्व दिशा की स्वामी है, वृष दक्षिण दिशा, मिथुन पश्चिम दिशा, कर्क उत्तर दिशा, सिंह पूर्व दिशा, कन्या दक्षिण दिशा तुला, पश्चिम दिशा, वृश्चिक उत्तर दिशा, धनु पूर्व दिशा, मकर दक्षिण दिशा, कुंभ पश्चिम दिशा और मीन उत्तर दिशा की स्वामिनी है।

राशिबोध चक्र

राशि	संज्ञा	वर्ण	रंग	जीव संज्ञा
मेष	भूतल	क्षत्रिय	लाल	धातु
वृष	जलाश्रयी	वैश्य	सफेद	मूल
मिथुन	जलाश्रयी	शूद्र	हरा	जीव
कर्क	जलचर	ब्राह्मण	रक्त श्वेत	धातु
सिंह	भूतल	क्षत्रिय	श्वेत	मूल
कन्या	जलाश्रयी	वैश्य	विविधवर्ण	जीव
तुला	भूतल	शूद्र	नीला	धातु
वृश्चिक	जलचर	ब्राह्मण	पीला	मूल
धनु	भूतल	क्षत्रिय	पीला	जीव
मकर	जलचर	वैश्य	पीतश्वेत	धातु
कुंभ	जलाश्रयी	शूद्र	नेवल	मूल
मीन	जलचर	ब्राह्मण	उज्ज्वल	जीव

ऊपर राशियों के सम्बन्ध में उनकी संज्ञा, वर्ण, रंग एवं जीव संज्ञा से सम्बन्धित चक्र दिया है, पाठकों को राशियों के बारे में पूर्ण जानकारी अभीष्ट है।

मूल त्रिकोण ग्रह—सिंह राशि का सूर्य, वृष राशि का चन्द्रमा, मेष राशि का मगल, कन्या राशि का बुध, धनु राशि का गुरु, तुला राशि का शुक्र तथा कुम्भ राशि का शनि मूल त्रिकोण गत ग्रह कहलाते हैं।

कुण्डली में सोलह वर्ग होते हैं। यथा होरा, द्रेष्काण, सप्तमांश, नवमांश, दशमांश, द्वादशांश, षोडशांश, त्रिशांश आदि-आदि।

इनमें जब ग्रह एक से अधिक वर्गों में अपनी-अपनी राशि में होते हैं तो उस ग्रह का नया नामकरण हो जाता है।

यदि कोई ग्रह दो बार अपनी ही राशि में हो तो उसका नाम परिजातांश
,, ,, ,, तीन बार ,, ,, ,, उत्तमांश
,, ,, ,, चार बार ,, ,, ,, गोपुरांश
,, ,, ,, पाँच बार ,, ,, ,, सिंहासनांश
,, ,, ,, छह बार ,, ,, ,, पारावतांश
,, ,, ,, सात बार ,, ,, ,, देवलोकांश
,, ,, ,, आठ बार ,, ,, ,, ब्रह्मलोकांश
,, ,, ,, नौ बार ,, ,, ,, शक्रवाहनांश
,, ,, ,, दस बार ,, ,, ,, श्रीधामांश
जबकोई ग्रह ग्यारह बारअपनी ही राशि में हो तो उसका नामवैष्णवांश
,, ,, ,, बारह बार ,, ,, ,, नारायणांश
,, ,, ,, तेरह बार ,, ,, ,, वैशेषिकांश

यदि कोई ग्रह वैशेषिकांश हो जाता है, तो वह सर्वोच्च कोटि का ग्रह माना जाता है।

राशि स्थान—

१. मेष	मस्तक	७. तुला	वस्ति
२. वृष	मुख	८. वृश्चिक	लिंग
३. मिथुन	वक्ष:स्थल	९. धनु	जंघा
४. कर्क	हृदय	१०. मकर	घुटना
५. सिंह	उदर	११. कुम्भ	पिंडली
६. कन्या	कटि	१२. मीन	पैर

जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है कि प्रत्येक कुण्डली में बारह घर होते हैं और प्रत्येक घर 'भाव' नाम से संबोधित होता है। नीचे भावों के सम्बन्ध में विशेष जानकारी दी जा रही है।

द्वादश भाव

क्रम संख्या	भावों के प्रसिद्ध नाम	अंग्रेजी नाम	पर्यायवाची संस्कृत शब्द
१.	प्रथम (लग्न)	Ascadent	लग्न, उदय, तनु, आव, जन्म, होरा
२.	द्वितीय	II house	स्व, कुटुम्ब, भुक्ति, वाक् अर्थ, नयन
३.	तृतीय	III house	दुश्चिक्य, सहोदर, पराक्रम, वीर्य, धैर्य
४.	चतुर्थ	Mid Eaven	सुख, पाताल, वृद्धि, क्षिति, मातृ, तुर्य, यान
५.	पंचम	V house	धी, बुद्धि, पितृ, नन्दन, देवराज, पंचक
६.	षष्ठम	VI house	रोग, अंग, भय, रिपु, शास्त्र, क्षत
७.	सप्तम	VII house	जामित्र, काम, गमन, कलत्र अस्त, सम्पत
८.	अष्टम	VIII house	आयु, रन्ध्र, मृत्यु, विनाश
९.	नवम	IX house	धर्म, गुरु, शुभ, तप, नव, अंक, भाग्य
१०.	दशम	X house	व्यापार, मध्य, मान, ज्ञान, राज कर्म, रव
११.	एकादश	XI house	उपान्त्य, भव, आर्य
१२.	द्वादश	XII house	व्यय, अन्त्यभ

भाव-परिचय—जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि कुण्डली में कुल बारह भाव होते हैं, परन्तु इन सब भावों के अलग-अलग नाम हैं। कुण्डली में ऊपर के बीच का भाव प्रथम या लग्न कहलाता है तथा इस राशि के स्वामी को लग्नेश कहा जाता है।

सम्बन्धित कुण्डली में जहाँ '१' की संख्या लिखी हुई है, जिसकी राशि 'मेष' है तथा मेष राशि का स्वामी मंगल ही प्रथम भाव का स्वामी या 'लग्नेश' कहलाता है।
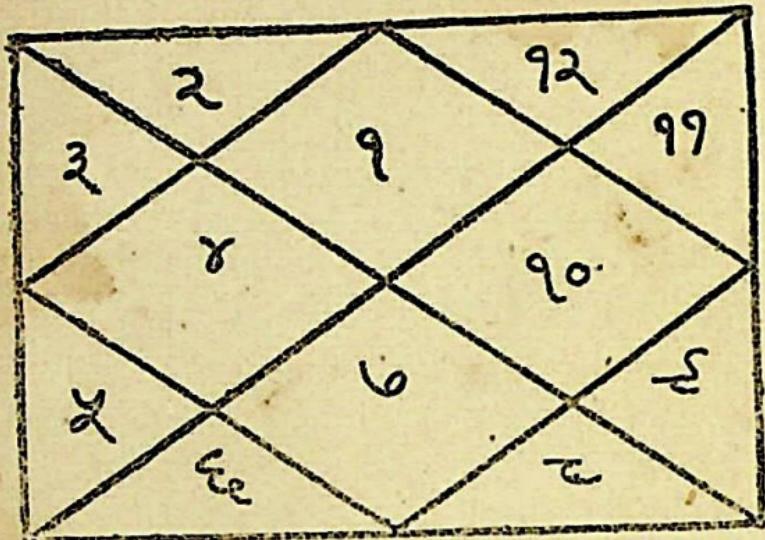
१.	केन्द्र स्थान	१, ४, ७, १० वाँ भाव केन्द्र स्थान कहलाता है।
२.	पणफर स्थान	२, ५, ८, ११
३.	आपोक्लिम	३, ६, ९, १२
४.	त्रिकोण	५, ९
५.	त्रित्रिकोण	९वाँ भाव
६.	चतुरस्त्र	४, ८
७.	उपचय	३, ६, १०, ११
८.	पीडर्क्ष	१, २, ४, ५, ७, ८, ९, १२
९.	कण्टक	१, ४, ७, १०
१०.	चतुष्टय	१, ४, ७, १०

ऊपर भावों के विशिष्ट स्थान एवं नाम दिये गये हैं, अब प्रत्येक भाव को स्पष्ट कर रहा हूँ।

१. प्रथम भाव को लग्न और उसके स्वामी को लग्नेश कहते हैं।
२. द्वितीय ,, ,, द्वितीय ,, ,, ,, द्वितीयेश ,, ,,
३. तीसरे ,, ,, तृतीय ,, ,, ,, तृतीयेश ,, ,,
४. चौथे ,, ,, चतुर्थ ,, ,, ,, चतुर्थेश ,, ,,
५. पाँचवें ,, ,, पंचम ,, ,, ,, पंचमेश ,, ,,
६. छठे ,, ,, षष्ठ ,, ,, ,, षष्ठेश ,, ,,

७. सातवें भाव को	सप्तम और उसके स्वामी को	सप्तमेश	कहते हैं
८. आठवें ,, ,,	अष्टम ,, ,, ,,	अष्टमेश	,, ,,
९. नवें ,, ,,	नवम ,, ,, ,,	नवमेश	,, ,,
१०. दसवें ,, ,,	दशम ,, ,, ,,	दशमेश	,, ,,
११. ग्यारहवें ,,	एकादश,, ,, ,,	एकादशेश	,, ,,
१२. बारहवें ,,	द्वादश ,, ,, ,,	द्वादशेश	,, ,,

इसके अलावा निम्न नाम संज्ञा भी विचारणीय है—

१.	प्रथम भाव के स्वामी को		लग्नेश, केन्द्रेश
२.	दूसरे ,,	,,	धनेश, सहायक मारकेश
३.	तीसरे ,,	,,	पराक्रमेश, बान्धवेश
४.	चौथे ,,	,,	सुखेश, मातृेश
५.	पाँचवें ,,	,,	पंचमेश सन्तानेश, विद्याधीश
६.	छठे ,,	,,	कष्टेश, रोगेश
७.	सातवें ,,	,,	सप्तमेश, जायेश
८.	आठवें ,,	,,	मृत्युयेश, मारकेश
९.	नवें ,,	,,	कर्मेश, भाग्येश
१०.	दसवें ,,	,,	राज्येश, राज्यपदेश
११.	ग्यारहवें,,	,,	आयेश
१२.	बारहवें,,	,,	व्ययेश

ऊपर मैंने प्रत्येक भाव के विभिन्न नाम तथा उनके स्वामी के विभिन्न नामों की संक्षिप्त जानकारी दी। इसी प्रकार प्रत्येक भाव के भी एक से अधिक नाम हैं। नीचे प्रत्येक भाव के पर्याय नाम दे रहा हूँ, जो कि आगे योगों का अध्ययन करने के लिए सहायक होंगे।

१. प्रथम स्थान	लग्न स्थान
२. द्वितीय स्थान	द्रव्य स्थान
३. तृतीय स्थान	पराक्रम स्थान, बन्धु स्थान
४. चतुर्थ स्थान	सुख स्थान, मातृ स्थान
५. पंचम स्थान	विद्या स्थान, संतान स्थान
६. षष्ठ स्थान	रोग स्थान, शत्रु स्थान
७. सप्तम स्थान	कलत्र स्थान
८. अष्टम स्थान	मारक स्थान
९. नवम स्थान	भाग्य स्थान

१०. दशम स्थान	राज्य स्थान
११. एकादश स्थान	आय स्थान
१२. द्वादश स्थान	व्यय स्थान

कुछ लोग 'स्थान' की जगह 'भाव' शब्द भी प्रयुक्त करते हैं और इस प्रकार कलत्र स्थान की जगह कलत्र भाव भी कह देते हैं। यद्यपि दोनों का तात्पर्य एक ही है।

योग—दो या दो से अधिक ग्रह किसी भाव या राशि में बैठकर विशेष फल प्रदान करते हैं, जिसे योग कहते हैं।

योग-फल—जैसा कि कहा जा चुका है, कम से कम दो ग्रहों के मेल से योग बनता है पर प्रश्न उठता है कि उन दोनों ग्रहों में से कौन-सा ग्रह बलवान है और किस ग्रह की दशा में उस योग का फल प्राप्त होगा ?

इसके लिए नीचे लिखा तरीका काम में लिया जाना चाहिए—

उच्च ग्रह	+५
स्वराशिस्थ ग्रह	+४
मित्र राशिस्थ ग्रह	+३
मूल त्रिकोणगत ग्रह	+२
उच्चाभिलाषी ग्रह	+१

बाईं ओर ग्रह की स्थिति तथा दाहिनी ओर उससे सम्बन्धित अंक दिये गये हैं। उदाहरणार्थ यदि उस योग में सम्बन्धित ग्रह उच्चराशिस्थ हो तो उसके लिए पाँच अंक निर्धारित समझे जायें। इसी प्रकार स्वराशिस्थ होने पर ४. मित्र राशिस्थ होने पर ३, मूल त्रिकोणगत होने पर २ तथा उच्चाभिलाषी होने पर उस ग्रह को १ अंक दिया जाय।

इस प्रकार अशुद्ध ग्रह होने पर भी इसी प्रकार से अंक दिए जायेंगे।

नीच ग्रह	—५
पाप ग्रह	—४
पाप ग्रह के गृह में बैठा हो तो	—३
पाप ग्रह से दृष्ट	—२
नीचाभिलाषी	—१

अर्थात् जो ग्रह नीच राशि पर पड़ा हो तो उसे ५, पाप ग्रह होने पर ४, पाप ग्रह के घर में बैठा हो तो ३, पाप ग्रह से देखा जा रहा

हो तो २ तथा नीचा भिलाषी हो तो उसे १ अंक दिया जाय।

फिर उन दोनों ग्रहों में से जिस ग्रह ने अधिक अंक प्राप्त किये हों, उसकी महादशा में दूसरे ग्रह की अन्तर्दशा में वह योग फलाफल देगा। यदि अधिक अंक शुभ ग्रह को मिलते हैं, तो फल सुफल तथा पाप ग्रह को मिलने पर फल अशुभ मिलेगा। नीचे एक उदाहरण से यह कथन स्पष्ट हो जायेगा।
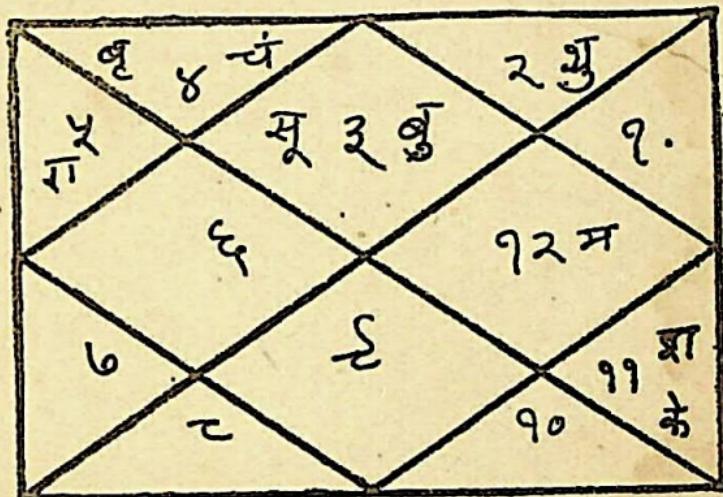
मान लो किसी कुण्डली में मिथुन लग्न है तथा दूसरे भाव में बृहस्पति और चन्द्र साथ में बैठकर 'गजकेशरी' योग बनाते हैं।

अब यह देखना है कि बृहस्पति और चन्द्र में कौन-सा ग्रह अधिक बलवान है। इसके लिए उपर्युक्त विधि का प्रयोग किया।

१. बृहस्पति, कर्क राशि का होने से उच्च है=+५

२. बृहस्पति चन्द्र का मित्र है और चौथी राशि कर्क में, जो कि चंद का घर है, उसमें गुरु बैठा है, अतः +३

=कुल योग=५+३=८ अर्थात बृहस्पति ने आठ अंक प्राप्त किये।

चन्द्रमा—स्वराशिस्थ है=४ अंक

इसके अलावा उसको कोई अंक प्राप्त नहीं हो सकते।

स्पष्टतः गुरु को ८ अंक तथा चंद्र को ४ अंक मिले, अतः गुरु बलवान है। नियमानुसार गुरु की महादशा में चन्द्र की अन्तर्दशा

पर 'गजकेशरी' योग का फल जातक को प्राप्त होगा।

नीचे ज्योतिष शास्त्र में मान्य योगों का विवेचन दिया जा रहा है। इन योगों का कोई निश्चित क्रम नहीं है। इनमें वे ही योग लिये गये हैं जो कि मान्य, आवश्यक और कुण्डली के रहस्य को खोलने में निर्णायक एवं सहायक हो सकें एवं जिनके द्वारा ज्योतिष का जानकार सही-सही फलादेश स्पष्ट कर सके।

(१)

गजकेशरी योग

परिभाषा—चन्द्रमा से केन्द्र में (१, ४, ७, १० वें भाग में) बृहस्पति स्थित हो, तो गजकेशरी योग होता है।

यदि शुक्र या बुध नीच राशि में स्थित न होकर या अस्त न होकर चन्द्रमा को सम्पूर्ण दृष्टि से देखते हों तो प्रबल गजकेशरी योग होता है

फल—इस योग में जन्म लेने वाला जातक अनेक मित्रों, प्रशंसकों
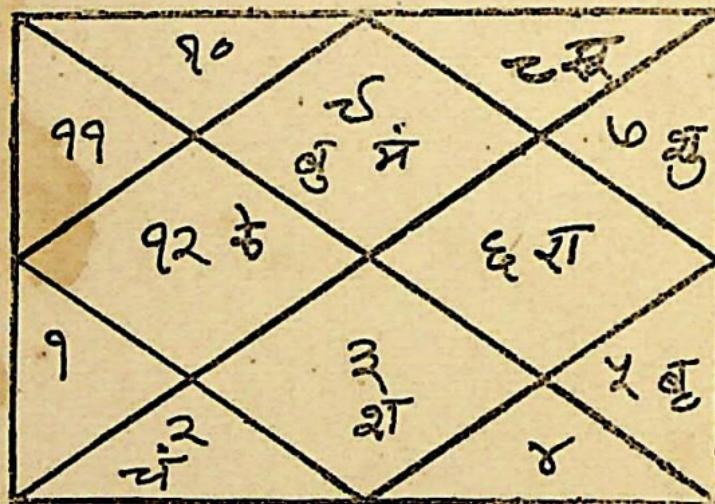
डॉ० राजेन्द्रप्रसाद (भूतपूर्व राष्ट्रपति, भारत)

एवं सम्बन्धियों से घिरा रहता है एवं उनके द्वारा सराहा जाता है। स्वभाव से नम्र, विवेकवान तथा सद्गुणी होता है। इस प्रकार का योग रखने वाला जातक जीवन में उन्नति करता है। कृषि कार्यों से उसे विशेष लाभ होता है या वह नगरपालिकाध्यक्ष या मेयर बन जाता है। तेजस्वी, मेधावी, गुणज्ञ तथा राज्य-पक्ष में प्रबल उन्नति

करने वाला होता है। स्पष्टत: गजकेशरी योग रखने वाला जातक जीवन में उच्च स्थिति प्राप्त कर पूर्ण सुख भोगता है तथा मृत्यु के बाद भी उसकी यशगाथा अक्षुण्ण रहती है।

गजकेसरि सञ्जातस्तेजस्वी धनधान्यवान्।
मेधावी गुण सम्पन्नो राजप्रिय करो भवेत्॥

(२)

अमला योग

परिभाषा—१. चन्द्रमा जिस राशि पर बैठा हो, उससे दसवें स्थान पर यदि शुभ ग्रह बैठा हो तो अमला योग होता है।

२. यदि लग्न में दसवें स्थान पर शुभ ग्रह हो तो भी अमला योग माना जाता है।

फल—जिस जातक की कुण्डली में अमला योग होता है, वह प्रसिद्ध, गुणवान और ख्याति प्राप्त करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति पूर्ण सुखी जीवन बिताता है एव सम्पूर्ण सुखों को भोगता है। ऐसा व्यक्ति चरित्रवान एवं सज्जन होता है। चन्द्रमा की ही तरह यदि
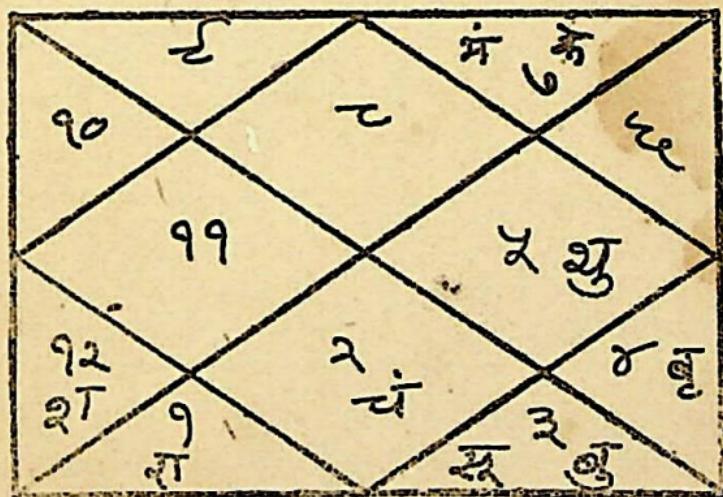
किसी जातक की कुण्डली में लग्न-स्थान से दसवें भाव पर शुभ ग्रह हो, तो वहाँ भी अमला योग होता है। दसवें भाव पर जो ग्रह स्थित होता है, उस ग्रह की दशा में जातक को विशेष धन प्राप्त होता है। व्यापारी हो तो उसका व्यापार फैलता है, राजकीय सेवा में हो तो

उच्च पद प्राप्त करता है और इस प्रकार धन एवम् ख्याति दोनों एक साथ प्राप्त करता है।

ज्योतिष के पाठकों को चाहिए कि वे किसी भी कुण्डली का अध्ययन करने से पूर्व उसमें निहित योगों का पता लगाकर तदनुसार ही फलाफल स्पष्ट करें।

(३)
पर्वत योग

परिभाषा—(१) केन्द्र के शुभ ग्रह विद्यमान हों, छठा तथा आठवाँ स्थान या तो खाली हो या फिर शुभ ग्रहों से युक्त हो तो इस प्रकार होने वाला पर्वत योग होता है।

(२) लग्नेश और व्ययेश यदि परस्पर केन्द्र में प्राप्त हों तथा दोनों मित्र ग्रहों से दृष्ट हों तो भी पर्वत योग होता है।

फल—पर्वत योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति अपने उच्च भाग्य का स्वयं निर्माता होता है तथा जीवन में उसे सदैव भाग्य साथ देता है। विद्या के क्षेत्र में जातक बहुत उन्नति करता है एवम् गरीबों, पीड़ितों एवम् अनाथों की सहायता करने में तत्पर रहता है। परन्तु ऐसा व्यक्ति भोगी भी होता है एवम् उसके जीवन में कई रमणियाँ प्रेमिकाओं के रूप में आती हैं, जिनसे वह आनन्द सुख प्राप्त करता है। उसकी सर्वत्र ख्याति होती है तथा ग्राम का प्रधान नायक होता है।

टिप्पणी—ज्योतिष-ग्रन्थों में इस योग के फल के सम्बन्ध में 'पुरनायक' स्यात्' शब्द आता है अर्थात् ग्राम का प्रधान नायक होता है। परन्तु आज के प्रजातन्त्र युग में इस शब्द से तात्पर्य यह निकलता है कि ऐसा जातक सरपंच, म्युनिसिपल कमिश्नर या जिला बोर्ड का सदस्य बन जाता है। यद्यपि यह योग जातक को राजनीति में दक्ष नहीं करता और न ही उसे सफल राजनीतिज्ञ बनाता है परन्तु यह योग रखने वाला जातक आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न एवम् खुशहाल होता है।

(४)
वासी योग

परिभाषा—चन्द्रमा के अतिरिक्त कोई भी ग्रह या कोई ग्रह सूर्य

से बारहवें स्थान में विद्यमान हो तो वासी योग होता है।

फल—वासी योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति अपने कार्य में दक्ष होता है। यदि सूर्य से बारहवें भाव में शुभ ग्रह हो तो जातक प्रसन्न, निपुण विद्यावान, गुणी और चतुर होता है। जीवन में वह हर समय प्रसन्नचित्त एवं आनन्दित रहता है। पारिवारिक दृष्टि से वह सुखी, यश प्राप्त करने वाला एवं शत्रुओं का संहार करने वाला होता है। परन्तु यदि सूर्य से बारहवें स्थान पर पापग्रह हो तो जातक अधिकतर अपने निवास स्थान से दूर ही रहता है तथा जीवन में कई ऐसी भयंकर भूलें कर देता है कि जिससे वह संतापित एवं दुखी रहता है। उसके मन में हर समय बदला लेने, रक्तपात एवं लूटमार करने की ही भावना रहती है। उसके चेहरे से भी क्रूरता झलकती है।

टिप्पणी—इस योग में शुभ ग्रह एवं पापग्रहों का पूरा ध्यान रखना चाहिए। यदि सूर्य से बारहवें भाव में शुभ एवं अशुभ ग्रहों का मिश्रण हो तो मिश्रित फल समझना चाहिए।

(५)

वेशि योग

परिभाषा—चन्द्रमा के अतिरिक्त कोई भी ग्रह या कई ग्रह सूर्य से दूसरे भाव में स्थित हों तो वेशि योग होता है।

फल—यदि सूर्य से दूसरे भाव में शुभ ग्रह हो तो शुभ वेशि योग तथा पाप ग्रह हो तो अशुभ वेशि योग कहलाता है। शुभ वेशि योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति सौम्य आकृति का होता है तथा भाषण द्वारा लोगों को प्रभावित करने की कला में वह दक्ष होता है। ऐसा व्यक्ति नेतृत्व-कार्य में दक्ष होता है तथा उसके कार्यों से जनता उस पर श्रद्धा रखती है। आर्थिक दृष्टि से ऐसा जातक सम्पन्न होता है तथा जीवन में विविध भागों का भोग करता है। शत्रुओं को नीचा दिखाने, उन्हें परास्त करने या उन्हें समूल नष्ट करने में जातक कुशल होता है। ऐसे व्यक्ति का कई लोग अनुकरण करते हैं। जातक अपने कार्यों से देश-विदेश में प्रसिद्धि प्राप्त करता है। अगले पृष्ठ की कुण्डली श्री सुभाषचन्द्र बोस की है, जिसके दशम भाव में सूर्य है तथा सूर्य से दूसरे भाव में शुभग्रह शुक्र विद्यमान है। स्पष्टतः इस कुण्डली में 'शुभ वेशि योग' विद्यमान है। अशुभ वेशि योग में जन्म

लेने वाला व्यक्ति दुष्टों की संगति करता है तथा उन्हीं की संगति में आनन्द-प्राप्ति समझता है। उसके दिमाग में हर समय कुचक्र घूमते
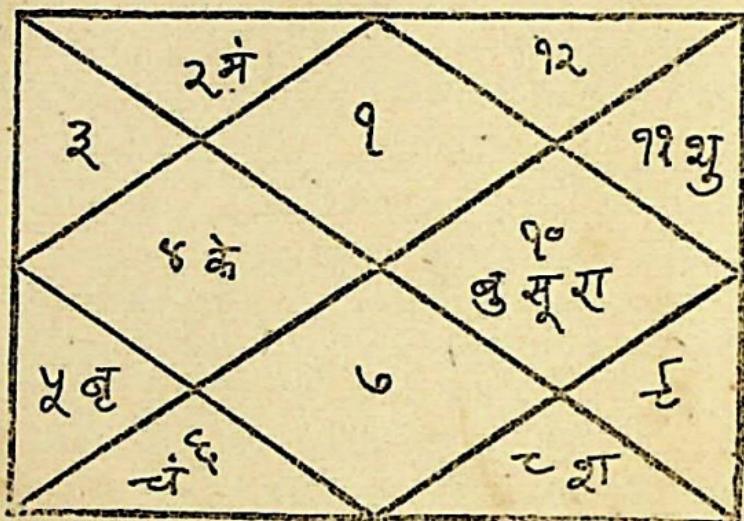
श्री सुभाषचन्द्र बोस

रहते हैं तथा वह आजीविका के लिए परेशान रहता है। ऐसा जातक अपने दुष्ट कार्यों एवं दुष्ट स्वभाव के कारण कुख्यात ही होता है।

(६)

उभयचरिक योग

परिभाषा—यदि किसी कुण्डली में सूर्य से दूसरे घर तथा बारहवें घर दोनों में ग्रह विद्यमान हो तो उभयचरिक योग बनता है।

फल—यदि, सूर्य से द्वितीय भाव तथा द्वादश भाव दोनों में शुभ ग्रह हों तो शुभ 'उभयचरिक योग' में जन्म लेने वाला व्यक्ति सहनशील होता है तथा प्रत्येक प्रकार की परिस्थिति को सहन करने में सक्षम होता है। ऐसा व्यक्ति न्याय करने में निपुण होता है तथा वादी-प्रतिवादी को समान रूप से देखता हुआ निष्फल निर्णय करता है। पूर्ण बलवान, स्थिर, अविचलित एवं पुष्ट ग्रीवा वाला होता है। अशुभ उभयचरिक योग में जन्म लेने पर व्यक्ति पाप करने वाला, मन में कपट भाव रखता हुआ झूठा न्याय करने वाला, दूसरों के अधीन रहने वाला एवं दरिद्र जीवन बिताने वाला होता है।

टिप्पणी—उभयचरिक योग में सूर्य तथा उसके दोनों ओर ग्रह होना आवश्यक है, परन्तु उन ग्रहों मे चन्द्र की गणना नहीं है अर्थात् चन्द्र के अतिरिक्त कोई भी ग्रह हो।

संस्कृत के ज्योतिष ग्रन्थों में इसके फल के लिए 'नृपति तुल्य' शब्द का प्रयोग किया है। बदली हुई परिस्थितियों में व्यक्ति राजनीति में दक्ष, मन्त्री या सेक्रेटरी स्तर का व्यक्ति हो सकता है।

(७)

शुभकर्तरी योग

परिभाषा—लग्न से दूसरे भाव तथा बारहवें भाव में शुभ ग्रह हों तो शुभकर्तरी योग बनता है।

फल—शुभकर्तरी योग में जन्म लेने वाला जातक तेजस्वी होता है। उसके जीवन में आय के कई स्रोत होते हैं तथा अर्थ संचय में प्रवीण होता है। शारीरिक दृष्टि से भी ऐसा जातक स्वस्थ, सबल और पुष्ट होता है।

(८)

पापकर्तरी योग

परिभाषा—लग्न से दूसरे भाव तथा बारहवें भाव में पाप ग्रह या अशुभ ग्रह स्थित हों तो पापकर्तरी योग बनता है।

फल—पापकर्तरी योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति पाप करने वाला कुचक रचने में प्रवीण, भिक्षुक और मलिन चित्त होता है।

(९)

शुभ योग

परिभाषा—यदि जन्म-लग्न शुभ ग्रह से युक्त हो तो शुभ योग होता है।

फल—शुभ योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति प्रसिद्ध वक्ता होता है। उसकी वाणी में मन्त्रमुग्ध करने की शक्ति होती है तथा जनता की भावनाओं को अपने पक्ष में करने की उसे कला आती है। ऐसा व्यक्ति रूपवान, सदाचारी तथा विविध सद्गुणों से युक्त होता है।

(१०)

अशुभ योग

परिभाषा—यदि जन्म-लग्न पापग्रह या अशुभ ग्रह से युक्त हो

तो अशुभ योग बनता है।

फल—इस योग को रखने वाला व्यक्ति कामी होता है तथा दूसरों का पैसा हड़प करता है। जीवन में वह असफल रहता है तथा दुर्भाग्य उसे पग-पग पर बाधा पहुँचाता है।

(११)
सुनफा योग

परिभाषा—जिसकी जन्म-कुण्डली में, सूर्य को छोड़कर और कोई ग्रह चन्द्रमा से दूसरे स्थान पर हो तो सुनफा योग होता है।

फल—जिस कुण्डली में सुनफा योग होता है, वह अपने परिश्रम से धन संचय कर ख्याति प्राप्त करता है। प्रत्येक कार्य में वह होशियार होता है तथा किसी भी नये कार्य में वह शीघ्र ही निपुणता प्राप्त करता है। समाज तथा कुटुम्ब में भी उसका सम्मान होता है।

टिप्पणी—इसयोग तथा ऐसे ही अन्य योगों में चन्द्रमा एक महत्त्व-पूर्ण ग्रह होता है। इस योग में चन्द्रमा से दूसरा स्थान किसी एक ग्रह या एक से अधिक ग्रहों से भरा हुआ होना चाहिए, परन्तु प्रत्येक ग्रह अलग-अलग फल देते हैं। मैं यहाँ प्रत्येक ग्रह से बनने वाला सुनफा योग तथा उसका संक्षिप्त फल प्रस्तुत करता हूं।

भौम—जिस कुण्डली में भौम के द्वारा सुनफा योग बनता है, वह व्यक्ति शारीरिक रूप से बलिष्ठ और पराक्रमी होता है, उसकी वाणी में दृढ़ता एवं कठोरता रहती है तथा सभी से विरोध करने वाला होता है।

बुध—बुध के द्वारा सुनफा योग बनने पर जातक संगीत, चित्रादि कलाओं में रुचि रखने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति धार्मिक एवं सामाजिक रूढ़ियों को मानने वाला, काव्य करने वाला अथवा उसमें रुचि रखने वाला, बुद्धिमान, सुन्दर तथा सब का हित करने वाला होता है।

बृहस्पति—जिसकी कुण्डली में बृहस्पति के द्वारा सुनफा योग (अर्थात चन्द्रमा से द्वितीय स्थान में बृहस्पति) हो तो जातक एक से अधिक विद्याओं में रुचि रखता है तथा उनमें पारंगत होता है। अपनी विद्या के द्वारा प्रवीण होता है तथा कृषि कार्यों में रुचि रखने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति सद्गुण-सम्पन्न, धनी तथा अच्छे परिवार वाला

होता है।

शुक्र—शुक्र के द्वारा सुनफा योग बनने पर वह सुन्दर स्त्री का स्वामी होता है, उसका स्वय का गृह होता है तथा घर की सजावट को वह प्राथमिकता देता है। वाहन-सुख उसे पूर्ण रूप से प्राप्त होता है तथा राज्य वर्ग में वह शीघ्र ही उन्नति करता है। चतुर, कामी एवं सुन्दर स्त्रियों से प्रेम रखने वाला होता है।

शनि—जिसकी कुण्डली में शनि के द्वारा सुनफा योग बनता है वह जातक बुद्धिमान होता है तथा ग्राम का मुखिया या नगरपालिका का सदस्य होता है। जीवन में उसे धन की चिन्ता नहीं रहती। राजनीति में ऐसा व्यक्ति पटु होता है तथा कार्य सम्पन्न न होने तक वह अपने मन की बात किसी से भी नहीं कहता। उसका व्यवहार सौम्य होने पर भी भेदपूर्ण तथा मलिन आचार से युक्त होता है।

(१२)

अनफा योग

परिभाषा—चन्द्रमा से बारहवें भाव में (सूर्य को छोड़कर) यदि कोई ग्रह हो तो अनफा योग होता है।

फल—जिसकी कुण्डली में अनफा योग होता है, उसका व्यक्तित्व चुम्बकीय होता है तथा शरीर का अंग-प्रत्यंग सुन्दर होता है। समाज में उसका सम्मान होता है। वह नम्र, सुशील, सद्गुणी तथा विचारवान होता है। वह स्वयं भी दूसरों का सम्मान करना जानता है। सुन्दर वस्त्र पहनने का वह शौकीन होता है तथा हमेशा प्रसन्नचित्त रहता है।

टिप्पणी—अनफा योग भी मंगल, बुध, गुरु, शुक्र या शनि के द्वारा हो सकता है। प्रत्येक ग्रह का निम्नलिखित फल है। यदि एक से अधिक ग्रह मिलकर 'अनफा योग' बनाते हों तो उनका मिश्रित फल समझना चाहिए।

मंगल—जिसकी कुण्डली में मंगल के द्वारा अनफा योग (अर्थात् चन्द्रमा से १२वें स्थान में मंगल) होता है, वह जातक चोर-कार्य में रत रहता है। अभिमान उसमें कूट-कूटकर भरा होता है तथा अपने आगे वह किसी को भी कुछ नहीं समझता; परन्तु ऐसा जातक स्वयं पर पूर्ण नियन्त्रण रखता है, युद्ध में वह शक्ति-प्रदर्शन करता है तथा

दूसरों के धन को अपना बनाने की फिक्र में रहता है।

बुध—बुध के द्वारा अनफा योग होने से जातक गायन-विद्या में निपुण होता है अथवा उसमें रुचि रखने वाला होता है। काव्य, चित्रादि में भी जातक रुचि रखता है। भाषण कला में भी जातक शौक रखता है। राज्य वर्ग में जातक शीघ्र ही उन्नति करता है। उसका चेहरा सुन्दर, स्वस्थ शरीर, भाग्यवान एवं अपने काम को अत्यन्त प्रसिद्ध करने वाला होता है।

गुरु—जिस कुण्डली में गुरु के द्वारा अनफा योग बनता है वह जातक प्रगाढ़ बुद्धि वाला होता है तथा जीवन के कठिन से कठिन संघर्षों से वह जूझता रहता है। यद्यपि राज्य पक्ष में उसकी प्रगति धीरे-धीरे होती है पर स्थायी होती है। काव्य के क्षेत्र में ऐसा व्यक्ति प्रसिद्धि प्राप्त करता है।
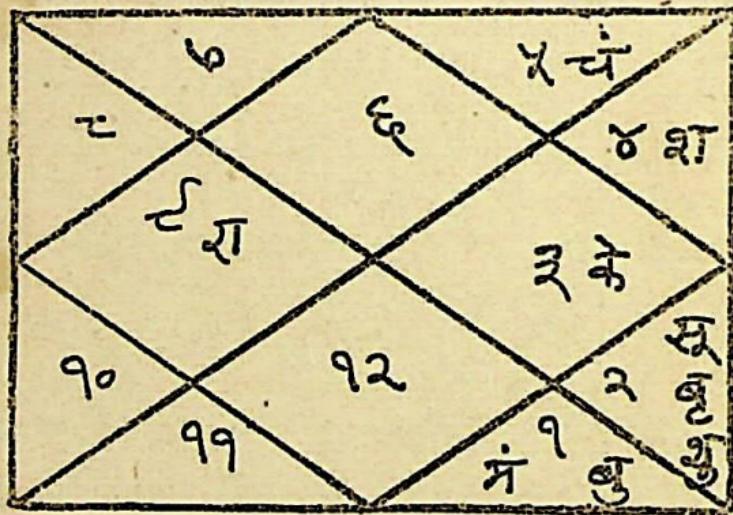
जॉन कैनेडी (अमरीका के भूतपूर्व राष्ट्रपति)

शुक्र—शुक्र के द्वारा अनफा योग होने पर जातक प्रसिद्ध प्रेमी होता है तथा जीवन में कई प्रेमिकाओं के सम्पर्क में आता है। अपने ऑफीसरों को वह अपने कार्य से प्रसन्न रखता है तथा जीवन में पूर्ण सुख भोगता है।

शनि—शनि के द्वारा अनफा योग होता है तो जातक भाग्यवान होता है तथा प्रसिद्ध कुल में जन्म लेता है। उसके शब्दों का प्रभाव

होता है। वह प्रसिद्ध वक्ता एवं जनमानस को अपने पक्ष में करने की कला में प्रवीण होता है। वाहन-सुख उसे पूर्णरूपेण प्राप्त होता है तथा जीवन में सुन्दर स्त्रियों से उसका सम्पर्क रहता है। गुणवान, पुत्रवान एवं जीवन में उलझी हुई समस्याओं को सुलझाने में ऐसा जातक प्रवीण होता है।

(१३)

दुरधरा योग

परिभाषा—चन्द्रमा से दूसरे और बारहवें, दोनों स्थानों पर ग्रह हों तो दुरधरा या दुर्धरा योग बनता है।

फल—दुरधरा योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति योग्य, दृढ़निश्चयी, धनवान एवं अपने कार्यों से प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला होता है।

टिप्पणी—दुरधरा योग एक महत्त्वपूर्ण योग है जिसमें जातक धन प्रसिद्धि पराक्रम एवं आदर प्राप्त करता है, परन्तु दुरधरा योग कुल १८० प्रकार के होते हैं। उदाहरणार्थ चंद्र से दूसरे भाव में मंगल और बारहवें भाव में बुध हो तो दूसरा फल होगा, परन्तु यदि चन्द्र से दूसरे भाव में मंगल और बारहवें भाग में गुरु होगा तो फल दूसरे ही प्रकार का होगा। इसी प्रकार दूसरे भाव में बुध और बारहवें भाव में भौम होने से फल अलग ही होगा। इस प्रकार जैसा कि ऊपर स्पष्ट किया जा चुका है दुरधरा के करीब १८० भेद होते हैं। इसलिए इस प्रकार के योगों का अध्ययन सावधानीपूर्वक होना चाहिए।

दूसरे और बारहवें भाव में जो ग्रह बलवान होगा, उस ग्रह की महादशा और उससे कम बलवान ग्रह की अन्तर्दशा में जातक को दुरधरा योग का फल प्राप्त होगा।

(१४)

केमद्रुम योग

परिभाषा—कुण्डली में यदि चन्द्रमा के दोनों ओर कोई भी ग्रह न हो तो केमद्रुम योग बनता है।

फल—केमद्रुम योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति गंदा तथा हमेशा दुःखी रहता है। अपने गलत कार्यों के कारण ही वह जीवन-भर परेशान रहता है। आर्थिक दृष्टि से वह गरीब होता है तथा आजीविका

के लिए दर-दर भटकता फिरता है। ऐसा व्यक्ति हमेशा दूसरों पर ही निर्भर रहता है। पारिवारिक दृष्टि से भी ऐसा जातक साधारण होता है एवं सन्तान द्वारा कष्ट पाता है, उसे स्त्री भी चिड़चिड़े स्वभाव की मिलती है, लेकिन ऐसे व्यक्ति दीर्घायु होते हैं।

टिप्पणी—कुछ विद्वानों का मत है कि यदि चन्द्रमा केन्द्र स्थान में हो और फिर केमद्रुम योग बनता हो अर्थात् केन्द्रस्थ चन्द्र के दोनों ओर कोई ग्रह न हो तो केमद्रुम योग नहीं माना जा सकता।

कुछ ऋषि ऐसा भी मानते हैं कि यदि चन्द्रमा किसी ग्रह के साथ बैठा हो और फिर केमद्रुम योग होता हो तो केमद्रुम का असर नहीं होता, पर मैंने उपर्युक्त दोनों स्थितियों का व्यावहारिक अध्ययन किया है। दोनों ही स्थितियों में केमद्रुम योग का फल पूर्णतः घटित न होने पर भी आंशिक रूप से उसका फल अवश्य रहता है। यदि जातक ने धनाढ्य कुल में जन्म लिया हो तो जातक शनैः-शनैः मूर्खतापूर्ण कार्यों अथवा गलत निर्णयों के फलस्वरूप धन से हाथ धो बैठता है और साधारण स्थिति में आ जाता है।

यदि जातक ने साधारण कुल में जन्म लिया हो और उपर्युक्त स्थितियाँ बनती हों तो जातक अभाग्यवान बनकर धीरे-धीरे दरिद्र जीवन बिताने को मजबूर हो जाता है।

केमद्रुम भंग योग—परन्तु कुछ स्थितियों में केमद्रुम भंग भी होता है और ऐसा होने पर केमद्रुम का कोई प्रभाव नहीं रहता। वे स्थितियाँ निम्नलिखित हैं—

१. कुण्डली में केमद्रुम योग हो परन्तु चन्द्रमा सभी ग्रहों से देखा जाता हो, तो केमद्रुम भंग होता है और इस योग का कोई प्रभाव नहीं रहता, अपितु जातक दीर्घायु प्राप्त कर शत्रुओं का विनाश करने वाला होता है।

२. यदि पूर्ण बली चन्दमा शुभस्थान (वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक मकर, मीन) में हो तथा बुध, गुरु एवं शुक्र साथ में हों, तो केमद्रुम योग भंग होता है तथा ऐसा जातक प्रसिद्ध, सुखी एव सानन्द जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

३. चन्दमा शुभ गृह से युक्त हो तथा गुरु उसे देखता हो तो भी केमद्रुम भंग होता है।

४. पूर्ण चन्द्रमा लग्न में शुभग्रह के साथ हो तो भी केमद्रुम योग भंग होता है।

५. चन्द्रमा दसवें भाव में उच्च का हो तथा उसे गुरु पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो केमद्रुम भंग होता है।

६. केन्द्र में चन्द्रमा पूर्ण बली हो तथा उस पर बली गुरु की सप्तम भाव से दृष्टि हो तो भी केमद्रुम भंग होता है।

विशेष टिप्पणी—केमद्रुम योग भयंकर होता है। जातक पारिजात के शब्दों में—

योगे केमद्रुमे प्राप्ते यस्मिन् कस्मिश्च जातके।
राजयोगा विनश्यन्ति हरिं दृष्टवा यथा द्विपा: ।।

अर्थात् किसी के जन्म समय में यदि केमद्रुम योग हो तथा उसकी कुण्डली में राजयोग भी हो तो वह राजयोग विफल हो जाता है। तात्पर्य यह है कि केमद्रुम योग राजयोग का उसी प्रकार नाश कर देता है जैसे सिंह हाथियों का नाश करता है।

(१५)
दरिद्र योग

परिभाषा—लग्न या चन्द्रमा से चारों केन्द्र स्थान (१, ४, ७, १०) खाली हों (उनमें कोई ग्रह न हों) या उन चारों केन्द्र स्थानों में पापग्रह हों तो दरिद्र योग होता है।

फल—दरिद्र योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति चाहे अरबपति के घर में जन्म ले, तो भी उसे जीवन में दरिद्र जीवन बिताने को मजबूर होना ही पड़ता है तथा आजीविका के लिए दर-दर भटकना पड़ता है।

टिप्पणी—विद्वानों ने उपर्युक्त योग के अतिरिक्त निम्न योग भी दरिद्र योग माने हैं—

१. चन्द्रमा सूर्य के साथ नीच राशिस्थ ग्रह से देखा जाता हो एवं पाप अंश में हो तो दरिद्र योग बनता है।

२. लग्न गत क्षीण चन्द्रमा से अष्टम स्थान में पापग्रह बैठा हो और लग्न पर शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो भी दरिद्र योग होता है।

३. राहु के साथ चन्द्रमा बैठा हो और पापग्रह से दृष्ट हो तो जातक निश्चित ही दरिद्र जीवन बिताता है।

४. यदि चन्द्रमा नीच राशिगत या शत्रुग्रह से दृष्ट हो या शत्रुग्रह के साथ हो तो भी दरिद्र योग होता है।

५. नीच राशि पर या शत्रु क्षेत्री चन्द्रमा लग्न से केन्द्र में या

त्रिकोण में हो और चन्द्रमा से ६, ८ या १२ वें भाव में गुरु पड़ा हो तो भी दरिद्र योग बनता है।

६. पाप ग्रह के नवांश में शत्रुदृष्ट, चर राशिस्थ या चर अंश में हो और उसे गुरु न देखता हो तो भी दरिद्र योग होता है और ऐसा जातक पूर्ण दरिद्र जीवन बिताता है।

७. नीच में या शत्रु ग्रह में या पाप ग्रह के वर्ग में शनि और शुक्र परस्पर एक-दूसरे को देखते हों या दोनों एक ही राशि में हों और ऊपर वाले लक्षण घटित होते हों तो जातक राजकुल में जन्म लेकर भी दरिद्र जीवन बिताता है।

(१६)

शकट योग

परिभाषा—चन्द्रमा से छठे या आठवें भाव में बृहस्पति हो तथा कुण्डली में लग्न से केन्द्र स्थान में गुरु न हो तो ऐसी स्थिति में शकट योग बनता है।

फल—शकट योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति अभाग्यशाली होता है तथा उसे जीवन में कई उतार-चढ़ाव देखने पड़ते हैं। ऐसा व्यक्ति अप्रसिद्ध और साधारण स्तर का होता है, कर्ज के भार से जीवन-भर दबा रहता है तथा सम्बन्धी उसके कार्यों से घृणा करते हैं।

टिप्पणी—शकट योग के बारे में विद्वानों में मतभेद है। मान सागरी के मतानुसार—

सर्वा विलग्नेऽप्यथ सप्तमे च पतङ्ग मुख्यास्तु ग्रहा नितान्तम्।
वदन्ति योगं शकटाख्य तं जातो नरः स्याच्छकटो प जीवी॥

अर्थात् जिसकी कुण्डली में लग्न और सप्तम स्थान में सूर्यादि सभी ग्रह स्थित हों तो शकट योग होता है। इस योग में उत्पन्न होने वाला जातक गाड़ी चलाने (ठेला चलाने) वाला होता है।

मैंने अपने जीवन में हजारों जन्म पत्रिकाओं का अध्ययन किया है। कुछ ऐसी कुण्डलियाँ भी दृष्टि से निकलीं, जिनमें मानसागरी वर्णित उपर्युक्त योग विद्यमान था, परन्तु वे जातक जीवन में सुखी, ऐश्वर्यवान एवं आनन्दपूर्ण जीवन बिताने वाले रहे, अतः व्यावहारिक रूप से मानसागरी वर्णित शकट योग सही नहीं उतरता है। मैंने जो ऊपर 'शकट योग' का लक्षण दिया है अधिकतर विद्वान वही मानते हैं और व्यावहारिक रूप में भी ऐसा योग रखने वाले जातक जीवन में असफल तथा असन्तुष्ट रहते हैं।

मूल संस्कृत में 'षष्ठाटमगतश्चन्द्रा' पाठ है, जिससे तात्पर्य है चन्द्रमा से ६ या ८वें स्थान में गुरु हो, परन्तु यदि गुरु, चन्द्रमा से १२वें भाव हो तो भी शकट योग बनता है। इस प्रकार चन्द्रमा से ६, ८ या १२वें भाव में गुरु हो तथा लग्न से केन्द्र में गुरु न पड़ा हो तो शकट योग बनता है, ऐसा समझना चाहिए।

(१७)
अधि योग

परिभाषा—यदि चन्द्रमा से छठे, सातवें या आठवें भाव में शुभ ग्रह हो तो अधि योग होता है।

फल—इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति नम्र व्यवहार वाला तथा चतुर होता है। जीवन उसका आनन्द से बीतता है एवं आमोद-प्रमोद की सभी वस्तुएँ उसे उपलब्ध होती हैं, परन्तु जीवन में ऐसा जातक शत्रु पर विश्वास कर धोखा भी खाता है। दीर्घायु एवं स्वस्थ रहकर जातक दूसरों की सहायता करता रहता है।

टिप्पणी—ज्योतिष ग्रन्थों में अधियोग की महत्ता वर्णित की गई है और कुछ विद्वान इसमें भी 'शुभ अधियोग' तथा 'अशुभ अधियोग' दो भेद करते हैं, पर ये दो भेद वैज्ञानिक और व्यावहारिक नहीं। शुभ-ग्रहों में बुध, गुरु और शुक्र मुख्य हैं। इस योग में चन्द्र स्थान से गणना करनी चाहिए। इस योग में यह आवश्यक नहीं कि चन्द्र से ६, ७ और ८वाँ तीनों स्थानों में शुभ ग्रह हों। किसी एक स्थान में भी शुभ ग्रह रहने से अधि योग बन जाता है। व्यावहारिक रूप में चन्द्रमा से ६, ७ और ८ तीन स्थानों में से एक स्थान में शुभग्रह होने पर जातक विख्यात नेता या एम० पी० होता है, दो स्थानों में शुभग्रह होने पर पूर्ण मंत्री बनता है तथा तीनों स्थानों पर शुभग्रह होने पर तो जातक विश्व-विख्यात व्यक्ति बनता है। वस्तुतः अधि योग भी एक प्रकार से राज योग ही है और इसका प्रभाव भी स्थायी होता है।

(१८)
लग्नाधि योग

परिभाषा—लग्न से छठे, सातवें और आठवें भाव में शुभ ग्रह हों तथा उन पर पापग्रहों की दृष्टि न हो और न इनके साथ पापग्रह भी हों तथा चतुर्थ भाव में शुभग्रह हो तो लग्नाधि योग बनता है।

फल—लग्नाधि योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति विद्वान होता है

तथा उसकी विद्वत्ता का लोहा दूसरे भी मानते हैं। शारीरिक रूप से भी ऐसा व्यक्ति हृष्टपुष्ट, स्वस्थ और सबल होता है तथा अधिकतर वीतरागी या साधु स्वभाव वाला व्यक्ति होता है। सांसारिक प्रपंचों में वह कम उलझता है तथा विख्यात होता है।

टिप्पणी—अधियोग एवं लग्नाधि योग में मुख्य अन्तर यह है कि अधियोग में चन्द्र मुख्य होता है तथा चन्द्र स्थान से ही गणना होती है परन्तु लग्नाधि योग में लग्न मुख्य होता है तथा लग्न स्थान से गणना होती है। इसके अतिरिक्त लग्नाधि योग में दो शर्तें और हैं। प्रथम तो लग्न से ६, ७, ८ वें स्थान में शुभग्रह ही हों और उनके साथ दूसरा कोई ग्रह न हो एवं दूसरा लग्न से चौथा भाव शुभग्रह से युक्त हो। कुछ विद्वान चौथे भाव में शुभग्रह की आवश्यकता नहीं समझते, परन्तु चतुर्थ भाव में पापग्रह नही हो, ऐसा वे जरूर मानते हैं। लग्नाधि योग भी अधि योग की तरह प्रभावोत्पादक एव राजयोग की तरह है।

(१६)

बुध योग

परिभाषा—लग्न में बृहस्पति हो, बृहस्पति से केन्द्र में चन्द्रमा हो तथा चन्द्रमा से दूसरे स्थान पर राहु पड़ा हो तथा राहु से तीसरे भाव पर सूर्य और मंगल हो तो बुध योग होता है।

फल—बुध योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति खूब धनवान होता है, उसके जीवन में धन का अभाव नहीं होता। वह स्वयं शक्तिशाली होता है एवं स्वस्थ तथा बलिष्ठ शरीर धारण करता है। देश-विदेश में उसके कार्यों की प्रशंसा होती है तथा उन कार्यों के माध्यम से वह ख्याति लाभ करता है। शास्त्र वगैरह का जानकार होता है तथा शीघ्र निर्णय लेने में वह सक्षम होता है। वैज्ञानिक विषयों में रुचि रखता है तथा प्रसिद्ध वैज्ञानिक बनता है। शत्रुओं का संहार करने वाला, बुद्धिमान तथा चतुर होने के साथ-साथ यदि जातक व्यापार करता हो तो विदेशों में उसका व्यापार फैलता है।

टिप्पणी—इस योग के लिए आवश्यक है कि लग्न में गुरु हो तथा गुरु से केन्द्र में चन्द्र हो, इस प्रकार गुरु चन्द्र मिलकर गजकेशरी योग तो बना ही देते हैं। स्पष्टतः यह योग भी राज योग के ही सदृश है।

(२०)

मरुत् योग

परिभाषा—शुक्र से ५वें या ६वें स्थान पर गुरु हो, गुरु से ५वें

स्थान पर चन्द्रमा हो तथा चन्द्रमा से केन्द्र (१, ४, ७, १०) में सूर्य हो तो मरुत् योग होता है।

फल—इस योग में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति बातचीत की कला में पटु होता है, उसका हृदय विशाल तथा दूसरों की सहायता करने को तत्पर रहता है। आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न और सुखी, शारीरिक दृष्टि से स्थूलकाय तथा एक सफल व्यापारी होता है, जो अपने प्रयत्नों से व्यापार को चतुर्दिक फैला देता है। ज्ञानवान, तुरन्त निर्णय लेने की शक्ति और सही समय को पहचानने की क्षमता उसके विशिष्ट गुण होते हैं। मरुत् योग में चार ग्रह मुख्य हैं। बृहस्पति, शुक्र तथा चन्द्र तो परस्पर त्रिकोण में हों तथा सूर्य केन्द्र में हो। ज्योतिष के विद्यार्थियों को चाहिए कि वे इस प्रकार के योगों का सूक्ष्मतापूर्वक अध्ययन कर सही निर्णय लेने की क्षमता उत्पन्न करें।

(२१)

इन्द्र योग

परिभाषा—यदि चन्द्रमा से तीसरे स्थान पर मंगल हो, मंगल से सप्तम भाव में शनि हो, शनि से सातवें भाव में शुक्र हो और शुक्र से सातवें भाव में गुरु हो तो इन्द्र योग होता है।

फल—इन्द्र योग रखने वाला व्यक्ति प्रसिद्ध वीर और रणनीतिज्ञ होता है तथा युद्ध में प्रसिद्धि प्राप्त कर ख्याति लाभ करता है। वह स्वंय राजा होता है अथवा राजा के तुल्य जीवन बिताता है। बातचीत में होशियार, गुणी एवं सरल स्वभाव का होता है तथा ३८ वर्ष तक जीवित रहता है।

टिप्पणी—यह योग राज योग की ही तरह है। इस योग में जन्म लेने वाले जातक की आयु अधिक नहीं होती, परन्तु अल्पायु में ही वह प्रसिद्धि प्राप्त कर अपना नाम चतुर्दिक फैला देता है, जीवन में इसे किसी भी प्रकार का अभाव नहीं रहता। कुछ विद्वानों ने इन्द्र योग की परिभाषा दूसरे प्रकार से भी दी है उनके अनुसार चन्द्रमा लग्न से पाँचवें स्थान पर हो तथा पाँचवें भाव का स्वामी एकादश भाव में और एकादश भाव का स्वामी पाँचवें भाव में हो तो इन्द्रयोग बन जाता है। परन्तु मुझे इस प्रकार के ग्रह सम्बन्धों से 'इन्द्रयोग' बनने एवं तदनुसार फल में सन्देह है

(२२)
भास्कर योग

परिभाषा—यदि सूर्य से दूसरे भाव में बुध हो, बुध से ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तथा चन्द्रमा से ५ या ९ वें भाग में बृहस्पति हो तो भास्कर योग बनता है।

फल—भास्कर योग से जन्म लेने वाला व्यक्ति अत्यन्त धनी होता है तथा निरन्तर अर्थ-संचय में प्रवृत्त रहता है। कई प्रकार के शास्त्रों को जानने वाला तथा कई विद्याओं में निष्णात् होता है शारीरिक रूप से बलशाली तथा शत्रुहन्ता होता है। ऐसा व्यक्ति संगीतादि कलाओं में रुचि रखने वाला होता है। या तो वह स्वयं कवि होता है अथवा कवियों, संगीतज्ञों एवं चित्रकारों की भरपूर सहायता करने वाला होता है। उसके पास चुम्बकीय व्यक्तित्व होता है तथा उसके जीवन में मित्रों की संख्या निरन्तर बढ़ती रहती है।

टिप्पणी—इस योग में ग्रह—बुध, सूर्य, चन्द्र—चाहे नीचांश में हों या पापराशिस्थ हों, फल में कोई अन्तर रहीं आता।

(२३)
रुचक योग

परिभाषा—मंगल अपनी राशि का होकर या मूल त्रिकोण अथवा उच्च राशि का होकर केन्द में स्थित हो तो रुचक योग होता है।

फल—रुचक योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति शारीरिक दृष्टि से
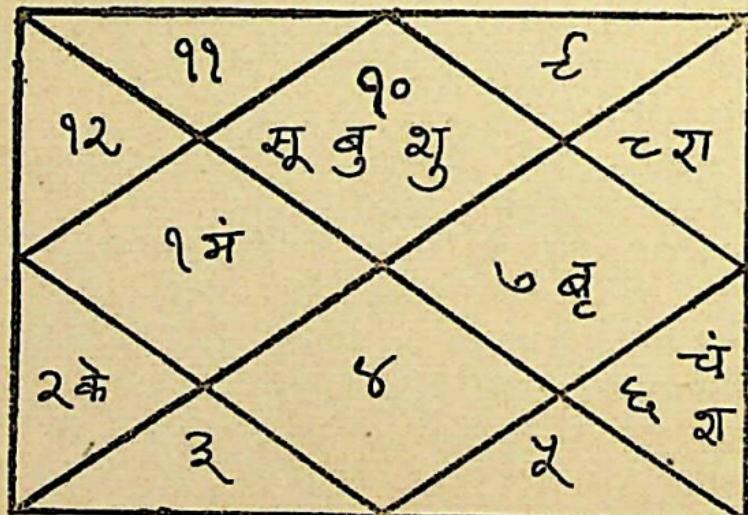
स्वामी विवेकानन्द

हृष्ट-पुष्ट और बलिष्ठ होता है। अपने कार्यों से वह संसार में प्रसिद्ध होता है तथा स्वयं के अतिरिक्त देश की कीर्ति को भी उज्ज्वल करता है। वह स्वयं राजा होता है अथवा अपना पूर्ण जीवन राजा के तुल्य ही व्यतीत करता है। अपने देश की संस्कृति एवं सभ्यता के प्रति वह पूर्णतः जागरूक रहता है तथा उसकी उन्नति में निरन्तर प्रयत्नशील रहता है। उसकी चुम्बकीय शक्ति एवं भावोत्पादक व्यक्तित्व के फलस्वरूप भक्त अथवा श्रद्धालुओं की निरन्तर भीड़ उसके इर्द-गिर्द रहती है तथा जीवन में उसे सच्चे मित्र प्राप्त होते हैं जो सदैव सहायक रहते हैं। ऐसे जातक का चरित्र उच्चकोटि का होता है और किसी भी प्रकार के प्रलोभन या दबाव में वह नहीं आता। आर्थिक दृष्टि से वह सम्पन्न रहता है, जीवन में द्रव्य का अभाव उसे महसूस नहीं होता तथा दीर्घ आयु प्राप्त करता है। सेना या मिलिटरी में होने पर ऐसा व्यक्ति उच्च अधिकारी बनता है।

टिप्पणी—ज्योतिष शास्त्र में 'पंच महापुरुष योग' वर्णित है। इन पाँचों में से कोई एक योग होने पर भी जातक महापुरुष होता है एवं देश-विदेश में कीर्ति लाभ करता है। इन पाँच योगों के नाम हैं—रुचक, भद्र, हंस, मालव्य और शश योग। इन योगों का अध्ययन करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि सम्बन्धित ग्रह निर्मल, अवेध, अवक्री और १० से २५ अंशों के बीच में हो। क्योंकि १ से ५ अंश तथा २५ से ३० अंश निर्बल कहे गये हैं। १० से २० अंश सर्वोत्तम कहे गये हैं। यों भी ५ से १० तथा २१ से २५ अंश ही श्रेष्ठ माने जाते हैं। यदि ग्रह निर्बल हो तो सम्बन्धित योग होने पर भी वह पूर्ण फल नहीं देगा तथा न अधिक प्रभावोत्पादक होगा। ग्रह स्वराशिस्थ या उच्च राशिस्थ अथवा मूल त्रिकोणगत हो। आर्ष ऋषियों के मतानुसार—मूल त्रिकोण निज तुङ्ग गृहो पयाता

भौमज्ञ जीव सित भानुसुता बलिष्ठा।
केन्द्र स्थिता यदि तदा रुच भद्रहंस
मालव्य चारु शश योग करा भवन्ति।।

रुचक योग तभी सफल एवं श्रेष्ठ बनता है, जब भौम बलिष्ठ केन्द्र स्थित हो जाता है या फिर वह नेता कमाण्डर या मुख्यमंत्री बनता है।

(२४)

भद्र योग

परिभाषा—बुध अपनी राशि का होकर या मूल त्रिकोण अथवा
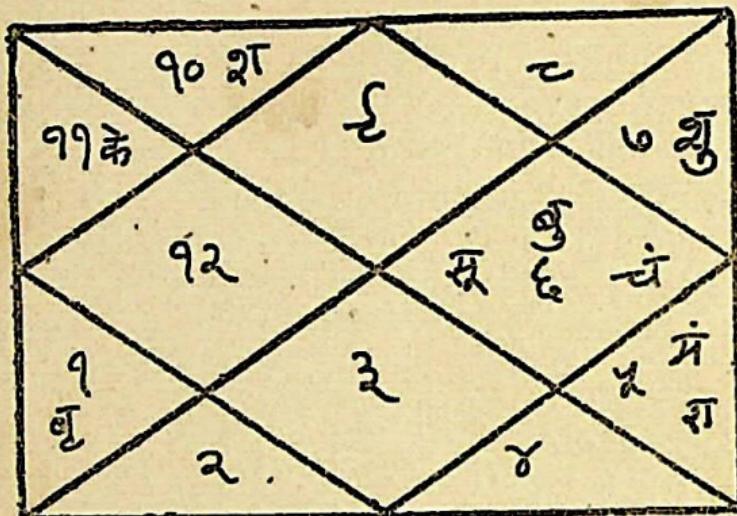
श्री लालबहादुर शास्त्री (भूतपूर्व प्रधान मन्त्री, भारत)

उच्च राशि का होकर केन्द्र में स्थित हो तो भद्र योग होता है।

फल—भद्रयोग में उत्पन्न मनुष्य सिंह के समान पराक्रमी और शत्रुओं का विनाश करने वाला होता है। विशाल वक्षस्थल, प्रभावोत्पादक व्यक्तित्व और ऊँचे उठते रहने की निरन्तर चाह उसकी प्रमुख विशेषता होती है। बान्धवों, मित्रों एवं सम्पर्क में आने वाले लोगों की वह हर संभव सहायता करने को उद्यत रहता है। इस जातक की विलक्षण बुद्धि होती है तथा पेचीदा से पेचीदा कार्य भी वह सहजता से कर लेता है। जीवन में धीरे-धीरे प्रगति करता है परन्तु अंत में सर्वोच्च पद पाने में सफल हो जाता है या जीवन का ध्येय पूर्ण कर लेता है। दीर्घायु होता है। व्यापारिक कार्यों में ऐसे जातक अधिक सफल होते हैं।

टिप्पणी—बुध मुख्यतः व्यापार एवं बुद्धि का हेतु होता है। बुध जब केन्द्र भाव में बलिष्ठ होकर बैठ जाता है तो निश्चय ही जातक या तो व्यापार को देश-विदेश में फैला देता है या फिर बुद्धि के कारण उच्च पद प्राप्त करने में सफल हो जाता है। बुध के कारण ऐसे व्यक्ति कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी नहीं घबराते और संकटों एवं बाधाओं के बीच भी रास्ता ढूढ़ लेते हैं। तुरन्त निर्णय लेने की इनमें विशेष क्षमता होती है श्री शास्त्री जी की कुण्डली में बुध कन्या राशि का होकर केन्द्र में होने के कारण भद्र योग प्राप्त है। बुध के फलस्वरूप ही शास्त्री जी जीवन में इतना ऊँचा उठ सके, इसमें सन्देह नहीं।

हंस योग

परिभाषा—बृहस्पति अपनी राशि का होकर या मूल त्रिकोण, अथवा उच्च राशि का होकर केन्द्र में स्थित हो, तो हंस योग होता है।

फल—हंस योग रखने वाला जातक सुन्दर व्यक्तित्व वाला होता है। रक्तिम चेहरा, ऊंची नासिका, सुन्दर चरण, हंसमुख, पुरुष, गौरागं, उन्नत ललाट और विशाल वक्षस्थल वाला ऐसा व्यक्ति मधुरभाषी होता है। उसके मित्रों एवं प्रशंसकों की संख्या बढ़ती ही
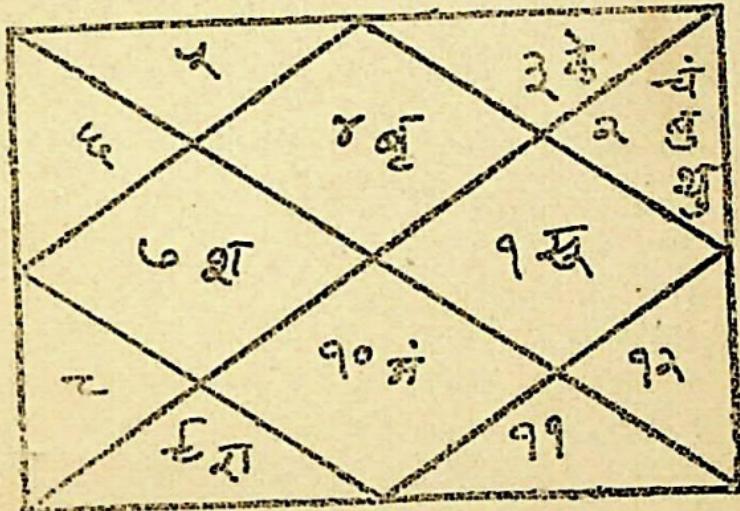
श्री वीर विक्रमादित्य

रहती है तथा वह सभी के साथ श्रेष्ठ व्यवहार करने का इच्छुक होता है। एसा व्यक्ति निष्पक्ष न्याय करता है तथा सफल वकील या जज बनता है।

टिप्पणी—श्री वीर विक्रमादित्य की कुण्डली में गुरु कर्क का, उच्च राशि का होकर केन्द्र में स्थित है, फलस्वरूप यहाँ हंस योग बना। हंस योग भी पंच महापुरुष योगों में से एक है, परन्तु इस योग की दो प्रमुख विशेषताएं हैं। पहली तो यह कि हंस योग रखने वाला व्यक्ति बात का धनी होने के साथ-साथ निष्पक्ष निर्णय देने की पूर्ण क्षमता रखता है, वह किसी भी प्रलोभन या दबाव में आकर अपने पथ से विचलित नहीं होता। दूसरा यह कि ऐसा योग रखने वाला व्यक्ति चुम्बकीय व्यक्तित्व लिये हुए होता है, जिसके कारण उसके परिचितों

की संख्या बढ़ती ही रहती है। हंस योग वाले व्यक्ति दीर्घायु होते हैं और साठ से सौ के बीच उम्र भोगते हैं। वृद्धावस्था सुखद रहती है। पारिवारिक दृष्टि से भी जातक सफल रहता है।

(२६)

मालव्य योग

परिभाषा—शुक्र अपनी राशि का होकर या मूल त्रिकोण अथवा उच्च राशि का होकर केन्द्र में स्थित हो तो मालव्य योग होता है।

फल—मालव्य योग वाले व्यक्ति का शारीरिक ढाँचा व्यवस्थित, आकर्षक एवं सुन्दर होता है। ऐसा जातक पतले होंठों वाला, सर्वावयव सम्पन्न शरीर वाला, लाल वर्ण शरीर, पतली कमर वाला, चन्द्रमा के समान कान्ति वाला, लंबी नाक वाला, सुन्दर कपोल वाला, सुन्दर प्रकाशवान नेत्र तथा आकर्षक व्यक्तित्व वाला होता है। ऐसा
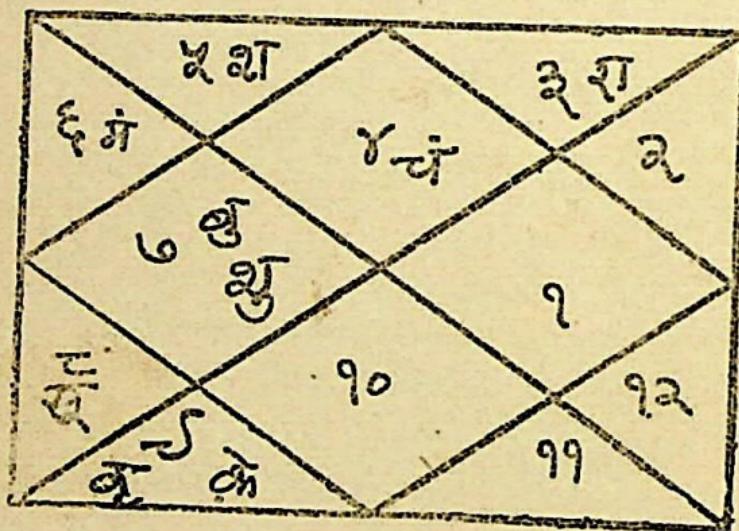
श्री जवाहरलाल नेहरू

व्यक्ति मजबूत दिमाग रखता है तथा कठिन से कठिन स्थितियों में भी विचलित नहीं होता। जीवन में इसे धन की ओर चिन्ता करनी ही नहीं पड़ती, स्वतः ही धन इस योग वाले के पास खिचता चला आता है। उत्तम सवारी-सुख मिलता है तथा जीवन में विविध भोगों का भोग सुखपूर्वक करता है। शिक्षा, संस्कृति एवं सभ्यता की दृष्टि से जातक उच्च कोटि का तथा ख्याति-प्राप्त होता है एवं देश-विदेश में अपने कार्यों से पूजा जाता है।

टिप्पणी—मालव्य योग वाला व्यक्ति कलाकार होता है। यदि केन्द्र में अकेला शुक्र स्वराशि या उच्च का होकर स्थित हो तो जातक काव्य, संगीतादि क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त कर नाम कमाता है। ऐसे जातक सफल कवि, चित्रकार, कलाकार या नृत्यकार होते हैं तथा जिस क्षेत्र में भी घुस जाते हैं उसमें ख्याति प्राप्त कर लेते हैं। सहृदयता इनका मौलिक गुण होता है। यदि मालव्य के योग के साथ सफल राजयोग भी हो तो व्यक्ति राजनीति में निस्सन्देह उच्च पद प्राप्त करता है। जैसे कि ऊपर दी गई श्री जवाहरलाल नेहरू की कुण्डली में स्पष्ट है। मालव्य योग होने से व्यक्ति कई स्त्रियों के सम्पर्क में आता है तथा उनसे लाभ उठता है। यों तो शुक्र वाहन, सुख एवं भोग-विलास का कारक है, फलस्वरूप शुक्र सम्बन्धित सभी वस्तुओं का वह पूर्ण सुख उठाता है। मालव्य और हंस—यदि ये दोनों योग कुण्डली में हों तो जातक निस्संदेह राजनीति में पटु होता है। मालव्य योग दीर्घायु भी प्रदान करता है।

(२७)

शश योग

परिभाषा—शनि अपनी राशि का होकर या मूल त्रिकोण अथवा उच्च राशि का होकर केन्द्र में स्थित हो तो शश योग होता है।

फल—'शश' वा 'शशक' योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति साधा-

पं० मदनमोहन मालवीय
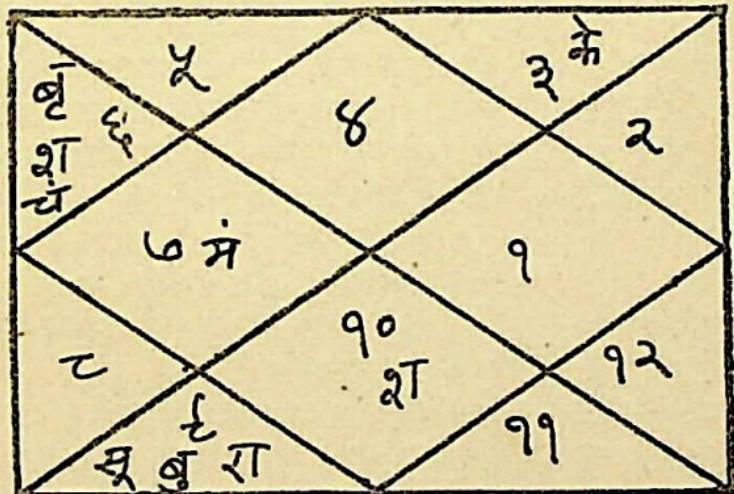
रण कुल में भी जन्म लेकर राजनीति-विशारद होता है। घर में नौकर-चाकर रहते हैं तथा सेवकों पर उसकी आज्ञा चलती है। वह गाँव का मुखिया, नगर पालिकाध्यक्ष या प्रसिद्ध नेता होता है। स्वयं राजा होता है या राजा तुल्य रहता है। सरल स्वभाव, सौम्य भाव एवं राजनीति के दांव-पेंच दोनों मिलकर उसके व्यक्तित्व को अपूर्व बना देते हैं।

टिप्पणी—शश योग में शनि प्रधान होता है। वह या तो स्वराशिस्थ, उच्च या मूल त्रिकोण गत हो। शश योग जीवन में धीरे-धीरे उन्नति करता है।

(२८)

अखण्ड साम्राज्यपति योग

परिभाषा—नवमेश, लाभेश (एकादशेश) द्वितीयेश, इन तीनों में से कोई एक चन्द्रमा के केन्द्र में हो और लाभेश बृहस्पति ही हो तो अखण्ड साम्राज्यपति योग होता है।

फल—इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति गरीब कुल में जन्म लेकर भी महान् पराक्रमी, साहसी और प्रसिद्ध नेता या विश्वविख्यात व्यक्ति होता है।

टिप्पणी—इस योग में यह आवश्यक है कि एकादश भाव बृहस्पति का घर हो। स्पष्टतः यह योग या तो कुम्भ लग्न में घटित हो सकता है या वृष लग्न में, क्योंकि वृष या कुम्भ लग्न होने से ही एकादश भाव धनु या मीन राशि का हो सकता है। चन्द्रमा कहीं पर हो, गुरु चन्द्रमा से केन्द्र में हो, इस प्रकार गुरु चन्द्र के संयोग से गजकेशरी योग भी बन जाता है। पर इस योग में इसके अतिरिक्त यह भी जरूरी है कि दूसरे घर का स्वामी, नवम घर का स्वामी या एकादश घर का स्वामी चन्द्र से केन्द्र स्थान में स्थित हो। यह योग ज्योतिष शास्त्र में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण योग माना गया है।

२९

चन्द्र-मंगल योग

परिभाषा—कुण्डली में कहीं पर भी चन्द्रमा और मंगल एक साथ बैठे हों तो चन्द्र-मंगल योग बनता है।

फल—चन्द्र मंगल योग रखने वाला व्यक्ति जीवन में धनवान होता है तथा अर्थ-संचय में प्रवीण होता है। विविध स्त्रियों से उसका सम्पर्क रहता है तथा सम्बन्धियों के साथ चालाकी-भरा व्यवहार करता है। माता के साथ उसके सम्बन्ध मधुर नहीं रहते।
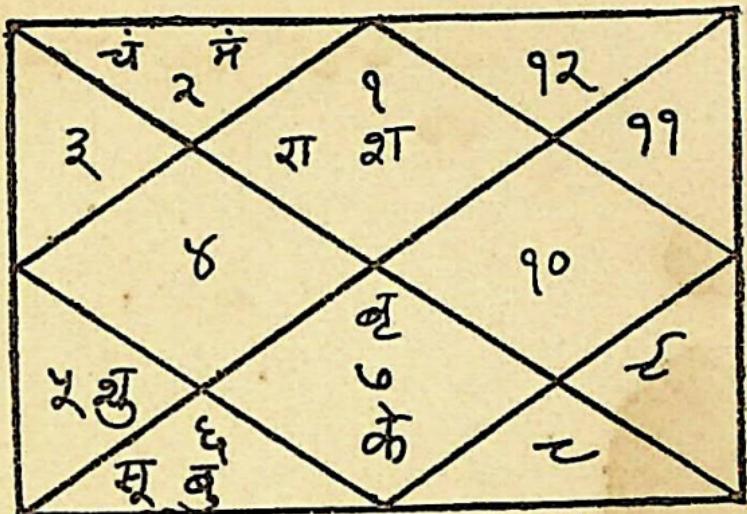
श्री अशोककुमार (फिल्म अभिनेता)

टिप्पणी—चंद्र-मंगल योग में इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वे दोनों किस स्थिति में हैं। यदि चंद्र-मंगल अकारक ग्रह हों तो जातक स्त्रियों का व्यापार करता है अथवा किसी स्त्री के सम्पर्क से लाभ उठाता है। शराब की दुकान आदि व्यापार से लाभ उठाता है तथा माता से क्षीण संबंध रखता है, परन्तु यदि चन्द्र मंगल कारक ग्रह हों तो इसका फल सर्वथा विपरीत होता है। ऐसी स्थिति में जातक ईमानदार, परोपकारी, ज्योतिष एवं वैद्यक में रुचि रखने वाला, हँसमुख, स्वस्थ शरीर एवं विश्व में प्रसिद्धि प्राप्त करने वाला होता है। श्री अशोककुमार की कुण्डली में चन्द्र और मंगल दोनों ग्रह कारक हैं, अतः चंद्र-मंगल योग उनके लिए शुभ रहा है, परन्तु दोनों ही स्थिति में जातक पूर्ण धनवान, भोगी और ऐश आराम करने वाला होता है, यह निश्चित समझना चाहिए। २, ६, १० और ११ व भाव में चन्द्र-मंगल योग विशेष शुभ माना जाता है।

(३०)

चतुस्सागर योग

परिभाषा—सभी शुभ ग्रह और पाप ग्रह (सम्पूर्ण ग्रह) केन्द्र स्थानों में हों तो चतुस्सागर योग होता है।

फल—इस योग वाले जातक प्रसिद्ध होते हैं तथा पूर्ण नेता होते हैं। ये व्यक्ति दीर्घजीवी, स्वस्थ एवं हृष्टपुष्ट होते हैं। ऐसा व्यक्ति खूब विदेश यात्राएँ करता है तथा समुद्र पार कर ख्याति लाभ करता है। नौकरी भी ऐसी होती है जिसमें भ्रमण कार्य विशेष रहता है।

पारिवारिक दृष्टि से ये जातक सफल होते हैं।

टिप्पणी—राहु और केतु ग्रहों में शामिल न कर शेष सातों ग्रह सूर्य, चन्द्र, भौम, बुध, गुरु, शुक्र, शनि—केन्द्र स्थानों (१, ४, ७, १०) में होने पर यह योग बन जाता है। ऐसा व्यक्ति यात्राएँ करने का शौकीन होता है तथा इसी के माध्यम से यश लाभ करता है।

(३१)
परश्चतुस्सागर योग

परिभाषा—यदि कुण्डली में सभी ग्रह मेष, कर्क, तुला और मकर राशियों में स्थित हों तो परश्चतुस्सागर योग होता है।

फल—यह योग प्रबल अनिष्ट नाशक है। कुण्डली चाहे कितनी ही दरिद्र हो, पर यह योग रखने वाला जातक उच्च पद प्राप्त करता है तथा सेक्रेटरी या उच्च स्तर का मन्त्री पद प्राप्त करता है। कुण्डली के सभी अनिष्टों का नाश करता हुआ जातक को उच्च शिखर की ओर ले जाने में यह योग सक्षम होता है।

टिप्पणी—चतुस्सागर योग और परश्चतुस्सागर योग में अन्तर यह है कि चतुस्सागर योग में सभी ग्रह केन्द्र स्थानों में हों, चाहे केन्द्र स्थानों की राशियाँ कोई भी हों, पर इस योग में राशियों पर विशेष बल दिया गया है। इस योग में इतनी ही आवश्यकता है कि सभी ग्रह मेष, कर्क, तुला और मकर राशियों में ही हों, फिर चाहे ये राशियाँ केन्द्र में हों या कहीं और हों। दोनों ही योगों में जातक को पूर्ण वाहन-सुख प्राप्त होता है।

(३२)
वसुमति योग

परिभाषा—लग्न से ३, ६, १० और ११वें स्थानों में शुभ ग्रह हों तो वसुमति योग बनता है।

फल—ऐसा जातक पूर्ण धनसुख भोगता है एवं जीवन में धन का अभाव नहीं रहता तथा स्वयं के बाहुबल से भाग्य को अपने पक्ष में करने में समर्थ होता है।

टिप्पणी—वसुमति योग में यह आवश्यक है कि स्थानों की गणना लग्न से की जाय एवं लग्न से उपचय स्थान (३, ६, १०, ११) शुभ ग्रहों से युक्त हों, पर कुछ विद्वान लग्न को मुख्य न मानकर चन्द्र को मुख्य मानते हैं, उनके अनुसार चन्द्र से उपचय स्थान शुभ ग्रहों से युक्त होने चाहियें। पर व्यावहारिक रूप में मुझे जो कुण्डलियाँ

देखने को मिलीं, उनमें चन्द्रमा को मुख्य मानकर स्थानों की गणना से फल पूर्ण रूप से सही नहीं उतरता, इसके विपरीत लग्न से गणना कर जो वसुमति योग बनता है, वह पूर्ण फलदाता सिद्ध हुआ। अतः मेरी राय में लग्न से गणना करना अधिक उचित प्रतीत होता है।

(३३)

गंधर्व योग

परिभाषा—लग्न स्थान शुक्र का घर हो और लग्न से केन्द्र में शुक्र और गुरु हो तो गंधर्व योग होता है।
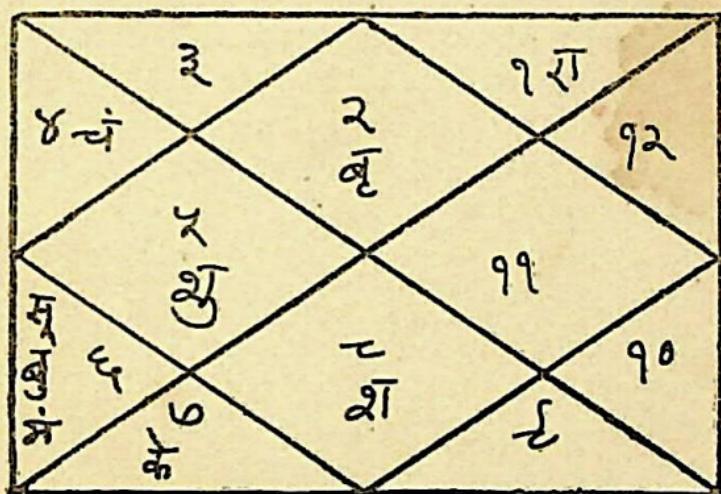
सुश्री लता मंगेशकर (प्रसिद्ध फिल्म गायिका)

फल—गंधर्व योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति प्रसिद्ध गीतकार अथवा गायक होता है तथा उसके संगीत से मनुष्यों का चित्त खिल उठता है। ऐसा व्यक्ति ख्याति लाभ करता है एवं विदेश-यात्रा भी करता है। धन की इसके जीवन में कमी नहीं रहती तथा जीवन के समस्त भोगों का पूर्ण भोग करता है।

टिप्पणी—गंधर्व योग रखने वाला व्यक्ति प्रसिद्ध गायक होता है तथा प्रसिद्धि प्राप्त करता है, परन्तु यह योग केवल वृष और तुला लग्न में ही घटित हो सकता है, क्योंकि शुक्र की दो ही राशियाँ हैं वृष और तुला और इस योग में लग्न शुक्र की राशि का ही होना चाहिए। फिल्म-जगत की सुप्रसिद्ध गायिका लता मंगेशकर की कुण्डली मे पूर्ण गंधर्व योग है। लग्न राशि शुक्र का स्वराशि वृष है तथा गुरु एवं शुक्र

लग्न से केन्द्र स्थानों में ही है। आर्थिक दृष्टि से ये जातक पूर्ण सम्पन्न होते हैं।

(३४ से ३९)
क्लीब योग

परिभाषा—क्लीब योग छः प्रकार का होता है—

१. कुण्डली में यदि सूर्य और चन्द्र परस्पर एक-दूसरे को देखते हों।

२. कुण्डली में शनि पर बुध की पूर्ण दृष्टि हो।

३. विषम राशि में भौम हो और सम राशि (२, ४, ६, ८, १०, १२) में सूर्य हो तथा दोनों एक-दूसरे को देखते हों।

४. चन्द्रमा और लग्न विषम राशि के हों तथा कहीं पर भी बैठकर मंगल उसे देखता हो।

५. चन्द्रमा सम राशि में और बुध विषम राशि में हों तथा इन दोनों ग्रहों को भौम देखता हो।

६. शुक्र, लग्न और चन्द्रमा नवांश कुण्डली में विषम राशि के हों तो क्लीब योग होता है।

फल—क्लीब योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति दुर्बल तथा अप्रभावित व्यक्तित्व वाला और नपुंसक होता है। किसी भी कार्य को करने से पूर्व हिचकिचाता है तथा जोखिम-भरे कार्यों से दूर ही रहता है। लड़ाई-झगड़ों में यह जातक विश्वास नहीं रखता एवं दूसरों के आधीन रहने में ही सुख अनुभव करता है।

टिप्पणी—कुण्डली में राजयोग हो, फिर भी क्लीब योग उस राजयोग को भंग कर जातक को कायर और अस्थिर चित्त वाला बना देता है। जीवन में वह सफल नहीं होता। इन छः योगों में से कोई भी एक क्लीब योग जातक की कुण्डली को सामान्य बना देता है।

(४०)
पाद जातत्व प्रद योग

परिभाषा—राहु लग्न में और लग्नेश कर्म स्थान में हो तो पाद जातत्व प्रद योग होता है।

फल—इस योग को रखने वाला जातक माता के गर्भ से पैरों द्वारा उत्पन्न होता है।

(४१)
दत्तक पुत्र योग

परिभाषा—शनि और मंगल सातवें अथवा पाँचवें भाव में हो

और उन पर अन्य ग्रहों की या किसी भी अन्य ग्रह की दृष्टि न हो तो दत्तक पुत्र योग होता है।

फल—दत्तक पुत्र योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति किसी कारण-वश, पालन-पोषण हेतु या लालचवश किसी दूसरे पुरुष की गोद चला जाता है तथा उसके द्वारा वास्तविक पिता को कोई सुख नहीं मिलता।

टिप्पणी—गोद जाने की या गोद लेने की परम्परा भारतीय समाज में रही है। स्वयं के पुत्र न होने या होने के पश्चात् मर जाने और भविष्य में पुत्र न होने की आशा पर किसी दूसरे का पुत्र गोद ले लिया जाता है, जिससे वंश परम्परा चलती रहे। इस प्रकार का योग रखने वाला व्यक्ति दूसरे पुरुष की गोद जाता है।

(४२)

अनूढ़ापत्यत्व साधक योग

परिभाषा—बारहवाँ भाव सूर्य से देखा जाता हो या सूर्य और चंद्रमा के वर्ग में क्रम से चन्द्र और सूर्य युक्त हों, तो अनूढ़ापत्यत्व साधक योग बनता है।

फल—जिसकी कुण्डली में यह योग होता है, वह कुंवारी लड़की का पुत्र होता है या उसकी कुमारावस्था में (अविवाहित स्थिति में) पुत्र हो जाता है।

टिप्पणी—इस योग के बारे में विद्वानों में मतभेद है। एक वर्ग तो यह मानता है कि ऐसा योग रखने वाला जातक स्वयं किसी अवि-वाहिता लड़की का पुत्र होता है, परन्तु दूसरे वर्ग के लोगों की यह धारणा है कि जिस जातक की कुण्डली में यह योग होता है, उसके अविवाहिता स्थिति में ही पुत्र हो जाता है। अनुभव के आधार पर दूसरी युक्ति अधिक सही प्रतीत होती है।

(४३)

मातृ त्यक्त योग

परिभाषा—मंगल और सूर्य एक साथ हों और जिस राशि पर बैठे हों, उस राशि से ५, ७ या ९ वें भाव में चन्द्रमा हो तो मातृ त्यक्त योग बनता है।

फल—मातृ त्यक्त योग में जन्म लेने के बाद जातक को उसकी माता किसी कारणवश त्याग देती है।

टिप्पणी—माता जन्म देने के बाद या तो लोक-लज्जा के भय से उत्पन्न बालक को त्याग देती है या गरीबी की स्थिति में अथवा किसी

और आकस्मिक घटनावश नवजात शिशु और माता का संबंध विच्छेद हो जाता है। पर यदि इस योग में बृहस्पति चन्द्रमा को देखता हो तो त्यागा हुआ बालक भी ख्याति-प्राप्त और दीर्घायु होता है।

(४४ से ४७)

मातृ मरण योग

परिभाषा—(१) शनि के साथ चन्द्रमा और सूर्य बारहवें भाव में हों और मंगल चतुर्थ भाव में हो तो यह योग बनता है।

(२) लग्न और चन्द्रमा एक साथ या अलग-अलग शुभ दृष्टि से रहित हों और दोनों ओर पाप ग्रह बैठे हों तो उपर्युक्त योग बनता है।

(३) ६, ८ और १२वें भाव में क्रूर ग्रह हों तथा इन स्थानों पर शुभ ग्रह न हों। साथ ही पापग्रहों के मध्य में शुक्र या गुरु हो तो मातृ मरण योग होता है।

(४) यदि दो पापग्रह लग्न और सप्तम स्थानों में हों तथा उनपर शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो तो उपर्युक्त योग बनता है।

फल—मातृमरण योग में बालक के जन्म के कुछ समय बाद ही उसकी माता की मृत्यु हो जाती है, ऐसा समझना चाहिए।

टिप्पणी—उपर्युक्त चारों योगों में से कोई भी योग होने पर जन्म के तत्काल बाद उसकी माता की मृत्यु समझनी चाहिए।

(४८)

राज्य लक्षण योग

परिभाषा—गुरु, शुक्र, बुध और चन्द्रमा चारों ही लग्न में हों या केन्द्र स्थानों में हों तो राज्य लक्षण योग बनता है।

फल—जिस जातक की कुण्डली में यह योग होता है वह जीवन में बहुत उन्नति करता है, जीवन की सभी सुख-सुविधाएँ भोगता है और पूर्ण वाहन-सुख प्राप्त करता है। उसका व्यक्तित्व आकर्षक होता है।

टिप्पणी—सुन्दरता और व्यक्तित्व प्रदान करने वाले ग्रह हैं बुध और चन्द्र। यदि ये दोनों ग्रह बलवान और कारक बन कर बैठे हों तो जातक को विशेष सुन्दर बना देते हैं, पर यदि ये दोनों ग्रह अकारक निर्बल अथवा शत्रु क्षेत्री हों तो जातक के व्यक्तित्व में विशेष निखार नहीं समझना चाहिए। गुरु, शुक्र और बुध के साथ चन्द्रमा भी केन्द्र स्थानों में हो तो पूर्ण राज्य लक्षण योग बनता है, परन्तु यदि केवल चन्द्र केन्द्र में न होकर त्रिकोण स्थान में ही हो तो भी राज्य लक्षण योग समझना चाहिए। यद्यपि यह वैसा प्रभावोत्पादक नहीं माना जाता

है। पूर्ण राज्य लक्षण योग रखने वाले के जीवन में किसी भी प्रकार का अभाव नहीं रहता।

(४९)

वंचना चोरभेती योग

परिभाषा—लग्न का स्वामी कुण्डली में कहीं पर भी राहु, शनि या केतु के साथ ही एवं लग्न में पापग्रह स्थित हो तो वंचना चोरभेती योग बनता है।

फल—इस योग को रखने वाला व्यक्ति हमेशा स्वयं में हीन भावना अनुभव करता है तथा ठगों, चोरों, जेबकतरों अथवा धोखे से डरता रहता है।

टिप्पणी—ऐसा व्यक्ति अस्थिर मतिवाला और मन में संशय रखने वाला होता है। हर समय वह सशंकित रहता है कि कोई उसे ठग न ले या उसकी जेब न काट ले अथवा कोई उसे धोखा न दे दे। ऐसा व्यक्ति न तो किसी पर विश्वास करता है और न किसी से मन की बात खुल कर कहता ही है।

(५०-५२)

चन्द्र कृतोरिष्ट भंग योग

परिभाषा—(१) पूर्ण चन्द्रमा शुभ ग्रह में या शुभ अंशों में हो तो कुण्डली में चन्द्र कृतोरिष्ट भंग योग बनता है।

(२) चन्द्रमा वृष या कर्क राशि में हो अथवा मित्रों के ग्रह में शुभ वर्ग में या शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो यही योग बनता है।

(३) शुक्ल पक्ष में रात्रि में जन्म हो और कृष्ण पक्ष में दिन में जन्म हो तो यही योग होता है।

फल—कुण्डली में ६, ८वें चन्द्रमा हो या चन्द्रमा द्वारा कुण्डली में अरिष्ट होताहो तो इस प्रकार का योग बनने पर चन्द्र से बना अरिष्ट नाश हो जाता है।

टिप्पणी—कुण्डली में जिन स्थितियों में पड़ा चन्द्र अरिष्ट करता है वे स्थितियाँ इस प्रकार हैं : १. कुण्डली में छठे तथा आठवें भाव में पड़ा कर २. सूर्य के साथ बैठ कर (अस्त होकर)। ३. सूर्य से सप्तम स्थान पर होकर। ४. शत्रु क्षेत्री या शत्रु ग्रह की राशि में होने पर। ५. शत्रु ग्रहों के साथ में बैठने से। ६. शत्रु ग्रहों से दृष्ट होने पर। उपर्युक्त छः स्थितियों में होने पर चन्द्रमा शुभ फल नहीं देता। चूंकि चन्द्रमा सबसे अधिक तेज चलने वाला ग्रह है और पृथ्वी के अधिक

निकट भी है, अतः चन्द्रमा का सर्वाधिक गहरा प्रभाव मनुष्य पर पड़ता है तथा अशुभ चन्द्र जातक की भाग्योन्नति में रोड़े अटकाता रहता है, परन्तु ऊपर जो चन्द्र कृतोरिष्ट भंग योग दिये गये हैं, उनमें से कोई एक भी कुण्डली में होने पर चन्द्रमा का अरिष्ट समाप्त हो जाता है और वह शुभ फल प्रदाता बन जाता है।

(५३)

लग्नेश कृतोरिष्ट भंग योग

परिभाषा—यदि लग्नेश बलवान और पूर्ण अंशों में हो, शुभग्रहों से युत या दृष्ट हो, केन्द्र में स्थित हो, तो लग्नेशकृतोरिष्ट भंग योग होता है।

फल—लग्नेश से कुण्डली में अनिष्ट हो या वह ६, ८, १२वें भाव में हो तो उपर्युक्त स्थिति होने पर जातक की कुण्डली का अनिष्ट शान्त होता है तथा उसकी दीर्घायु होती है।

टिप्पणी—चन्द्र कृतोरिष्ट भंग योग की टिप्पणी में चन्द्र की जो ६ अरिष्ट स्थितियाँ बताई हैं वे ही स्थितियाँ लग्न के स्वामी के साथ घटित हों तो अनिष्ट और अल्पायु मानी जाती हैं, परन्तु उपर्युक्त योग होने पर लग्नेश से उत्पन्न अरिष्ट शान्त हो जाता है।

(५४)

शुभग्रह कृतोरिष्ट भंग योग

परिभाषा—बृहस्पति, शुक्र और बुध इनमें से एक भी बली होकर केन्द्र में हो तथा उनका पाप ग्रहों से सम्बन्ध न हो तो उपर्युक्त योग बनता है।

फल—शुभग्रहों से उत्पन्न अनिष्ट शान्त होकर वे जातक कोअपने से सम्बन्धित शुभ फल प्रदान करते हैं।

टिप्पणी—शुभग्रह छः स्थितियों में अनिष्ट करते हैं: १. शुभग्रह कुण्डली में ६, ८ या १२ वें भाव में हों। २. सूर्य के साथ बैठे हों। ३. सूर्य से सप्तम स्थान पर हों। ४. शत्रु क्षेत्री या शत्रुग्रह की राशि में हों। ५. शत्रुग्रहों के साथ बैठे हों। ६. शत्रुग्रहों अथवा पापग्रहों से दृष्ट हों। इन छहों स्थितियों में से कोई भी एक या एक से अधिक स्थिति होने पर शुभग्रह भी अनिष्ट करते हैं तथा जातक को अशुभ फल या क्षीण फल प्रदान करते हैं, परन्तु गुरु शुक्र या बुध इन तीनों में से कोई भी एक ग्रह या दो अथवा तीनों ग्रह बलवान होकर (१० से २५ अंशों में होकर; केन्द्र में हों तो शुभग्रहों से उत्पन्न समस्त दुष्प्रभाव शान्त हो

जाते हैं तथा वे ग्रह शुभ फल प्रदाता बन जाते हैं। केन्द्र स्थानों (१, ४ ७, १०) में सर्वाधिक वलवान केन्द्र स्थान १०वां भाव है, उससे कम वली ७वाँ भाव, उससे भी कम बली ४था भाव माना जाता है। लग्न को १०वें भाव के बराबर वली माना गया है।

(५५)
गुरु कृतोरिष्ट भंग योग

परिभाषा—पूर्ण वलवान गुरु यदि केन्द्र में हो तो उपर्युक्त योग वनता है।

फल—कुण्डली में शुभ, अशुभ, पाप अथवा सौम्य किसी भी ग्रह से अनिष्ट हो, पर गुरु कृतोरिष्ट भंग योग उन सभी अनिष्टों को नाश कर देता है।

टिप्पणी—कुण्डली में वृहस्पति को सर्वाधिक महत्ता दी गई है। यदि केवल वृहस्पति ही वलवान होकर केन्द्र स्थान में बैठा हो तो वह कुण्डली के लाखों दोषों का हनन कर लेता है।

"लक्षान्दोषान् हन्ति देवेन्द्र मंत्री केन्द्र प्राप्तः।"

अर्थात् गुरु अकेला ही लाखों अनिष्टों को शान्त करने में समर्थ होता है।

(५६)
राहु कृतोरिष्ट भंग योग

परिभाषा—राहु लग्न से ३, ६ या ११ वें भाव में हो, तथा उसे शुभग्रह देखते हों तो यह योग वनता है अथवा मेष, वृष और कर्क लग्न में राहु ६, १०, १२ वें भाव के अतिरिक्त कहीं पर भी हो तो राहु कृतोरिष्ट भंग योग वनता है।

फल—व्यक्ति शत्रुहन्ता, प्रतापी एवं बलवान होता है।

टिप्पणी—मेष, वृष और कर्क लग्न में राहु कारक ग्रह है। यदि वह २, ६ और १०वें भाव में न हों। ऐसा राहु सभी अनिष्टों का नाश कर देता है। काल प्रकाशिका के अनुसार—

राहुस्त्रि षष्ठ लाभस्थः शुभग्रह निरीक्षितः।
वृषकर्कजगो वाऽपि सर्वारिष्ट विनाशकृत्॥

महामुनि शौनक के अनुसार किसी भी कुण्डली में राहु लग्न से ३, ६, ११वें भाव में पड़कर शुभ फल ही देता है तथा कुण्डली में स्थित अन्य सभी अनिष्टों को नाश कर देता है—

राहुस्तृतीये षष्ठे वा लाभे वा शुभ संयुतः।
तद्दृष्टो वा तदारिष्टं एवं शमयति ध्रुवम् ॥

(५७ से ६८)

पूर्णायु योग

परिभाषा—(१) केन्द्र स्थान शुभग्रहों से युक्त हो, लग्नेश शुभग्रह के साथ बैठा हो तथा गुरु से देखा जाता हो, तो पूर्णायु योग होता है।

(२) लग्नेश केन्द्र स्थान में हो, तथा उसके साथ गुरु और शुक्र बैठा हो तो उपर्युक्त योग होता है।

(३) तीन ग्रह उच्च राशि के हों तथा लग्नेश, अष्टमेष साथ हों तथा कुण्डली का अष्टम स्थान पापग्रह से रहित हो, तो पूर्णायु योग होता है।

(४) अष्टम भाव में तीन ग्रह हों या तीन ग्रह उच्च राशि के, मित्र स्थान के तथा अपने ही वर्ग में हों एवं लग्नेश बलवान हो तो पूर्णायु योग बनता है।

(५) कोई भी एक ग्रह उच्चराशि में बैठा हो, उसके साथ शनि और अष्टमेश भी हो तो उपर्युक्त योग होता है।

(६) पापग्रह ३, ६, ११ वें भाव में हो, शुभग्रह केन्द्र(१, ४, ७, १०) या त्रिकोण (५, ९) में हो एवं लग्नेश बली हो तो पूर्णायु योग होता है।

(७) ६ ७ और ८वें भाव में शुभग्रह हो तथा ३, ६ और ११वें भावों का पापग्रह हो तो पूर्णायु योग बनता है।

(८) पापग्रह ६ठे तथा १२वें भाव में हो, लग्नेश केन्द्र स्थान में हो या आठवाँ भाव पापग्रह से युत हो और दशमेश अपनी उच्च राशि में हो, तो पूर्णायु योग होता है।

(९) अष्टमेश जिस भाव में हो, उसका स्वामी जिस राशि में स्थित हो, उस राशि का स्वामी और लग्नेश केन्द्र में हो, तो पूर्णायु योग बनता है।

(१०) द्विस्वभाव राशि का लग्न हो, लग्नेश केन्द्र स्थान में हो या अपनी उच्च राशि का अथवा मूल त्रिकोण गत हो तो पूर्णायु योग बनता है।

(११) द्विस्वभाव लग्न हो और लग्नेश से केन्द्र में दो पापग्रह हों, तो पूर्णायु योग होता है।

फल—उपर्युक्त बारह योगों में से कोई भी एक योग कुण्डली में हो तो जातक पूर्ण आयु प्राप्त करता है।

टिप्पणी—ऊपर पूर्णायु के १२ योग दिये हैं, इनमें से कोई एक या एक से अधिक योग कुण्डली में होने पर जातक पूर्ण आयु प्राप्त करता है। "सप्तत्युपरिशतान्तं पूर्णमायुः" के अनुसार जीवन के ७० वर्ष के बाद १०० वर्ष पर्यन्त पूर्णायु मानी गई है।

(६९)

शताधिक आयुर्योग

परिभाषा—सूर्य, गुरु और मंगल शनि के नवांश में स्थित हों या नवम भाव में हों तथा बलवान हों एवं लग्न स्थान में चन्द्रमा हो, तो शताधिक आयुर्योग बनता है।

फल—शताधिक आयुर्योग होने पर जातक सौ वर्ष से भी अधिक आयु भोगता है तथा जीवन सुखपूर्वक व्यतीत करता है।

टिप्पणी—इस योग में जातक सौ से अधिक वर्ष आयु भोगता है तथा जीवन में विविध भोगों को भोगता है। लग्न में चन्द्र की स्थिति होने के कारण जातक को धन की चिन्ता नहीं करनी पड़ती।

(७०)

अमितमायु योग

परिभाषा—कर्क लग्न हो, लग्न में गुरु और चन्द्रमा हो, बुध और शुक्र केन्द्र में बैठे हों तथा शेष ग्रह (सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु) तीसरे, छठे और ग्यारहवें भाव में हों, तो अमितमायु योग होता है।

फल—इस योग को रखने वाला व्यक्ति विश्वविख्यात होता है तथा जीवन में उसे किसी भी प्रकार का अभाव नहीं रहता। आर्थिक और पारिवारिक दृष्टि से भी वह पूर्ण सम्पन्न होता है तथा सौ से भी अधिक वर्ष की आयु भोगता है।

टिप्पणी—अमितमायु योग ज्योतिष के श्रेष्ठ योगों में से एक योग है। इस योग में गुरु चन्द्र के संयोग से गजकेशरी योग तो बनता ही है, साथ ही उसे यह योग पूर्ण लक्ष्मीपति बना देता है। जीवन में यह समस्त भोगों का सुखपूर्वक भोग करता है।

(७१)

मुनि योग

परिभाषा—गुरु और शनि एक ही अंशों के हों तथा दोनों नवम या दशम भाव में बैठे हों एवं शुभ ग्रहों से दृष्ट हों, तो मुनि योग

बनता है।

फल—मुनि योग में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति सांसारिक प्रपंचों से दूर हटकर उम्र भर के लिए साधु वन जाता है एवं मुनि का जीवन व्यतीत करता है।

टिप्पणी—यह योग व्यक्ति को कुशल सामाजिक नहीं बनने देता और न उसे परिवार का सुख प्राप्त होता है। बाल्यावस्था से ही व्यक्ति वीतरागी और साधु-स्वभाव हो जाता है तथा एकान्त में रहना अधिक पसन्द करता है। साधुवत् जीवन ही इसका चरम उद्देश्य वन जाता है। मुनि जीवन में रहकर जातक प्रसिद्धि प्राप्त करता है।

(७२—७३)

काहल योग

परिभाषा—(१) नवम भाव का स्वामी और चतुर्थ भाव का स्वामी परस्पर केन्द्र में हों और लग्नेश वलवान हो तो काहल योग होता है।

(२) चौथे भाव का स्वामी अपने उच्च, नीच या स्वराशि पर हो एवं दशम भाव के स्वामी के साथ वैठा हो या देखा जाता हो, तो काहल योग होता है।
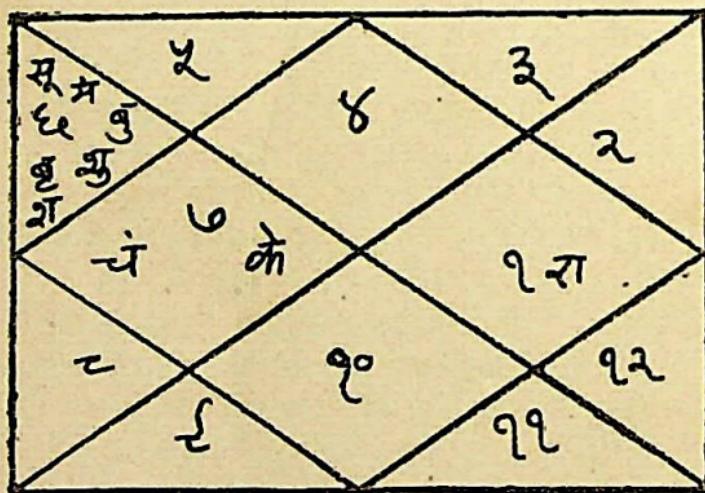
चंगेज खाँ

फल—काहल योग में उत्पन्न जातक वलिष्ठ शरीर, वीर और दृढ़ चरित्र का व्यक्ति होता है। साहसिक कार्यों में इसकी प्रवृत्ति

रमती है तथा मिलीटरी स्थल सेना में उच्च पद प्राप्त करता है। जीवन में यह जातक सभी सुखों को भोगता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति मूर्ख भी होता है तथा मूर्खता के ही कारण अथवा स्वयं की सफल नीति के कारण ही उसका पतन होता है।

टिप्पणी—पाठकों के लिए काहल योग की एक विशेष कुण्डली चंगेज़ खाँ की दे रहा हूँ, जो बलिष्ठ और वीर होने के साथ-साथ पूर्ण साहसी था एवं विश्व-विजय के स्वप्न अपनी आँखों में संजोये हुए था, खतरनाक कार्यों एवं युद्धोन्माद में ही वह आनन्द प्राप्त करता था। परन्तु उसका पतन उसकी ही असफल नीति के कारण हुआ था आधुनिक युग में इस योग को रखने वाला जातक सुखी नहीं रह सकता और न इस प्रकार की प्रवृत्ति ही आधुनिक युग में मान्य है। फिर भी यदि किसी जातक की कुण्डली में यह योग हो तो उसे सलाह देनी चाहिए कि वह मिलीटरी या सेना में भर्ती हो जाय, जहाँ उसके उन्नति करने के अवसर आते रहते हैं। यदि यह योग बलिष्ठ हो, साथ ही राजयोग भी कुण्डली में हो तो व्यक्ति कलेक्टर बन सकता है। कुंभ लग्न वाली कुण्डली में यह योग ज्यादा प्रभावशाली माना गया है।

(७४)

बुध-आदित्य योग

परिभाषा—कुण्डली में कहीं पर भी सूर्य और बुध एक साथ पड़े हों तो बुध आदित्य योग बनता है।

फल—जिस कुण्डली में बुध और सूर्य एक ही स्थान पर बैठे हों, वह अत्यन्त बुद्धिमान होता है तथा प्रत्येक कठिन समस्या को चतुराई से हल करने में समर्थ होता है। जातक की प्रसिद्धि सर्वत्र होती है और वह अपने कार्यों से विख्यात होता है। जीवन में ऐसा व्यक्ति पूर्ण सुख, आनन्द एवं ऐश्वर्य भोगता है।

टिप्पणी—सामान्यतः सूर्य के साथ कोई भी ग्रह बैठकर अस्त हो जाता है या प्रभाव से क्षीण हो जाता है। स्पष्टतः सूर्य के साथ बैठा हुआ ग्रह या उसके द्वारा देखा गया ग्रह पूर्ण फल प्रदान नहीं कर सकता, परन्तु बुध अकेला ऐसा ग्रह है, जो सूर्य के साथ बैठकर भी न तो अस्त होता है और न उसका प्रभाव ही क्षीण होता है, अपितु उल्टा वह सूर्य के साथ बैठकर उच्च शुभ फल प्रदाता हो जाता है। परन्तु

इस योग का फल तभी चरितार्थ होता है, जब बुध १० अंशों से कम न हो। इससे कम होने पर बुध निर्बल बन जाता है, और पूर्ण फल नहीं दे पाता। संलग्न कुण्डली भारत की प्रधामन्त्री श्रीमती इन्दिरा
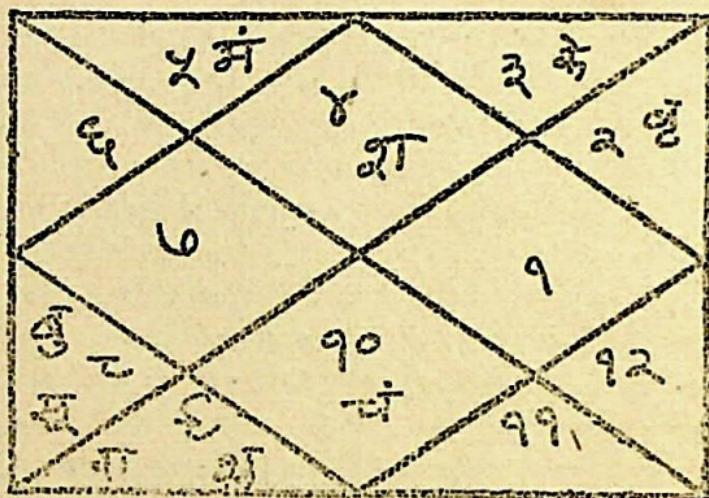
श्रीमती इन्दिरा गाँधी

गाँधी की है, जिसके पाँचवें भाव में सूर्य और बुध दोनों साथ बैठकर उक्त योग बनाते हैं। यद्यपि यह योग अधिक कुण्डलियों में पाया जाता है, पर इस योग को सामान्य योग ही नहीं समझना चाहिए।

(७५—७७)

क्षय रोग योग

परिभाषा—१. चन्द्रमा या गुरु जलचर राशि में होकर अष्टम स्थान में हो और उसे पापग्रह देखते हों तो क्षय रोग योग होता है।

२. अष्टम स्थान में शुक्र हो और उसे पापग्रह देखते हों तो क्षय-रोग योग होता है।

३. छठे स्थान में राहु हो, लग्न से केन्द्र स्थान में मन्दी हो तथा लग्नस्थान का स्वामी आठवें भाव में हो तो क्षय रोग होता है।

फल—यह योग होने से जातक क्षय रोग से पीड़ित होता है तथा उसकी मृत्यु भी इसी रोग के कारण होती है।

टिप्पणी—परिभाषा अपने आप में स्पष्ट है, अतः इसे स्पष्ट करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

(७८)

सर्प-दंश योग

परिभाषा—आठवें भाव में राहु हो और उसे पापग्रह देखता हो तो सर्प-दंश योग होता है।

फल—जिस जातक की कुण्डली में सर्प-दंश योग होता है, उस व्यक्ति की मृत्यु साँप के डसने से होती है।

(७९—८५)

दुर्मरण योग

१. अष्टम भाव और लग्न भाव का स्वामी बलहीन हो, भौम छठे घर के स्वामी के साथ बैठा हो तो दुर्मरण योग होता है।

२. दशम भाव का नवांशपति शनि से युक्त हो तथा वह पापग्रह की राशि में बैठा हो तो दुर्मरण योग होता है।

३. दशम भाव का नवांशपति राहु या केतु के साथ हो तो उपर्युक्त योग बनता है।

४. दशम भाव का नवांशपति मंगल, राहु और शनि के साथ हो तो उपर्युक्त योग बनता है।

५. क्षीण चन्द्रमा अष्टम भाव में बैठा हो तो भी दुर्मरण योग होता है।

६. यदि मंगल की राशि या मंगल नवांश सहित लग्न में सूर्य हो और कृष्ण पक्ष का चन्द्रमा सिंह राशि में राहु-बुध के साथ हो तो दुर्मरण योग होता है।

७. लग्न में शनि हो और उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो तथा उसके साथ चन्द्र, सूर्य और राहु हों तो दुर्मरण योग होता है।

फल—इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति स्वाभाविक मृत्यु से नहीं मरता है, अपितु उसका दुर्मरण होता है।

टिप्पणी—ऊपर जो ७ दुर्मरण योग दिये हैं, इनमें से प्रत्येक की मृत्यु का कारण निम्न हैं—

१. शस्त्र से मृत्यु, २. विष खाने से मृत्यु, ३. फाँसी से मृत्यु, ४. आग में जलने से मृत्यु, ५. मृगीरोग के फलस्वरूप मृत्यु, ६. पेट फट जाने या पेट में शस्त्र लग जाने के कारण मृत्यु, ७. नाभि पर भीषण प्रहार से मृत्यु।

ऊपर दुर्मरण योग की जो सात परिभाषाएँ दी हैं, टिप्पणी में इन सातों योगों के कारण लिखे हैं, जिनके द्वारा जातक का दुर्मरण होता

है। हिन्दू धर्म शास्त्रानुसार दुर्मरण उचित नहीं माना गया है, उनके मतानुसार दुर्मरण से जातक की गति नहीं होती। उपर्युक्त योग रखने वाले जातक पुलिस या सेना में ही अधिकतर होते हैं, ऐसा मेरा अनुभव रहा है। 'कृष्णपक्ष का चन्द्रमा' से तात्पर्य है, जातक का जन्म कृष्णपक्ष में हुआ हो।

(८६—१०६)

अस्वाभाविक मृत्यु योग

परिभाषा—१. चन्द्रमा, शनि एवं राहु से युक्त होकर ६ठे, ८वें या १२वें भाव में हो और लग्नेश से देखा जाता हो तो अस्वाभाविक मृत्यु योग होता है।

२. सूर्य १०वें भाव में हो, मंगल ४थे भाव में हो तथा शुभ ग्रह से युक्त न हो तथा लग्न में बुध हो तो उपर्युक्त योग समझना चाहिए।

३. लग्न में, चतुर्थ भाव में, अष्टम भाव में और दशम भाव में शुभ ग्रह हों और पापग्रहों से दृष्ट हों तो उपर्युक्त योग बनता है।

४. चन्द्रमा लग्न में हो, शनि चतुर्थ भाव में हो और दशम भाव में मंगल हो तो यही योग समझना चाहिए।

५. सूर्य लग्न में तथा चन्द्रमा सप्तम स्थान में हो और दोनों को पापग्रह देखते हों तो उपर्युक्त योग होता है।

६. सूर्य और चन्द्रमा लग्न में हों और सभी ग्रह द्विस्वभाव राशियों में हों तथा पाप ग्रहों से दृष्ट हों तो यही योग समझना चाहिए।

७. चन्द्रमा से ५वें तथा ९वें भाव में पापग्रह हों या पापग्रहों की दृष्टि हो तथा जन्म लग्न से ८वें भाव का द्रेष्काण पाश संज्ञक हो तो अस्वाभाविक मृत्यु योग होता है।

८. लग्न में मीन राशि हो तो तथा उसमें पापग्रह के साथ सूर्य और चन्द्रमा दोनों हों तथा ८वें भाव में पापग्रह हों तो उपर्युक्त योग बनता है।

९. मंगल चौथे भाव में हो, सूर्य सप्तम भाव में तथा शनि और चन्द्र अष्टम भाव में हों तो यही योग बनता है।

१०. शनि धन भाव में हो, चन्द्रमा सुख भाव में हो और मंगल लग्न से १०वें स्थान पर हो तो उपर्युक्त योग बनता है।

११. मंगल ४थे भाव में हो, चन्द्रमा दूसरे भाव में हो और सूर्य १०वें भाव में हो तो यही योग बनता है।

१२. शनि अष्टम में हो, बलरहित चन्द्रमा १०वें भाव में हो और

सूर्य ४थे भाव में हो तो यही योग बनता है।

१३. लग्नेश केतु के साथ पापग्रहों के मध्य हो और लग्न से अष्टम स्थान पापग्रह से युक्त हो तो उपर्युक्त योग होता है।

१४. अशुभ ग्रह लग्न से ४ और १०वें भाव में हो अथवा ५ और ९वें भाव में हो एवं अष्टमेश मंगल से युक्त होकर लग्न में हो तो अस्वाभाविक मृत्यु योग होता है।

१५. सूर्य लग्न में हो, शनि पंचम में हो, चन्द्रमा अष्टम में हो और भौम नवम भाव में हो तो यही योग समझना चाहिए।

१६. पापग्रह दशम और चतुर्थ स्थान में स्थित हो, क्षीण चंद्रमा छठे भाव में हो या ८वें भाव में हो तो सही योग होता है।

१७. सूर्य और मंगल लग्न और द्वादश भाव में हों तथा सप्तम भाव में सूर्य, चंद्र और बुध हो तो उपर्युक्त योग होता है।

१८. लग्न से अष्टम भाव पापग्रह से युक्त हो, आठवें घर का स्वामी १२वें भाव में हो या लग्न में हो और साथ में बलहीन लग्नेश हो तो यही योग होता है।

१९. चंद्रमा मंगल या शनि के घर में हो तथा उसे पापग्रह देखता हो या वह पापग्रहों के बीच हो तो यही योग होता है।

२०. लग्नेश अष्टमेश के साथ और भी बहुत ग्रहों से युक्त हो तो भी अस्वाभाविक मृत्यु योग होता है।

फल—उपर्युक्त बीस योगों में से कोई एक या एक से अधिक योग कुण्डली में हो तो जातक की मृत्यु स्वाभाविक नहीं होती।

टिप्पणी—अस्वाभाविक मृत्यु से तात्पर्य है अकाल मृत्यु। प्रत्येक योग से संबंधित अकाल मृत्यु या आकस्मिक मृत्यु का हेतु जिनसे अस्वाभाविक मृत्यु संभव है, इस प्रकार हैं— १. जंगल में भटकने से भूख-प्यास से पीड़ित होकर, २. पशुओं का सींग लगने से, ३. शूलपात से, ४. आपसी कलह से, ५. जल में डूबने से, ६. गहरे पानी में डूबने से, ७. जेल में रहने से, किसी बंधन या रस्सी से, ८. स्त्री के द्वारा जहर दिये जाने से, ९. खराब अन्न खाने से, १०. घावों के सड़ने से, ११. किसी जानवर की सवारी से गिरकर, १२. काष्ठों के ढेर में दब जाने से, १३. माता के कुचक्रों से, १४. बन्धन से, १५. वृक्ष पर से गिरने से, १६. शत्रु के साथ लड़ाई होने से, १७. मकान के नीचे दब जाने से, १८. रास्ते में जंगल में भटक कर, १९. हैजा, प्लेग या छूत की ऐसी ही किसी बीमारी से।

(१०७)

मोक्ष प्राप्ति योग

परिभाषा—धनु लग्न में वृहस्पति मेष के नवांश का हो, शुक्र सप्तम भाव में हो तथा बलवान चंद्रमा कन्या राशि का हो तो मोक्ष प्राप्ति योग होता है।

फल—मोक्ष प्राप्ति योग जिस जातक की कुण्डली में होता है, वह मृत्यु के पश्चात् सद्‌गति प्राप्त करता है।

टिप्पणी—हिन्दू धर्म शास्त्रों में मोक्ष प्राप्ति सर्वोच्च मानी गई है और उनका विश्वास है कि ऐसी गति तभी प्राप्त होती है जब मनुष्य पूर्ण ईश्वरभक्त, सदाचारी हो एवं उस पर ईश्वर-कृपा हो। इस प्रकार मोक्ष पद प्राप्त करने से जातक भगवान के चरणों में समर्पित हो जाता है और आवागमन के बंधनों से छूट जाता है। यह योग रखने वाला व्यक्ति जीवन में सत्य एवं न्याय पर आरूढ़ रहने वाला, सदाचारी तथा ईश्वरभक्त होता है।

(१०८)

महाभाग्य योग

परिभाषा—पुरुष की कुण्डली हो और दिन का जन्म हो तथा सूर्य, चंद्र और लग्न अयुग्म राशियों (१, ३, ५, ७, ९, ११) में हों। इसी प्रकार स्त्री की कुडण्ली हो और रात्रि का जन्म हो तथा सूर्य, चंद्र और लग्न राशियों (२, ४, ६, ८, १०, १२) पर हों तो महाभाग्य योग होता है।

फल—इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति उत्तम चरित्र एवं पवित्र विचारों का धनी होता है तथा जितने भी व्यक्ति उसके सम्पर्क में आते हैं, वे प्रसन्न रहते हैं। मित्रों का इसके जीवन में अभाव नहीं रहता। ऐसा व्यक्ति पूर्ण आयु प्राप्त करता है। वृद्धत्वकाल पूर्ण सुख से बीतता है तथा ऐसा व्यक्ति अपने जीवन में स्वय के कार्यों के फलस्वरूप प्रसिद्धि प्राप्त करता है। स्त्री जातक की कुण्डली में यह योग होने से वह उत्तम पुरुष के साथ ब्याही जाती है तथा जीवन में धन का अभाव नहीं रहता। ऐसी स्त्री आदर्श महिला कही जा सकती है।
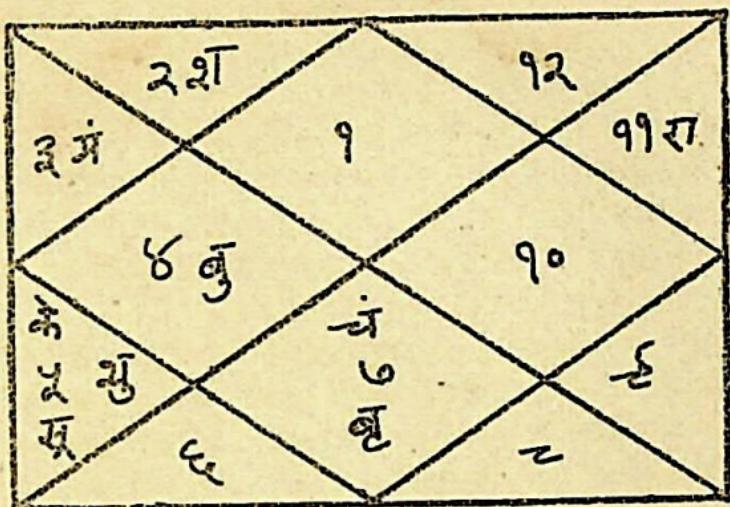
सिकन्दर

टिप्पणी—महाभाग्य योग रखने वाला जातक उत्तम कोटि का भाग्य अपने साथ लेकर आता है। लग्न, सूर्य और चंद्र तीनों मन, बुद्धि और शरीर के कारक हैं और जब ये तीनों तत्त्व वलिष्ठ हो जाते हैं तो निश्चित ही आदमी भाग्यशाली हो जाता है।

प्रस्तुत कुंडली वीर सिकन्दर की है जिसमें लग्न, सूर्य और चंद्र अयुग्म राशियों में स्थित हैं फलस्वरूप महाभाग्य योग बना।

सिकन्दर निश्चय ही भाग्यशाली था; जो साधारण कुल में जन्म लेकर विश्वविख्यात हुआ।

(१०९)
पुष्कल योग

परिभाषा—लग्नेश बलवान हो तथा राशि का स्वामी चन्द्रमा के साथ होकर केन्द्र में स्थित हो या मित्र के घर में स्थित हो तो पुष्कल योग बनता है।

फल—पुष्कल योग वाला व्यक्ति धनवान होता है तथा मित्रों से पूर्ण सहायता प्राप्त करता है। नौकरी में ऐसा व्यक्ति अत्यधिक उन्नति करता है, अपने से उच्च अधिकारियों का वह प्रिय पात्र होता है तथा मधुरभाषी एवं प्रसिद्ध जातक होता है।

टिप्पणी—इस योग में लग्नेप (लग्न भाव का स्वामी) वली हो अर्थात् २० से २५ अंशों के बीच हो, साथ ही चन्द्रमा भी बलवान हो, तभी यह योग पूर्ण फल देता है।

(११० से १२१)

मालिका योग

परिभाषा—किसी भी भाव से ७ भावों में ७ ग्रह (सू. चं. मं. बु. बृ. शु. श.) हों तो भाव संबंधी मालिका योग होता है।

फल—(१)यदि लग्न से लगातार सात भावों में सातों ग्रह हों तो लग्न मालिका योग' कहलाता है। इस योग में व्यक्ति शासकीय पद प्राप्त करता है अथवा सेना में कमाण्डर का पद सुशोभित करता है। वाहन का पूर्ण सुख उसे प्राप्त होता है।

(२) धन भाव से लगातार सात भावों में सातों ग्रह रहने से 'धन-मालिका योग बनता है। ऐसा जातक सच्चा पितृभक्त होता है तथा उसे जीवन में द्रव्य की चिन्ता नहीं रहती। जातक का शरीर स्वस्थ, सुन्दर एवं मनोहर होता है तथा अपने कार्यों से प्रसिद्धि प्राप्त करता है।

(३) तसीरे भाव से लगातार सातों ग्रह रहने से 'विक्रम मालिका योग' कहलाता है। यह योग रखने वाला व्यक्ती धनी एवं पूर्ण पराक्रमी होता है, परन्तु ऐसा जातक रोगी भी रहता है तथा दवाइयों में धन व्यय होता रहता है।

(४) चतुर्थ भाव से ऐसा योग होने पर 'सुख मालिका योग' कहलाता है। ऐसा व्यक्ति दयालु, दानी परोपकारी होता है, साथ ही वह विदेश भ्रमण भी करता है तथा अपने कार्यों से ख्याति लाभ करता है।

(५) पंचम भाव से ऐसा योग होने पर 'पुत्र मालिका योग' कहलाता है। पुत्र मालिका योग में उत्पन्न जातक वेद-शास्त्रों में पूर्ण विश्वास रखने वाला, यज्ञ करने वाला तथा कीर्तिवान होता है।

(६) छठे भाव से मालिका योग बनने पर 'शत्रु मालिका योग' कहलाता है। इस योग में उत्पन्न जातक का भविष्य अनिश्चित रहता है। कभी तो उसके पास बहुत अधिक द्रव्य आ जाता है और धनवान कहलाने लग जाता है, परन्तु कभी दरिद्रावस्था भी आ जाती है और द्रव्य के पीछे परेशान रहता है।

(७) सप्तम स्थान से यह योग होने पर 'कलत्र मालिका योग' कहलाता है। इस योग में उत्पन्न व्यक्ति दुष्चरित्र, कई स्त्रियों के साथ रमण करने वाला तथा ऐश्वर्य-सम्पन्न होता है।

(८) अष्टम भाव से मालिका योग होने पर 'रन्ध्र मालिका योग'

कहलाता है। जो व्यक्ति इस योग में जन्म लेता है, वह पूर्ण आयु प्राप्त करता है, परन्तु जीवन में सर्वदा धन का अभाव ही रहता है। मनुष्यों में उसकी सफल व्यक्ति के रूप में गणना रहती है, परन्तु पारिवारिक मतभेद बने रहते हैं।

(९) नवम भाव से प्रारंभ होकर यह योग होने पर 'भाग्य मालिका योग' कहलाता है। ऐसा व्यक्ति सच्चरित्र एवं सद्गुणी होता है, तथा प्रत्येक कार्य में दूसरों की सहायता करने को तत्पर रहता है।

(१०) दशम भाव से प्रारंभ होने पर 'कर्म मालिका योग' कहलाता है। जो व्यक्ति कर्म मालिका योग में जन्म लेता है, वह ईश्वर-भीरु, धर्मादिक कार्य करने वाला एवं सज्जन व्यक्ति होता है तथा सर्वत्र उसका आदर होता है।

(११) एकादश भाव से प्रारंभ होने पर 'लाभ मालिका योग' कहलाता है। लाभ मालिका योग में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति चतुर होता है, तथा कठिन से कठिन संघर्षों में भी वह नहीं घबराता। लोगों से काम निकालने की उसे युक्ति आती है, धन की चिन्ता नहीं रहती तथा स्वस्थ एवं सुन्दर शरीर होने के कारण स्त्री वर्ग में प्रशंसा प्राप्त करता है।

(१२) द्वादश भाव से क्रमशः सातों भावों में सात ग्रह रहने से 'व्यय मालिका योग' कहलाता है। ऐसा व्यक्ति ईमानदार होता है तथा निष्पक्ष न्याय करने के कारण पूजा जाता है। सब जगह उसकी प्रसिद्धि फैलती है तथा जीवन में पूर्ण सुख भोगता है।

टिप्पणी—उपर्युक्त कुल १२ प्रकार के १२ मालिका योग होते हैं, यथा लग्न से प्रारंभ होने पर 'लग्नमालिका' पंचम स्थान से प्रारंभ होने पर 'पुत्र मालिका' और इसी प्रकार अन्य भावों से प्रारंभ होने के कारण ही उस भाव से संबंधित उस मालिका का नाम होता है। परन्तु इस योग में इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि राहु और केतु के अतिरिक्त शेष सभी सातों ग्रह एक-एक कर के सातों भावों में स्थित हों तथा किसी भी भाव में न तो दो ग्रह एक साथ बैठे हों और न कोई भाव रिक्त ही रहा हो।

(१२२-१२३)

चामर योग

परिभाषा—(१) लग्न का स्वामी अपनी उच्च राशि का होकर

केन्द्र में स्थित हो तथा गुरु उसे देखता हो तो चामर योग कहलाता है।

(२) यदि लग्न में या सप्तम स्थान में या नवम अथवा दशम स्थान में दो शुभ ग्रह हों तो चामर योग कहलाता है।

फल—चामर योग में उत्पन्न मनुष्य उच्च, प्रतिष्ठित एवं राज्य-मान्य व्यक्तियों के द्वारा पूजा जाता है, तथा स्वयं वह विद्वान होता है। वेद-शास्त्रों का ज्ञाता तथा पूर्ण आयु प्राप्त करता है। हिम्मत विक्रम और अपने कार्यों के द्वारा वह प्रसिद्धि प्राप्त करता है।
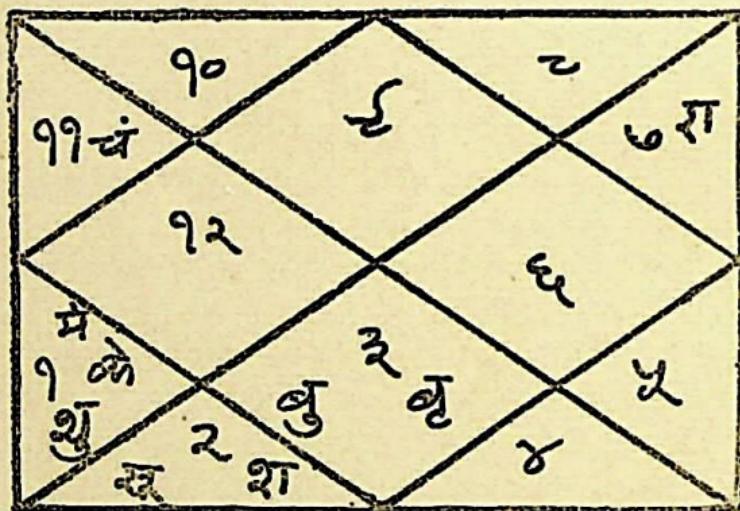
श्री विनायक दामोदर सावरकर

टिप्पणी—पूर्ण आयु से तात्पर्य ७० से १०० साल के बीच की उम्र भोगता है तथा जीवन में सफलता प्राप्त करता है।

संबंधित कुण्डली प्रसिद्ध महापुरुष वीर सावरकर की है। इनकी कुण्डली में नं० २ का चामर योग घटित है सप्तम स्थान में दो शुभ ग्रह बृहस्पति और बुध बैठे हैं तथा दोनों ही बलवान हैं। इनमें से भी बुध स्वक्षेत्री होकर बैठा है तथा बृहस्पति उच्चाभिलाषी ग्रह है फलस्वरूप दोनों ग्रह बलवान होकर सप्तम भाव में बैठने से कारक ग्रह हैं। बुध गुरु के संयोग से ही सावरकर ने प्रसिद्धि प्राप्त की है।

(१२४)

वीर योग

परिभाषा—तीसरे भाव में कोई भी दो पाप ग्रह और एक सौम्य ग्रह हो तथा उसे चन्द्र देखता हो तो वीर योग होता है।

फल—इस योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति पुलिस या मिलिटरी क्षेत्र में उच्च पद प्राप्त करता है तथा प्रसिद्ध होता है।

टिप्पणी—तीसरा भाव वीरतादि कार्यों से ही संबंध रखता है। उसमें दो पापग्रह होने से, जातक बलिष्ठ, पराक्रमी और वीर भावनाओं में पूरित व्यक्ति होगा, साथ ही एक सौम्य ग्रह होने से वह उसकी ताकत का दुष्प्रयोग नहीं होने देगा, साथ ही चन्द्रमा की दृष्टि उसे सही रास्ते पर ले जाने के साथ-साथ हृदय से भी मजबूत बना देगी।

(१२५-१२६)
शंख योग

परिभाषा—(१) पाँचवें भाव का स्वामी और छठे भाव का स्वामी परस्पर केन्द्र में स्थित हों तथा लग्नेश बलवान हो तो शंख-योग होता है।

(२) लग्नेश और दशमेश चर राशि में हों एवं भाग्येश बली हो तो शंख योग होता है।

फल—शंखयोग में उत्पन्न जातक आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करने वाला होता है, दूसरों के प्रति उसका मधुर और सौम्य व्यवहार होता है तथा पारिवारिक दृष्टि से वह सफल व्यक्ति होता है। ऐसा जातक विज्ञान, धर्म, शास्त्रादि में पूर्ण रुचि रखता है तथा पूर्ण आयु प्राप्त करता है। प्रस्तुत कुण्डली आदरणीय श्री लोकमान्य तिलक

लोकमान्य तिलक
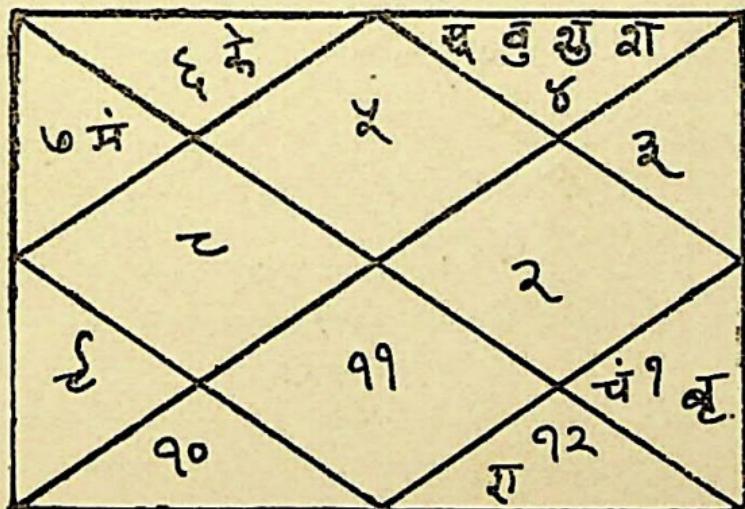
की है, जिसमें लग्न का स्वामी सूर्य तथा दशमेश शुक्र दोनों चर राशि (कर्क राशि) में स्थित है तथा भाग्येश भौम बली होकर तृतीय भाव में बैठा है। स्पष्टत: इसमें शंख योग है। शंखयोग रखने वाला व्यक्ति अपने कार्यों से देश-विदेश में यश तथा ख्याति प्राप्त करता है तथा सर्वत्र पूजा जाता है।

(१२७)
लक्ष्मी योग

परिभाषा—यदि भाग्येश (नवम भाव का स्वामी) अपनी उच्च राशि में या मूल त्रिकोण अथवा स्वराशि का होकर केन्द्र में स्थित हो तथा लग्नेश बलवान हो तो लक्ष्मी योग होता है।

फल—लक्ष्मी योग रखने वाला व्यक्ति पूर्ण सम्पन्न एवं धनवान होता है। अपने बाहुबल से वह पृथ्वी को जीतता है तथा युद्ध में ख्याति प्राप्त करता है। ऐसे व्यक्ति में भाषण देने की अद्भुत शक्ति होती है तथा लोगों को अपने पक्ष में करने की कला में माहिर होता है। गुणी, चतुर, योग्य, संकटों में भी स्थिरचित्त रहने वाला तथा ख्याति प्राप्त व्यक्ति होता है।
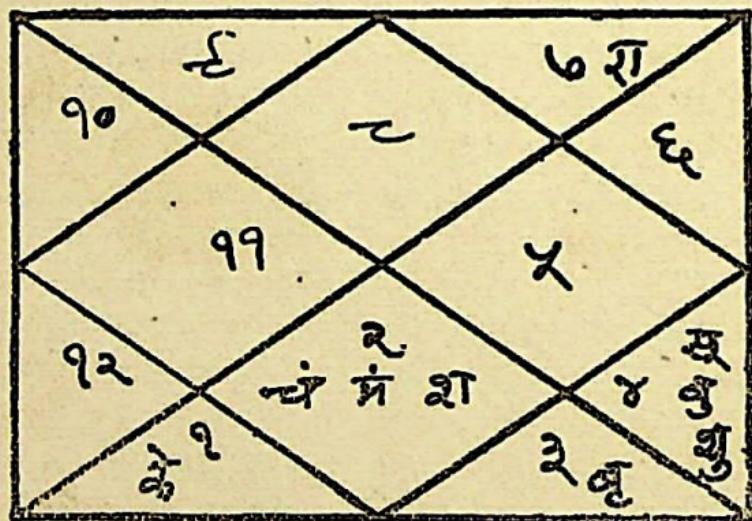
मुसोलिनी

टिप्पणी—लक्ष्मी योग में नवम भाव के स्वामी को अधिक महत्त्व दिया जाता है, क्योंकि वह भाग्य की वृद्धि में तो सहायक होता ही है साथ ही केन्द्र में पड़कर ख्याति भी प्रदान कर देता है। इसके अति-

रिक्त नवम भाव की तृतीय स्थान पर दृष्टि रहती है, फलस्वरूप बाहुबल में भी जातक ताकतवर और संघर्षों में अविचलित होने वाला हो जाता है। संबंधित कुण्डली मुसोलिनी की है, जिसमें लक्ष्मी योग स्थित है नवम भाव का स्वामी चन्द्र केन्द्र स्थान सप्तम भाव में स्थित है, साथ ही लग्नेश से भी सम्बन्ध स्थापित किया है, साथ ही नवमेश सप्तम स्थान में उच्च का होकर पड़ा है। लग्नेश मंगल भी पूर्ण बलशाली है, अतः यहाँ प्रबल लक्ष्मी योग सिद्ध हुआ। कुछ विद्वानों ने इसके अतिरिक्त भी निम्न योगों को लक्ष्मी योग के नाम से संबोधित किया है।

(१) नवम भाव का स्वामी लग्न में हो और लग्नेश नवम भाव में हो। (२) नवमेश केन्द्र या त्रिकोण में हो तथा लग्न स्थान पर दृष्टि रखता हो। (३) लग्नेश और शुक्र अपनी-अपनी राशि में हों या उच्च राशि पर स्थित हों।

स्पष्टतः ये तीनों भी लक्ष्मी योग कहे जा सकते हैं पर ये साधारण कोटि के ही योग हैं। शुक्र, नवमेश और लग्नेश ही धनकारक ग्रह माने जाते हैं।

(१२८)
महालक्ष्मी योग

परिभाषा—लग्नेश त्रिकोण में हो, द्वितीयेश एकादश भाव में हो तथा द्वितीय स्थान पर उसके स्वामी की दृष्टि हो या शुभग्रहों की दृष्टि हो, तो महालक्ष्मी योग होता है।

फल—महालक्ष्मी योग रखने वाला जातक अटूट सम्पत्ति का स्वामी होता है तथा द्रव्य की कभी भी कमी नहीं होती।

टिप्पणी—दूसरा घर धन स्थान का है तथा ग्यारहवां भाव आय का है, इन दोनों का परस्पर सम्बन्ध होने तथा लग्नेश के बलवान होने से अटूट संपत्ति रहती है। साथ ही एकादश भाव में रहकर ग्रह दूसरे भाव को, जो कि उसका स्वगृह या उच्च ग्रह हो, देख ले तो निश्चय ही महालक्ष्मी योग बन जाता है। पाठकों की जानकारी हेतु मैं निजाम हैदराबाद की जन्म-कुण्डली दे रहा हूं जो भारत के ही नहीं संभवतः विश्व के सर्वाधिक धनी व्यक्तियों में से एक हैं। निजाम साहब की कुण्डली में पूर्ण महालक्ष्मी योग पड़ा है। लग्न का स्वामी शुक्र त्रिकोण (पंचम) स्थान में पड़ा है तथा दूसरे घर का स्वामी भौम एकादश भाव में स्थित है, साथ ही एकादश भाव में बैठकर वह दूसर भाव को
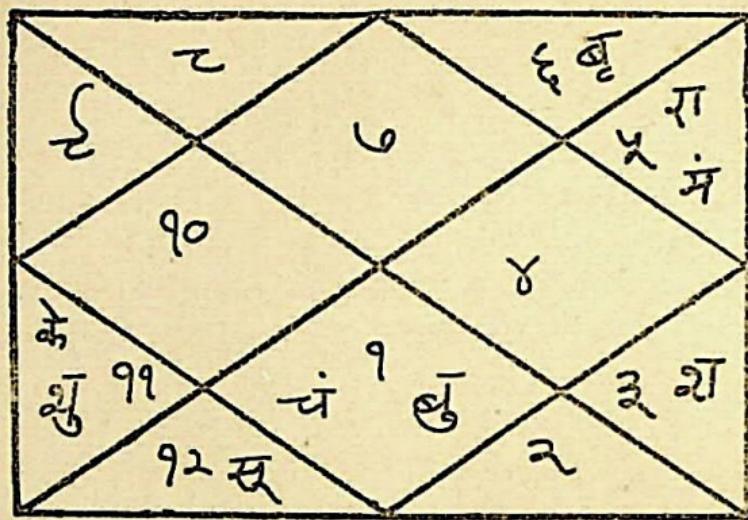
निज़ाम हैदराबाद

भी पूर्ण दृष्टि से देख रहा है, जो कि उसकी स्वयं की राशि है। इस प्रकार कुण्डली में महालक्ष्मी योग होने से संबंधित जातक पूर्ण धनी एवं देश-विदेश में ख्याति प्राप्त व्यक्ति होता है।

(१२६)

भारती योग

परिभाषा—नवांश का स्वामी दूसरे भाव के, पाँचवें भाव के या एकादश भाव के स्वामी से देखा जाता हो तथा नवमेश के साथ बैठा हो तो भारती योग होता है।

फल—भारती योग में उत्पन्न व्यक्ति कमल के समान नेत्र वाला, गुणवान, विद्यावान, संगीतादि कलाओं में निपूण तथा प्रसिद्धि प्राप्त होता है।

टिप्पणी—भारती योग नवमांश कुण्डली से देखा जाता है। नवमांश कुण्डली से तात्पर्य है जन्म-कुण्डली का नवाँ हिस्सा तथा उसी गणित से स्थापित ग्रह एवं भाव जो कि नवमांश कुण्डली कही जाती है।

(१३०)

सरस्वती योग

परिभाषा—गुरु चन्द्रमा के घर में तथा चन्द्रमा गुरु के घर में हो एवं चन्द्रमा पर गुरु की दृष्टि हो तो सरस्वती योग माना जाता है।

फल—सरस्वती योग रखने वाला व्यक्ति अत्यन्त प्रसिद्ध होता है तथा सरस्वती का वरद पुत्र माना जाता है। काव्य संगीतादि क्षेत्र में वह उच्च कोटि की रुचि रखने वाला होता है। अपनी कला से वह देश और विदेश सर्वत्र प्रसिद्धि प्राप्त करता है। इस प्रकार के व्यक्ति पर लक्ष्मी की पूर्ण कृपा होती है। वह मन से भावुक होता है तथा दूसरों की सहायता करने को सदैव तत्पर रहता है।

टिप्पणी—सरस्वती (विद्या) के कारक ग्रह चन्द्रमा और बृहस्पति ही हैं। चंद्र मन का एवं कल्पना तथा विचारों का स्वामी होता है तथा गुरु बुद्धि का प्रतिनिधित्व करता है। एक हृदय पक्ष का प्रतिनिधित्व करता है तो दूसरा बुद्धि पक्ष का। इस प्रकार हृदय एवं बुद्धि के सुखद सम्मिश्रण से जातक उच्चकोटि का कल्पनाशील कवि अथवा चित्रकार हो जाता है तथा अपनी कला के द्वारा देश-विदेश में ख्याति अर्जित करता है। कवीन्द्र रवीन्द्र की कुण्डली नीचे दी जा रही है जिसमें पूर्ण सरस्वती का योग बना है। महाकवि की कुण्डली का लग्न मीन है जिसका स्वामी गुरु, चंद्र की राशि कर्क पर स्थित है तथा चन्दमा, बृहस्पति की राशि मीन पर स्थित है। इसके साथ ही साथ पंचम भाव में गुरु बैठ कर पूर्ण नवम दृष्टि से चन्द्रमा को देख रहा है अतः सरस्वती योग बना। सरस्वती योग के ही कारण कवीन्द्र रवीन्द्र विश्वविख्यात बने तथा विश्व का सर्वोच्च पुरस्कार 'नोबुल
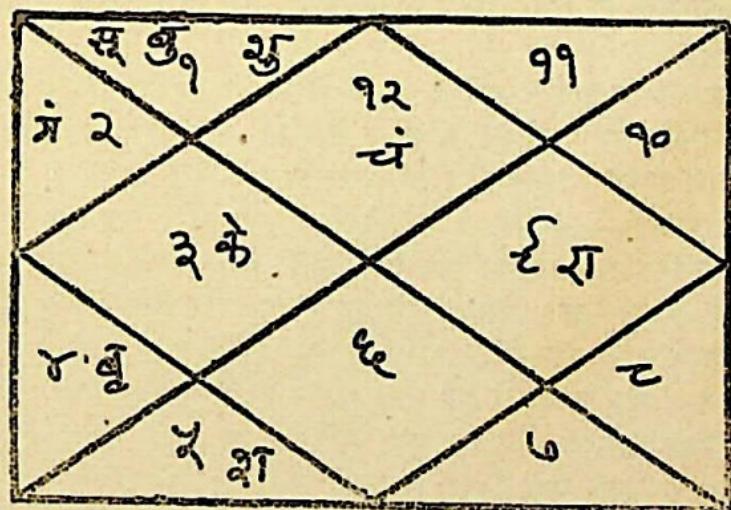
श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर

प्राइज' प्राप्तकर देश-विदेश में ख्याति अर्जित की तथा भारत का मस्तक गौरवान्वित किया।

(१३१)

गौरी योग

परिभाषा—नवांश पति दशम भाव में दशमेश के साथ हों तो गौरी योग होता है।

फल—ऐसा व्यक्ति सामाजिक होता है तथा परिवार के सदस्यों से प्रगाढ़ स्नेह रखता है। भूमिपति होता है और कृषि कार्यों में रुचि रखता है। धार्मिक भावनाओं को मानने वाला तथा देवभीरु होता है। इसके पुत्र भी उच्च कोटि की रुचि रखने वाले होते हैं।

टिप्पणी—गौरी योग का प्रभाव ३६ से ४३ वें वर्ष के बीच घटित होता है।

(१३२-१३४)

राज योग

परिभाषा—(१) कन्या, मीन, मिथुन, वृष, सिंह, धनु और कुंभ राशि में सब ग्रह स्थित हों तो राज योग होता है।

तुला, मेष, वृष और मीन राशि में सभी ग्रह जिसकी जन्म-कुण्डली में हों तो उस कुण्डली में राज योग होता है।

(३) जिसके जन्म समय में वृष, धनु और मीन रशियों में सभी ग्रह विद्यमान हों तथा केन्द्र स्थान में हों तो प्रबल राज योग सिद्ध होता है।

फल—साधारण कुल में जन्म लेकर भी, यदि किसी व्यक्ति की कुण्डली में उपर्युक्त राज योगों में से कोई एक भी राज योग रहता हैं तो वह शासक या 'गजेटेड आफीसर' बनता है।

टिप्पणी—उपर्युक्त राज योगों में राशियों को प्रधान मानकर ग्रहों की स्थिति स्पष्ट की है। 'सभी ग्रहों' से तात्पर्य केवल सात ग्रहों से ही है—सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि। राहु और केतु की गणना आवश्यक नहीं। राज योग सैकड़ों हैं और आर्ष ऋषियों ने विभिन्न संस्कृत ग्रन्थों में कई राज योगों की गणना की है, परन्तु मैंने उनमें से वे ही राज योग इस पुस्तक में देने का प्रयत्न किया है जो मेरे व्यवहार में आ चुके हैं या जिनकी सत्यासत्यता मैंने परख ली है। ऊपर जो तीन राज योग दिये हैं, उनमें से प्रथम राज योग में ७ राशियों की उपस्थिति में सातों ग्रह हों। यह आवश्यक नहीं कि

प्रत्येक भाव में एक-एक ग्रह हो। इन सातों राशियों में कुछ राशियाँ खाली भी रह सकती हैं। तात्पर्य यह है कि इन राशियों के अतिरिक्त राशियों में कोई भी ग्रह अवस्थित न हो। इसी प्रकार दूसरे और तीसरे राज योग में भी समझना चाहिए।

(१३५-१३७)

नृप योग

परिभाषा—(१) तीन या इससे अधिक ग्रह कुण्डली से स्वराशि के हों या उच्च राशि के हों तो नृप योग होता है।

(२) दो, तीन या चार ग्रह दिग्बल में हों तो नृप योग होता है।

(३) तीन या इससे अधिक ग्रह दशम भाव में हों तो नृप योग होता है।

फल—नृप योग में उत्पन्न व्यक्ति उच्च शासकीय अधिकारी होता है तथा जीवन के समस्त भोगों को सुखपूर्वक भोगता है।
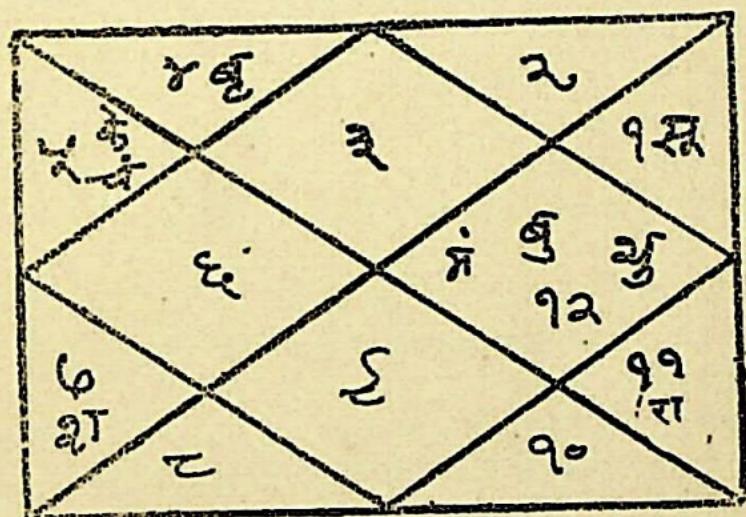
श्री मोरार जी देसाई (भूतपूर्व उप प्रधानमंत्री—भारत)

टिप्पणी—उपर्युक्त तीनों योग परीक्षित हैं और किसी भी जातक की कुण्डली में उपर्युक्त योगों में से कोई एक योग हो तो वह निस्संदेह मंत्री पद प्राप्त करता है। नं० १ योग साधारण है जिसके विवेचन की आवश्यकता नहीं। यदि किसी की कुण्डली में कहीं पर भी बैठकर तीन ग्रह उच्च के हों या स्वराशिस्थ हों तो जातक की कुण्डली में नृप योग होता है और वह व्यक्ति उच्च शासकीय पद (सेक्रेटरी) या

मंत्री-पद प्राप्त करता है। स्पष्टता के लिए श्री मोरार जी देसाई की कुण्डली ली जा सकती है जिसमें तीन ग्रह उच्च के पड़कर नृप योग बना रहे हैं। गुरु कर्क राशि का, शनि तुला राशि का तथा सूर्य मेष राशि का, ये तीनों ही उच्च राशि स्थित ग्रह हैं जिससे नृप योग बनता है। नृप योग से उत्पन्न फल सबके सामने है। सूर्य, शनि और गुरु ही मोरारजी की कुण्डली के भाग्य विधायक ग्रह हैं।

नं २ का नृप योग भी विवेचन की आवश्यकता रखता है। दिग्बल ग्रह निम्न राशियों पर निम्न ग्रह स्थित होने से होते हैं। लग्न में बुध या गुरु होने से ये दोनों ग्रह दिग्बली कहलाते हैं। मंगल और सूर्य दशम भाव में पड़कर दिग्बली होते हैं। शनि सातवें भाव में होने से दिग्बली होता है। शुक्र और चन्द्रमा चौथे भाव में होने पर दिग्बली होते हैं।

नं० ३ नृप योग तो सरल है, जिसे समझने की विशेष आवश्यकता नहीं। कोई भी तीन ग्रह दशम भाव में होने पर नृपयोग हो जाता है। यदि तीनों ग्रह बलवान और अच्छे अंशों में (१० से २०) हों तो जातक निश्चय ही मंत्री पद प्राप्त करता है, परन्तु उन तीनों ग्रहों में से एक भी ग्रह यदि नीच का या क्षीण अंशों का अथवा निर्बल होगा तो वह व्यक्ति उच्च पद तो प्राप्त करेगा पर वह पद स्थायीनहीं रहेगा, अपितु उसे उस पद के सम्बन्ध में उतार-चढ़ाव देखने पड़ेंगे।

(१३८—१४२)

राज्य योग

१३८. जिसके जन्म-समय ३,४,५ भावों में सब ग्रह हों तो राज्य योग होता है।

१३९. जिस मनुष्य के जन्म-समय में ३ ग्रह ३,४,५ भावों में हों, २ ग्रह २ तथा ९वें भाव में हों तथा शेष दो ग्रह लग्न और सप्तम भाव हों तो राज्य योग होता है।

१४०. सभी शुभ ग्रह नवें और ग्यारहवें भाव में हों तथा सभी पापग्रह छठे और दसवें भाव में हों तो राज्य योग होता है।

१४१. सभी ग्रह चन्दमा की होरा में हों तो राज्य योग होता है।

१४२. जिसके जन्म समय में बलवान शुभ ग्रह लग्न, सप्तम और दशम भाव में हों तथा मंगल नवम भाव में एवं शनि एकादश भाव में हो तो प्रबल राज्य योग होता है।

फल—राज्य योग में उत्पन्न जातक सभी सुख-सुविधाओं से पूर्ण

जीवन व्यतीत करते हैं तथा उच्च कोटि का वाहन-सुख प्राप्त करते हैं। ऐसा व्यक्ति चतुर, संकटों में भी स्थिरचित्त रहने वाला तथा उच्च कोटि का प्रशासकीय अधिकारी अथवा मंत्री होता है।

टिप्पणी—तीसरा स्थान पराक्रम, बल और साहस का है। चौथा स्थान सुख एवं आनन्द भोग का है एवं पाँचवाँ भाव विद्या, गुण कीर्ति आदि से सम्बन्धित है। तीनों में ग्रह रहने से, इन तीनों भावों का परस्पर सम्बन्ध बन जाता है। फलस्वरूप जातक विद्यावान, गुणी, चतुर एवं बल साहस युक्त होकर पूर्ण सुखोपभोग करता है तथानृपवत् जीवन व्यतीत करता है।

नं० १३९ राज्य योग में यह आवश्यक है कि सभी ग्रह १,२, ३, ४, ५, ७, ९वें भावों में स्थित हों एवं इसके अतिरिक्त किसी भी अन्य भाव में कोई ग्रह न हो तो राज्य योग हो जाता है।

नं० १४० में शुभ ग्रहों से तात्पर्य है—चन्दमा, बुध, गुरु और शुक्र तथा पापग्रहों से तात्पर्य है सूर्य, भौम तथा शनि। राहु और केतु छाया ग्रह कहलाते हैं।

कुण्डली में चन्दमा, बुध, गुरु और शुक्र ९वें या ११वें भाव में हों तथा सूर्य, मंगल और शनि छठे तथा दसवें भाव में हों तो पूर्ण राज्य योग हो जाता है।

नं० १४१ जन्मपत्री में कुण्डली, चन्द कुण्डली, चलित चक्र और भाव स्पष्ट करने के पश्चात होरा चक्र स्पष्ट होता है। होरा चक्र में सूर्य तथा चन्द्रमा दो ग्रहों की होरा होती है। यदि सभी ग्रह केवल चन्द्र की होरा में ही हों तो राज्य योग होता है।

नं० १४२ राज्य योग की परिभाषा स्पष्ट है, जिसके विवेचन की आवश्यकता नहीं।

ज्योतिष के विद्यार्थियों को यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि केन्द्र एवं त्रिकोण स्थानों में शुभ ग्रह तथा ६, ८, १२वें भावों में पापग्रह कारक होते हैं तो जातक की भाग्य-वृद्धि में सहायक होते हैं।

(१४३—१४५)

महेन्द्र योग

परिभाषा—१४३. चन्द्रमा लग्न में हो, गुरु चौथे स्थान में, शुक्र १०वें स्थान में तथा शनि स्वराशि का होकर कुण्डली में स्थित हो तो महेन्द्र योग होता है।

१४४. राशि का स्वामी सौम्य ग्रह हो तथा उच्च राशि में स्थित

होकर लग्न के केन्द्र में हो तो महेन्द्र योग बनता है।

१४५. जिसके जन्म-समय में लग्न या चन्द्रमा वर्गोत्तमांश में हों उसे चन्द्रमा को छोड़ कर चतुर्थ, दशम, सप्तम स्थान में प्राप्त सभी ग्रह देखते हों तो महेन्द्र योग होता है।

फल—महेन्द्र योग जिस कुण्डली में होता है, वह राजा या राजा से तुल्य होता है तथा जीवन में उसकी समस्त इच्छाएँ पूर्ण हो जाती हैं।

टिप्पणी—नं० १४३ के महेन्द्र योग की परिभाषा स्पष्ट है, जिसके विवेचन की आवश्यकता नहीं। इसमें चंद्र, गुरु और शुक्र के तो स्थान निर्धारित कर दिए हैं, पर शनि के लिए यह छूट है कि वह कुण्डली में किसी भी स्थान पर हो, पर इतना आवश्यक है कि शनि मकर या कुंभ राशि का ही हो।

नं० ११४ के योग में यह ध्यान रखने की बात है कि कुण्डली में जिस राशि पर चन्द्रमा बैठा होता है, वही राशि उस जातक की होती है। राशि का स्वामी सौम्य ग्रह चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र ही हो। यह तभी सम्भव है कि जब चन्द्रमा कर्क, मिथुन, कन्या, धनु, मीन, वृष और तुला राशि पर हो। साथ ही चन्द्रमा जिस राशि पर बैठा हो, उसका स्वामी अपनी उच्च राशि पर स्थित होकर केन्द्र स्थान (१, ४, ७, १०) में स्थित हो तभी यह योग लागू होता है।

नं० १४५ में वर्गोत्तमांश ग्रह ध्यान देने योग्य है। कोई भी ग्रह वर्गोत्तमांश तब होता है जब वह जन्म-कुण्डली में भी अपनी राशि पर हो तथा नवमांश कुण्डली में भी वह अपनी ही राशि का होकर स्थित हो। दोनों ही कुण्डलियों में ऐसा होने पर वह ग्रह वर्गोत्तमांश ग्रह माना जायगा। महेन्द्र योग वाला जातक जीवन में अत्यन्त उच्च पद पर पहुँचता है, इसमें सन्देह नहीं।

(१४६—१४८)
गजपति योग

परिभाषा—१४६. लग्न को छोड़कर और किसी भी केन्द्र स्थान (४, ६, १०) में चन्द्रमा गुरु के साथ बैठा हो या अकेला ही पूर्ण बलवान होकर स्थित हो तो गजपति योग होता है।

१४७. गुरु लग्न में हो, बुध केन्द्र स्थान में हो, जो नवमेश या एकादशेश से युक्त हो या दृष्ट हो तो गजपति योग बनता है।

१४८. मेष राशि का शुक्र लग्न में बैठा हो और उसे सभी ग्रह देखते हों तो गजपति योग होता है।

फल—जिस जातक की कुण्डली में गजपति योग होता है, वह शासक या शासक तुल्य होता है तथा पराक्रमी, बलवान, गुणवान, और प्रभावशाली व्यक्तित्व लिये हुए होता है।

टिप्पणी—गजपति योग भी राज योग की तरह है तथा गजपति योग होने से भी जातक प्रशासकीय अधिकारी बनता है; पर ज्योतिष के विद्यार्थियों, प्रेमियों एवं पाठकों को चाहिए कि वे इन योगों का अध्ययन करते समय सावधानी से काम लें। राज योग या इस प्रकार के ये अन्य योग इस तथ्य की ओर इंगित करते हैं कि ऐसा योग रखने वाला व्यक्ति 'राजा' होता है, परन्तु आज के इस प्रजातांत्रिक युग में 'राजा' शब्द का अर्थ परिवर्तित हो चुका है। आज के युग में 'राजा' शब्द का अर्थ वही नहीं है, जो प्राचीन काल में था। इस युग में इस प्रकार का योग रखने वाला ऐश्वर्य-सम्पन्न, धनी एवं सुखी होता है। साथ ही इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि राजयोग से सम्बन्धित ग्रह किस ग्रह से सम्बन्ध स्थापित करते हैं। उदाहरणार्थ, राज योग के ग्रह सूर्य से सम्बन्ध स्थापित करते हैं तो वह व्यक्ति राजनीति के क्षेत्र में सफल होता है एवं मंत्री-पद प्राप्त करने में समर्थ होता है। इसी प्रकार चन्द्रमा से सम्पर्क होने पर वह जातक केन्द्रीय मंत्रिमंडल में सेक्रेटरी या इसी प्रकार का कोई अन्य पद प्राप्त करता है। मगल से सम्बन्ध होने पर पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट या कमाण्डर इन चीफ हो जाता है, आदि-आदि। अत: कुण्डली का अध्ययन सावधानीपूर्वक करना
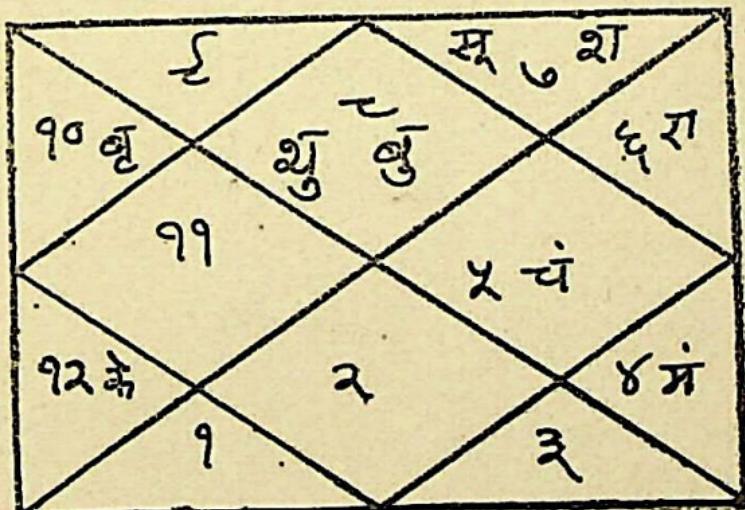
विश्वविख्यात हस्तरेखा-विशेषज्ञ कीरो

आवश्यक है और सब कुछ विचार करने के पश्चात् ही फलाफल निर्देश करना ठीक होता है। ऊपर जो गजपति योग निर्दिष्ट किये हैं, उनमें नं० १४६ में स्पष्ट है कि यदि गुरु और चन्द्र लग्न स्थान को छोड़ ४, ७, १०वें भाव में हों या अकेला चन्द्र ही ४, ७, १०व भाव में बलवान होकर स्थित हो तो गजपति योग होता है। सम्बन्धित कुण्डली कीरो की है, जिनमें बलवान चन्द्र दशम भाव में स्थित है। क्योंकि चतुर्थ भाव से सप्तम भाव बलवान है तथा सप्तम भाव से दशम भाव बलवान है, अतः स्वभावतः चन्द्र दशम स्थान में पड़कर बलवान हो गया है।

नं० १४७ का गजपति योग भी अपने आप में स्पष्ट है। इस योग में यह आवश्यक है कि लग्न भाव में वृहस्पति स्थित हो तथा बुध भी केन्द्र स्थान में ही हो तथा उसके साथ नवम भाव का स्वामी या एकादश भाव का स्वामी अथवा दोनों ही बैठे हों तो पूर्ण गजपति योग बनता है।

गजपति योग नं० १४८ जरा कठिन है, जो साधारणतः नहीं पाया जाता, क्योंकि यह योग केवल मेष लग्न वाली कुण्डली में ही घटित हो सकता है तथा लग्न में भी शुक्र की उपस्थिति अनिवार्य मानी गई है। कुछ विद्वानों के अनुसार अश्विनी नक्षत्र का शुक्र हो तो प्रबल गजपति योग बनता है। शुक्र के अतिरिक्त यह भी आवश्यक है कि चन्द्र और बुध सप्तम भाव में ही हों, तभी उनकी पूर्ण दृष्टि लग्न स्थान पर पड़ सकती है। मंगल भी ६, ७ या १०वें भाव में हो, गुरु ५, ७ या ९वें भाव में हो तथा शनि ४, ७ और ११वें भाव में होना जरूरी है, तभी इन ग्रहों की दृष्टि भी शुक्र पर पड़ सकती है। इस प्रकार नं० १४८ का बना गजपति योग प्रबल होता है तथा जातक को पूर्ण सुख एवं आनन्द प्रदान करता हुआ उच्चपदाधिकारी बना देता है।

(१४९—१५२)
मन्महेन्द्र योग

परिभाषा—(१४९) जिसजातक की जन्म-कुण्डली में शुक्र अपनी शत्रु राशि (४, ५) नीच राशि (६) के अतिरिक्त किसी भी अन्य राशि में स्थित होकर द्वितीय स्थान में हो और लग्नेश बली हो तो मन्महेन्द्र योग होता है।

(१५०) जातक का जन्म रात्रि का हो तथा कुण्डली में चन्द्रमा

अपने अधिमित्र का या अपने नवांश में प्राप्त हो एवं उस चन्द्रमा को शुक्र देखता हो तथा अन्य किसी भी ग्रह की दृष्टि न हो तो मन्महेन्द्र योग होता है।

(१५१) मीन लग्न हो तथा मीन के नवांश का होकर शुक्र लग्न में स्थित हो तो मन्महेन्द्र योग होता है।

(१५२) लग्नेश अपनी उच्च राशि में स्थित हो तथा उसे चन्द्रमा देखता हो तो भी मन्महेन्द्र योग होता है।

फल—मन्महेन्द्र योग में उत्पन्न व्यक्ति बलशाली, गुणवान और राज्यपूज्य होता है तथा उच्च शासकीय पद प्राप्त कर आनन्दपूर्वक जीवन व्यतीत करता है।

टिप्पणी—नं० १४६ के मन्महेन्द्र योग में शुक्र को ही मुख्य माना गया है। यों भी शुक्र वाहन, सुख, ऐश्वर्य, भोग विलास और मनोविनोद सुख का हेतु है और किसी भी जातक की कुण्डली में यह स्वस्थ होकर पड़ा होता है तो यह ग्रह अपने प्रभाव से उपर्युक्त तथ्यों की वृद्धि करता है। मन्महेन्द्र योग के लिए आवश्यक है कि शुक्र शत्रु राशि का न हो अर्थात् कर्क और सिंह राशि में स्थित न हो और न ही कन्या राशि का हो। इन तीन राशियों को छोड़ वह किसी भी राशि में स्थित होकर दूसरे भाव में बैठा हो और लग्नेश बली हो तो निश्चय ही मन्महेन्द्र योग होता है। जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि पाप ग्रह त्रिशडाय(३, ६, ११) स्थानों में बली होते हैं। आर्ष ऋषियों के मतानुसार—

त्रिषट एकादशे राहु, त्रिषट एकादशे शनि।
त्रिषट एकादशे भौम सर्वारिष्ट प्रशान्तये।

अर्थात् ३, ६, ११वें स्थान में राहु, शनि या भौम इनमें से कोई भी एक ग्रह हो तो यह ग्रह बलवान होकर कुण्डली से उत्पन्न अन्य बाधाओं को शान्त कर देता है।

नं० १५० के योग में यह आवश्यक है कि कुण्डली वाले जातक का जन्म रात्रि में हुआ हो तथा चन्द्र अपने अधिमित्र के घर में या स्वयं के नवांश राशि पर स्थित हो तथा इस प्रकार चन्द्र को शुक्र के अतिरिक्त कोई भी ग्रह न देखता हो (परन्तु शुक्र का देखा जाना आवश्यक है) तो मन्महेन्द्र योग सिद्ध होता है।

नं० १५१ के महेन्द्र योग में मीन लग्न होना अवश्यक है, तथा शुक्र भी मीन राशि के नवांश का ही हो तथा कुण्डली में लग्न भाव में

बैठा हो तो यह योग बन जाता है।

नं० १५२ का योग स्पष्ट है, इस योग में विशेष बंधन नहीं है। इसमें आवश्यकता इस बात की है कि जो भी लग्नेश (लग्न भाव का स्वामी) हो, वह कुण्डली में कहीं पर भी अपनी उच्च राशि में स्थित हो, यथा सूर्य हो तो मेष राशि पर हो, भौम हो तो मकर राशि पर हो, गुरु हो तो कर्क राशि पर हो अस्तु, तथा लग्नेश को पूर्ण सातवीं दृष्टि से चन्द्रमा देख रहा हो तो निस्सन्देह मन्महेन्द्र योग सिद्ध होता है।

(१५३—१५६)
सुरपति योग

परिभाषा—१५३. शनि अपनी उच्च राशि, स्व राशि या मूल कोण भाव में हो तथा केन्द्र स्थान या त्रिकोण में हो, साथ ही शनि के साथ दशमेश बैठा हो या दशमेश की उस पर दृष्टि हो तो सुरपति योग होता है।

१५४. राहु पंचम भाव में तथा चन्द्र-मंगल दूसरे या तीसरे भाव में हो तो सुरपति योग होता है।

१५५. वृहस्पति पंचम भाव में हो तथा चन्द्रमा से केन्द्र स्थान हो, लग्न भाव स्थिर स्वभाव राशि का हो तथा लग्नेश दशम भाव में हो, तो सुरपति योग होता है।

१५६. चन्द्रमा उच्च राशि का हो या मित्र राशि में बैठा हो, तथा वह नवम भाव में ही हो। लग्न से दशम भाव में शनि और दूसरे भाव में भौम हो तो सुरपति योग होता है।

फल—सुरपति योग रखने वाला जातक राजा या राजा के तुल्य होता है।

टिप्पणी—सुरपति योग नं० १५३ के विवेचन की आवश्यकता है। इस योग के लिए यह आवश्यक है कि शनि तुला, मकर या कुंभ राशि का हो तथा लग्न से ५वें या ९वें भाव मे बैठा हो। साथ ही दशम भाव का स्वामी या तो शनि के साथ हो या शनि को पूर्ण दृष्टि से देख रहा हो, तो सुरपति योग होता है। प्रस्तुत कुण्डली में शनि स्व राशि (कुंभ) का होकर त्रि त्रिकोण भाव में स्थित है तथा दशम भाव का स्वामी वृहस्पति पंचम भाव में बैठकर पाँचवी पूर्ण दृष्टि से शनि को देख रहा है, अतः यहाँ सुरपति योग सिद्ध हुआ।

नं० १५४ के योग को स्पष्ट करने की आवश्यकता नहीं। कुण्डली में लग्न से पंचम भाव में राहु हो तथा चन्द्र मंगल एक साथ दूसरे या
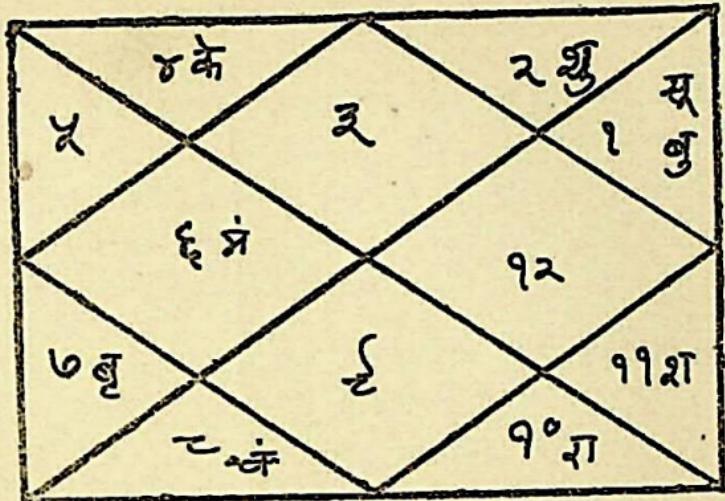
श्री नारायणदत्त श्रीमाली (प्रस्तुत पुस्तक के लेखक)

तीसरे भाव में स्थित हों तो सुरपति योग सिद्ध होता है।

नं० १५५ में इस तथ्य को ध्यान में रखना आवश्यक है कि वृहस्पति लग्न से पंचम भाव में हो तथा चन्द्रमा जहाँ वैठा हो उस भाव से वृहस्पति केन्द्र (१, ४. ७, १०) स्थान में पड़ता हो। साथ ही लग्न स्थिर राशि का हो। राशि संज्ञा ज्ञान इस पुस्तक के प्रारम्भ में कराया जा चुका है, अतः उसे यहाँ पुनः दोहराने की आवश्यकता नहीं। लग्न का स्वामी कुण्डली में दशम भाव में होने पर ही यह योग बनता है। यों भी लग्नेश दशम स्थान में होने से जातक सौभाग्यशाली होता ही है।

नं० १५६ योग की परिभाषा भी अपने आप में स्पष्ट है जिसके अनुसार चन्द्रमा या तो वृष राशि का हो या फिर मित्र ग्रह की राशि में स्थित हो तथा लग्न से नवम भाव में स्थित हो। इसके अतिरिक्त दशम भाव में शनि तथा दूसरे भाव में मंगल हो तो प्रवल सुरपति योग होता है।

(१५७—१६१)
विक्रम योग

परिभाषा—१५७. पूर्ण चन्द्रमा वलवान होकर लग्न को छोड़ अन्य केन्द्र स्थान (४, ७, १०) में हो, शुक्र से और वृहस्पति से देखा जाता हो तो विक्रम योग वनता है।

१५८. जिसके जन्म समय में एक भी ग्रह उच्च राशि का हो, तथा

उसको उसका अधिमित्र ग्रह पूर्ण दृष्टि से देख रहा हो तो विक्रम योग होता है।

१५९. बलवान शुक्र यदि ग्यारहवें या बारहवें भाव में हो तो भी विक्रम योग होता है।

१६०. दो या तीन ग्रह उच्च राशि के हों, चन्द्रमा स्व राशि पर स्थित हो एवं लग्नेश पूर्ण बली हो तो विक्रम योग होता है।

१६१. केन्द्र एवं त्रिकोण स्थान में ४ या इससे अधिक ग्रह विद्यमान हों तो विक्रम योग होता है।

फल—विक्रम योग रखने वाला जातक राजा या राजा के समान जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

टिप्पणी—विक्रम योग की गणना भी राज योग में ही होती है। विक्रम योग रखने वाला व्यक्ति पूर्ण सम्पन्न, धनवान एवं ऐश्वर्य-भोगी होता है, परन्तु साथ ही साथ वह बलवान एवं प्रबल साहसी भी होता है तथा कठिन से कठिन संघर्षों में भी वह विचलित नहीं होता।

न० १५७ का योग स्वतः ही स्पष्ट है कि चन्द्रमा कुण्डली में ४, ७ या १०वें भाव में हो और उसको शुक्र तथा गुरु पूर्ण दृष्टि से देख रहे हों तो यह योग बनता है।

नं० १५८ के लिए यह आवश्यक है कि जन्म-कुण्डली में कोई भी एक ग्रह उच्च का हो तथा उस ग्रह को उसका अधिमित्र ग्रह पूर्ण दृष्टि से देख रहा हो।

नं० १५९ का योग केवल शुक्र से ही बनता है। शुक्र यदि स्व-राशि का या उच्च राशि का होकर लग्न से ११ या १२वें भाव में विद्यमान हो तो प्रबल विक्रम योग बनता है।

नं० १६० की परिभाषा भी स्पष्ट है कि कुण्डली में कम से कम दो ग्रह अपनी उच्च राशि पर स्थित हों तथा चन्द्रमा कर्क राशि का होकर बैठा हो एवं लग्न का स्वामी केन्द्र में, त्रिकोण में, स्वराशि का, उच्च राशि का या १० से २० अंशों को लिए हुए ११वें भाव में हो तो विक्रम योग बन जाता है।

नं १६१ का योग तो स्वतः ही स्पष्ट है कि १, ४, ७, १०, ५, ९ स्थानों में कुल मिलाकर चार ग्रह अवश्य हों (पर इनमें राहु और केतु की गणना न हो) तो विक्रम योग सिद्ध होता है।

पृष्ठ ९९ पर भारत सरकार के गृह मंत्री यशवन्तराव चव्हाण की कुण्डली है, जिसमें केन्द्र तथा त्रिकोण स्थानों में मिलाकर चार
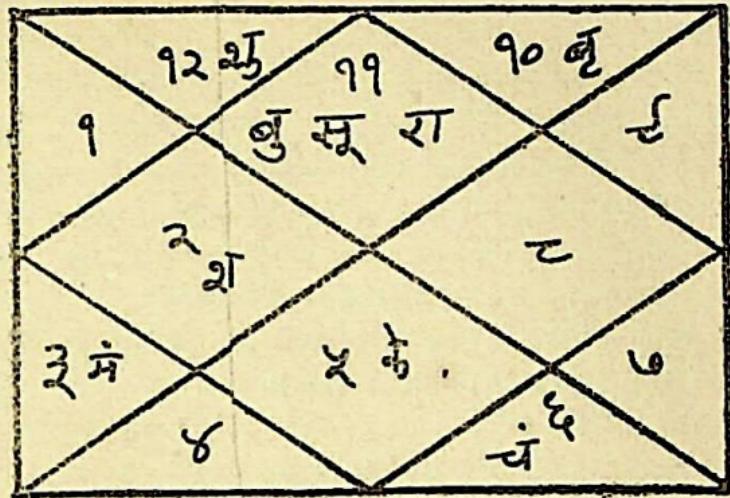
यशवन्त राव चह्वाण

ग्रह—सूर्य, बुध, शनि और मंगल—विद्यमान हैं, अतः त्रिकप योग स्पष्ट हुआ। त्रिकप योग से उत्पन्न फल जातक पर घटित कर सत्यासत्य का निर्णय लिया जा सकता है।

(१६२—१६५)

देव योग

परिभाषा—१६२. वृष लग्न हो, लग्न में चन्द्रमा हो तथा ४, ७ और १०वें भाव में सूर्य, शनि और गुरु हों तो देव योग होता है।

१६३. सूर्य उच्च का होकर चन्द्रमा के साथ सप्तम भाव में बैठा हो तथा उस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो तो देव योग होता है।

१६४. धनु, मेष, सिंह राशि के लग्न में मंगल हो एवं अपने मित्र के द्वारा देखा जाता हो तो देवयोग होता है।

१६५. तृतीय, नवम और पंचम भाव में यदि बलवान सूर्य, चन्द्रमा और गुरु हो तो देव योग होता है।

फल—देव योग में उत्पन्न जातक सभी सुखों को भोगता है। वह अपने कामों से प्रसिद्धि प्राप्त करता है तथा शान्त चित्त होता है।

टिप्पणी—देवयोग को भी राजयोग की ही तरह मानना चाहिए, परन्तु इस योग को रखने वाले व्यक्ति शान्त स्वभाव के होते हैं तथा उच्च पद प्राप्त करते हैं एवं देश-विदेश में ख्याति अर्जित करते हैं। योग संख्या १६२ केवल वृष लग्न वालों की कुण्डली पर ही घटित

होता है, क्योंकि वृष लग्न में ही चन्द्रमा उच्च राशि का होकर बलवान और योग कारक हो जाता है। चन्द्र के अतिरिक्त तीन ग्रह और भी इस योग को बनाने में सहायक होते हैं। सूर्य, शनि और बृहस्पति। सूर्य चतुर्थ भाव में सिंह राशि का होकर स्वराशिस्थ हो जाता है एवं योग कारक बन जाता है तथा शनि दशम भाव में होने से वह भी स्वराशिस्थ होकर बलवान व योग कारक होता है। सप्तम भाव में गुरु अत्यन्त ही अधिक योग कारक माना गया है, जो कि इस कुण्डली में मित्र राशिस्थ होता है। साथ ही सप्तम भाव में गुरु और लग्न में चन्द्र होकर गजकेशरी योग भी बनाते हैं। इस प्रकार जातक की कुण्डली में प्रबल राज योग—देव योग बन जाता है।

योग संख्या १६३ में भी यह आवश्यक है कि सूर्य मेष राशि का होकर चन्द्रमा के साथ सप्तम भाव में बैठा हो और पूर्ण दृष्टि से लग्न को देखता हो। यह योग भी मात्र तुला लग्न वालों की कुण्डली में ही घटित होता है, पर साथ ही इस योग में इस बात का भी ध्यान रहना चाहिए कि सप्तम भाव स्थित सूर्य चन्द्र पर शुभ ग्रह की दृष्टि अवश्य हो, चाहे वह एक ही ग्रह की क्यों न हो और उन पर किसी भी पापग्रह की दृष्टि नहीं पड़ती हो, तभी यह योग सार्थक हो जाता है।

योग संख्या १६४ में भी प्रतिबन्ध है कि लग्न केवल मेष, सिंह या धनु राशि का ही हो और लग्न में पूर्णं बली मंगल बैठा हो, साथ ही मंगल अपने मित्र से भी देखा जाता हो तो देव योग सिद्ध होता है।

योग १६५ की परिभाषा भी स्पष्ट है, जिसके विवेचन या व्याख्या की विशेष आवश्यकता नहीं।

(१६६—१६८)
मृगेन्द्र योग

परिभाषा—जिसके जन्म-समय जो ग्रह नीच राशि में प्राप्त हो, उस नीच राशि का स्वामी या उस ग्रह के उच्च स्थान का स्वामी लग्न से या चन्द्रमा से केन्द्र में स्थित हो तो मृगेन्द्र योग होता है।

१६७. दशम भाव का स्वामी ८वें भाव में स्थित हो, पारावतांश में हो या उच्च, स्वराशि मित्र राशि के नवांश का हो तो मृगेन्द्र योग बनता है।

१६८. लग्न में नीच ग्रह का गुरु हो, अष्टम भाव पापग्रह से युत हो और उस अष्टम भाव के नवांश से युक्त हो तो मृगेन्द्र योग होता है।

फल—मृगेन्द्र योग में जन्म लेनेवाला जातक राजा या राजा के

तुल्य होता है।

टिप्पणी—योग सं० ११६ के विवेचन की आवश्यकता है। इसमें नीच ग्रहों से भी राजयोग होना स्पष्ट होता है। जिस कुण्डली में कोई ग्रह नीच राशि का हो और वह यहाँ बैठा हो उस राशि का स्वामी स्वक्षेत्री या उच्च राशि का होकर लग्न से अथवा चन्द्र से केन्द्र स्थान में स्थित हो तो मृगेन्द्र योग बनता है।

योग संख्या १६७ भी विवेचन की आवश्यकता रखता है। इसमें यह आवश्यक है कि दशमेश अष्टम भाव में स्वराशि या उच्च राशि अथवा पारावतांश में हो अथवा मित्र क्षेत्री हो तो मृगेन्द्र योग बन जाता है।

योग संख्या १६८ भी नीच ग्रहों से राज योग स्पष्ट करने वाला है। इसकी परिभाषा के अनुसार लग्न में मकर राशि हो तथा लग्न में ही गुरु बैठा हो तथा अष्टम भाव में पाप ग्रह हो तो मृगेन्द्र योग स्पष्ट होता है। योग संख्या १६८ मात्र मकर लग्न की कुण्डली में ही घटित हो सकता है।

(१६९—१७१)
रुद्र योग

परिभाषा—(१६९) जिस मनुष्य के जन्म समय में बृहस्पति बारहवें में हो, शनि तीसरे भाव का मालिक होकर ग्यारहवें में हो या सूर्य ११वें भाव में हो और गुरु लग्नेश होकर बाहरवें भाव में हो तो रुद्र योग होता है।

(१७०) नवमेश जहाँ स्थित हो, उसका नवांशेश चौथे या पाँचवें भाव में हो तो रुद्र योग होता है।

(१७१) बुध, गुरु बलवान होकर एक साथ बैठे हों या बुध को गुरु देखता हो तो रुद्र योग होता है।

फल—रुद्र योग में उत्पन्न जातक राजा या राजा के तुल्य होता है तथा उच्च पद सुशोभित करता है।

टिप्पणी—योग संख्या १६९ केवल वृश्चिक और धनु लग्न वालों की कुण्डली में ही घटित हो सकता है, क्योंकि ऐसा होने पर ही शनि तीसरे भाव का स्वामी हो सकता है। वृश्चिक लग्न होने पर तीसरा भाव मकर राशि तथा धनु राशि का लग्न होने पर तीसरा भाव कुंभ राशि होगा। मकर और कुंभ दोनों ही राशियों का स्वामी शनि है। कुण्डली में शनि ११वें भाव में हो और वह नहीं हो तो सूर्य ११वें भाव

में हो, परन्तु आगे गुरु लग्नेश होना जरूरी है, अतः यह योग मात्र धनु लग्न की कुण्डली में ही घटित होगा।
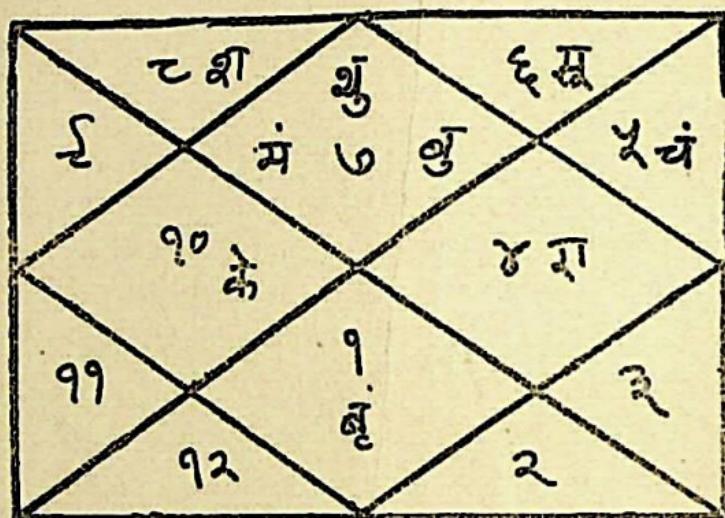
राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी

योग संख्या १७० में जहाँ कहीं पर भी नवम भाव का स्वामी बैठा है, उस राशि के नवांश का स्वामी चौथे या पाँचवें भाव में हो तो भी यही योग सिद्ध होता है।

योग संख्या १७२ की परिभाषा स्पष्ट है तथा इसमें बुध और गुरु दो ग्रहों से ही रुद्र योग स्पष्ट किया है। बुध ग्रह तथा गुरु ग्रह एक साथ बैठे हों या बुध पर गुरु की दृष्टि हो तो रुद्र योग होता है।

पृष्ठ ११६ पर राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की कुण्डली है, जिसमें रुद्र योग स्पष्ट है। बुध लग्न भाव में स्थित है तथा गुरु सप्तम भाव में बैठकर पूर्ण दृष्टि से बुध को देख रहा है, अतः स्पष्ट रुद्र योग सिद्ध होता है। रुद्र योग भी प्रबल राज योग की तरह है।

(१७२—१७५)
पारावत योग

परिभाषा—(१७२) जिसके जन्म-समय लग्न में गुरु हो, केन्द्र (१, ४, ७, १०) में बुध हो तथा उसको नवमेश देखता हो तो पारावत योग होता है।

(१७३) यदि शनि केन्द्र या त्रिकोण में मूल त्रिकोण या उच्च का हो, बली हो तथा उसको लाभेश या द्रव्येश देखता हो तो पारावत

योग बनता है।

(१७४) जिस जातक के जन्म-समय में लग्न में चन्द्रमा हो, बृहस्पति सुख स्थान में, शुक्र दशम भाव में तथा शनि अपनी उच्च राशि या स्वगृही हो तो पारावत योग होता है।

(१७५) १, २, ३, १०, ११, १२वें भावों में केवल शुभ ग्रह ही हों तो पारावत योग होता है।

फल—पारावत योग में उत्पन्न जातक लक्ष्मीवान, राजा या राजा के तुल्य होता है तथा जीवन का पूर्ण आनन्द भोगता है।

टिप्पणी—पारावत योग भी राज योग की ही तरह है तथा इस योग में उत्पन्न जातक भी राजा की तरह पूजे जाते हैं। पारावत योग संख्या १७२ की परिभाषा स्पष्ट है, जिसके अनुसार लग्न में गुरु हो तथा लग्न भाव को छोड़ अन्य केन्द्र स्थान (४, ७, १०) में बुध हो, जिसको नवम भाव का स्वामी पूर्ण दृष्टि से देख रहा हो तो पारावत योग होता है।

योग संख्या १७३ शनि एवं लाभेश से ही सिद्ध होता है, इसके लिए यह आवश्यक है कि शनि १, ४, ५, ६, १० भावों में से किसी एक भाव में हो, पर जहाँ पर भी हो, वह राशि या तो मकर या कुंभ हो अथवा तुला हो या फिर शनि मूल त्रिकोण में हो। शनि का मूल त्रिकोण कुंभ है अर्थात् कुंभ राशि में पड़ा शनि मूल त्रिकोणी शनि कहलाता है, ऐसे शनि को यदि द्वितीय भाव का स्वामी या एकादश भाव का स्वामी कहीं भी बैठकर पूर्ण दृष्टि से देख रहा हो तो पारावत योग बनता है।

पाठकों की जानकारी हेतु झांसी की महारानी की कुण्डली दी जा रही है, जिसमें पारावत योग स्पष्ट है। शनि तुला राशि का होने से उच्च का हो गया है तथा केन्द्र स्थान में बैठने से बलवान भी हो गया है। द्वितीय भाव का स्वामी भौम है, जो दशम भाव में स्थित है तथा वहाँ से अपनी चौथी पूर्ण दृष्टि से शनि को देख रहा है। इस प्रकार पारावत योग स्पष्ट है, परन्तु पाठकों को गंभीरतापूर्वक इस कुण्डली का अध्ययन करना आवश्यक है। यद्यपि पारावत योग होने से राज योग बना है, पर संबंधित ग्रह नीच राशि का होकर दशम भाव में स्थित है तथा शनि पर नीच दृष्टि ही डालता है, इसलिए अल्प पारावत योग ही बना, जिसके फलस्वरूप झाँसी की रानी राज्य का पूर्ण सुख न उठा सकी। किसी भी योग का अध्ययन करते समय पाठकों को इसी
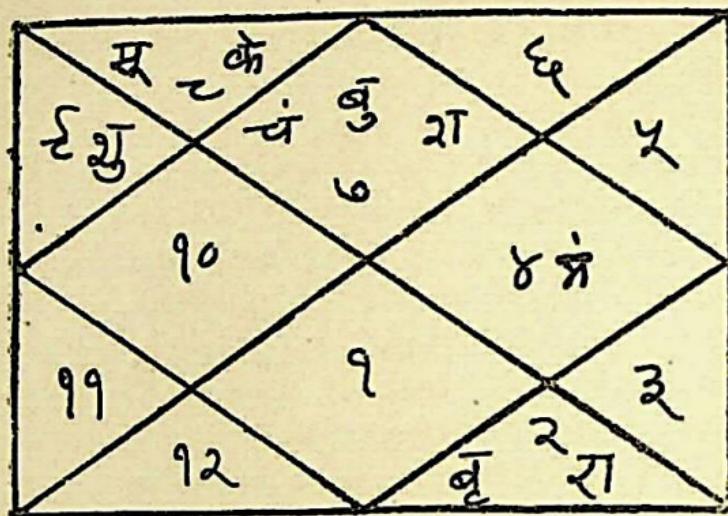
झाँसी की महारानी लक्ष्मीबाई

प्रकार सावधानीपूर्वक योगों का अध्ययन आवश्यक हो जाता है।

योग संख्या १७४ अपने आप में स्पष्ट है, इसके विवेचन की आवश्यकता नहीं।

नं० १७५ योग में इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि १, २, ३, १०, ११, १२ वें भावों में केवल शुभ ग्रह—चन्द्रमा, बुध, गुरु, शुक्र ही हों, चाहे वह अलग-अलग हों, चाहे एक साथ हों, पर शुभ ग्रहों के अतिरिक्त कोई भी अन्य ग्रह उपर्युक्त भाव स्थानों में नहीं हों, तभी पारावत योग बनकर पूर्ण फलदायी होता है।

(१७६-१७८)

देवांश योग

परिभाषा—(१७६) राहु कर्म भाव में हो, शनि लाभ में हो तथा भाग्येश उसको देखता हो और लग्नेश नीचस्थ ग्रह से युत न हो तो देवांश योग होता है।

(१७७) जिनके जन्म-समय में दो, तीन या चार ग्रह नीच के हों और शुभ षष्ठयंश में हों या अपनी उच्च राशि के नवांश में हों तो देवांश योग होता है।

(१७८) जिसके जन्म समय में लग्न से कर्म और धर्म के स्वामी या धर्म से दशमेश-नवमेश या दसवें से नवमेश-दशमेश युक्त हों, परस्पर केन्द्र स्थानों में हों या परस्पर देखते हों और धनेश से संबंध

रखते हों तो देवांश योग होता है।

फल—देवांश योग रखने वाला व्यक्ति राजा या राजा के तुल्य होता है।

टिप्पणी—देवांश योग भी राज्य योग का ही एक प्रकार है तथा इस योग से भी राज योग का ही फल प्राप्त होता है।

योग संख्या १७६ के अनुसार राहु १०वें भाव में हो तथा शनि एकादश भाव में हो, साथ ही नवम भाव का स्वामी शनि को देख रहा हो और लग्नेश के साथ कोई भी ग्रह न हो तो यह योग स्पष्ट होता है। नीच ग्रहों से भी राज्य योग बन जाता है, यह योग संख्या १७७ से स्पष्ट है। यदि जन्म-कुण्डली में दो, तीन या चार ग्रह नीच राशि के हों, परन्तु शुभ षष्ठ्यंश (जन्म-कुण्डली का छठा हिस्सा) में हों या उच्च राशि के नवांश में हों तो देवांश योग बन जाता है।

योग संख्या १७८ के विवेचन की आवश्यकता है। इसके लिए तीन स्थितियाँ हैं।

१. लग्न में दशम भाव और नवम भाव का स्वामी साथ बैठा हो। २. नवम भाव में दशम भाव का स्वामी और नवम भाव के स्वामी साथ बैठे हों। ३. दशम भाव में नवम भाव का स्वामी तथा दशम भाव का स्वामी साथ बैठ हों। उपर्युक्त तीन तथ्यों में से कोई एक हो या ये ग्रह आमने-सामने हों और एक-दूसरे को देखते हों या इनमें परस्पर स्थान संबंध हों अर्थात् नवम भाव में दशम भाव का स्वामी और दशम भाव मेंनवम भाव का स्वामी हो और इस प्रकार से बने ग्रह युग्म दूसरे भाव के स्वामी के साथ हों या द्वितीयेश से दृष्ट हों तो उपर्युक्त योग सिद्ध होता है।

(१७९-१८४)
महाराजाधिराज योग

परिभाषा—(१७९) जिस जातक की ज़न्म-कुण्डली में छः ग्रह उच्च राशि के हों तो महाराजाधिराज योग होता है।

(१८०) यदि पाँच ग्रह उच्च के हों और बृहस्पति लग्न में हों तो महाराजाधिराज योग बनता है।

(१८१) चार ग्रह उच्च के हों और शनि कुंभ राशि में हो तो महाराजाधिराज योग होता है।

(१८२) मेष लग्न में बुध हो तथा गुरु कर्क राशि पर स्थित हो तो महाराजाधिराज योग बनता है।

(१८३) जिस मनुष्य के जन्म-समय में वृष लग्न में चन्द्रमा हो और उसे अन्य छः ग्रह देखते हों तो महाराजाधिराज योग होता है।

(१८४) कुण्डली में एक ग्रह उच्च का हो और अन्य सभी ग्रह स्वगृही या मित्र गृही हों तो महाराजाधिराज योग होता है।

फल—महाराजाधिराज योग में उत्पन्न जातक प्रवल भाग्यवान होता है तथा सर्वशक्ति से सम्पन्न उच्च राजा होता है अथवा देश-व्यापी नेता या मंत्री होता है।

टिप्पणी—महाराजाधिराज योग प्रवल राज योगों में से माना जाता है तथा इन योगों से उत्पन्न फल जातक को शीघ्र ही प्राप्त होता है।

योग संख्या १७९ में छः ग्रह उच्च के होने पर महाराजाधिराज योग माना गया है। उच्च के ग्रह निम्न प्रकारेण हैं—

सूर्य—मेष राशि का; चंद्रमा—वृष राशि का; मंगल—मकर राशि का; बुध—कन्या राशि का; गुरु—कर्क राशि का; शुक्र—मीन राशि का; शनि—तुला राशि का।

निर्दिष्ट राशियों पर सम्बन्धित ग्रह होने से ये ग्रह उच्च के माने जाते हैं।

योग संख्या १८० में पाँच ग्रह उच्च राशि के होने पर यह आवश्यक है कि लग्न भाव में गुरु हो। चाहे लग्न किसी भी राशि का हो।

नं० १८१ में चार ग्रह अपनी उच्च राशियों में स्थित हों, पर
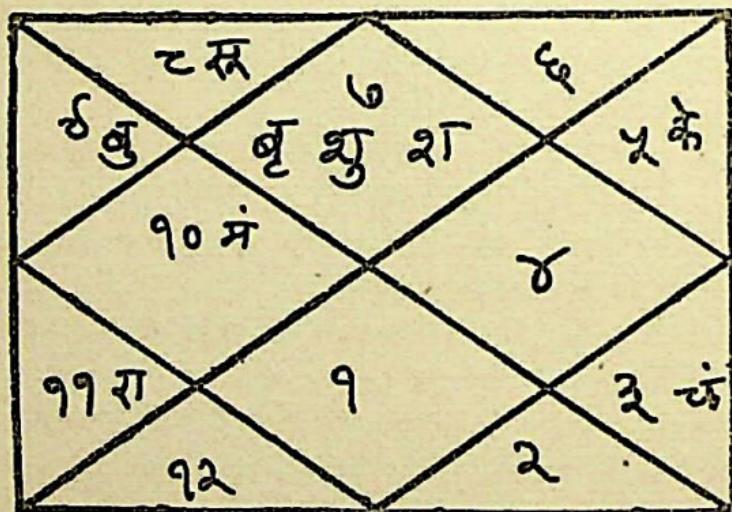
अकबर बादशाह

शनि मूलत्रिकोण में अर्थात् कुंभ राशि पर हो तभी यह योग सिद्ध होता है।

१८३ योग अपने आप में स्पष्ट है, इसे विवेचन करने की आवश्यकता नहीं, परन्तु यह योग केवल वृष राशि के लग्न पर ही घटित होता है।

योग संख्या १८४ में एक ग्रह उच्च का हो तो भी चल सकता है, पर अन्य सभी ग्रह स्वराशि के या मित्र राशि के हों तभी घटित होता है। पाठकों की जानकारी हेतु पृष्ठ १०६ पर मुगल सम्राट अकबर बादशाह की कुण्डली दे रहा हूँ, जिसमें शनि तुला राशि में होकर उच्च का हो गया है एवं इसके अतिरिक्त सभी ग्रह स्वराशि या मित्र राशिस्थ ही हैं, अतः अकबर की कुण्डली में स्पष्टतः महाराजाधिराज योग है।

(१८५—१८९)
दिव्य योग

परिभाषा—(१२५) जिसके जन्म-समय में गुरु और शुक्र से युक्त चंद्रमा धनु में हो, बुध लग्न भाव में हो, मंगल कन्या राशि का हो, शनि मकर राशि का होकर चतुर्थ भाव में हो तो दिव्य योग होता है।

(१८६) जिसकी कुण्डली में बुध, चन्द्रमा, मंगल और शनि यदि कन्या, मीन, कर्क, धनु या मकर में क्रमशः स्थित हों तो दिव्य योग होता है।

(१८७) यदि मीन लग्न हो और उसमें पूर्ण बली चन्द्रमा हो तथा मंगल उच्च राशि का हो एवं शनि कुंभ राशि का हो तो दिव्य योग होता है।

(१८८) जन्म के समय मंगल मकर लग्न में हो, एवं चन्द्रमा कर्क राशि का हो तो दिव्य योग होता है।

(१८९) यदि मंगल सूर्य और गुरु क्रमशः मकर, मेष और कुंभ राशियों में हों तो दिव्य योग होता है।

फल—दिव्य योग में उत्पन्न व्यक्ति राजा होता है या राजा के तुल्य होता हुआ पूर्ण सुख एवं आनन्द भोगता है।

टिप्पणी—योग संख्या १८५ केवल तुला राशि की लग्न कुण्डली में ही घटित हो सकता है, क्योंकि इस योग के लिए यह आवश्यक है कि चतुर्थ भाव में मकर राशि हो और उसमें चंद्रमा स्थित हो। तुला राशि में बुध हो, धनु राशि में गुरु, शुक्र और चन्द्र हों तथा कन्या राशि

पर भौम स्थित होता हो तभी पूर्ण दिव्य योग साकार होता है।

योग संख्या १८६ में चार ग्रह मुख्य हैं और वे हैं बुध, चंद्र, मंगल और शनि। साथ ही चार राशियाँ भी मुख्य हैं कन्या, मीन, कर्क और धनु। इसके साथ ही साथ यह भी आवश्यक है कि कन्या राशि में बुध हो, मीन राशि पर चन्द्र हो, कर्क राशि पर भौम हो और मकर राशि पर शनि हो, तभी दिव्य योग होता है। यद्यपि शनि को धनु राशि पर होने पर भी स्वीकार कर लिया है, पर व्यवहार में मैंने मकर के शनि को अधिक प्रबल और फलदाता होते हुए देखा है। ये चारों ग्रह क्रमशः ही हों।

योग संख्या १८७ केवल मीन लग्न वालों की कुण्डली में ही होता है, साथ ही मीन लग्न में ही पूर्ण बली चंद्रमा हो। पूर्णबली चन्द्र इन स्थितियों में होता है: १—जातक का जन्म अमावस्या को न हुआ हो। २—चन्द्रमा शत्रु क्षेत्री या नीच राशि का न हो। ३—१ से ५ तथा २५ से ३० अंशों के बीच न हो। ४—चन्द्रमा वक्री न हो। ५—चन्द्रमा वेध युक्त या रश्मि किरणों से आच्छादित न हो ६—पाप ग्रहों के साथ न बैठा हो।

उपर्युक्त स्थितियाँ न होने पर ही चन्द्रमा पूर्ण बली होता है। चन्द्रमा के अतिरिक्त मंगल मकर राशि पर हो एवं शनि मूल त्रिकोण गत अर्थात् कुंभ राशि पर हो तभी दिव्य योग होता है।

योग संख्या १८८ की परिभाषा स्वतः अपने आप में स्पष्ट है, जिसके विवेचन की विशेष आवश्यकता नहीं।

योग संख्या १८९ के अनुसार मंगल मकर राशि का, सूर्य मेष राशि का तथा गुरु कुंभ राशि का होने पर दिव्य योग होता है। दिव्य योग भी राज योग की तरह है और वैसा ही प्रभावशाली भी है।

(१९०-१९४)

रश्मि योग

परिभाषा—(१९०) जिसके जन्म-समय शीर्षोदय राशि में सभी ग्रह हों और चन्द्रमा शुभ ग्रह से दृष्ट वा युत होकर कर्क में हो तो रश्मि योग होता है।

(१९१) लग्नेश नवम भावगत या दशम भावगत हो तथा लग्न में पूर्ण बली चन्द्र हो तो रश्मि योग होता है।

(१९२) जिस मनुष्य के जन्म-समय उच्च राशि में जाने वाला सूर्य त्रिकोण में हो, चन्द्रमा कर्क का हो और गुरु भी कर्क का हो तो

रश्मि योग होता है।

(१९३) जिसके जन्म-समय रवि, चंद्र, बुध और शुक्र मित्रांशक में होकर दशम भाव में हों तथा ये ग्रह शत्रु की राशि के न हों, नीच राशिगत न हों, अस्त न हों, तो रश्मि योग होता है।

(१९४) मंगल उच्च का हो, बलवान हो तथा उसको सूर्य, चन्द्र और गुरु देखते हों तो प्रबल रश्मि योग होता है।

फल—रश्मि योग में उत्पन्न जातक राजा या राजा के तुल्य होता है तथा पूर्ण वाहन सुख, पारिवारिक एवं आर्थिक सुख प्राप्त करता है।

टिप्पणी—योग संख्या १९० के लिए शीर्षोदय राशियों का ज्ञान आवश्यक है। ये राशियाँ निम्न प्रकारेण हैं—मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु। उपर्युक्त छः राशियाँ शीर्षोदय राशियाँ कहलाती हैं, यदि इन छः राशियों में ही सभी ग्रह (सू० चं० मं० बु० वृ० शु० श०) हों तथा चन्द्रमा शुभ ग्रहों (बुध, गुरु, शुक्र) के साथ हो या इनमें से किसी एक द्वारा भी दृष्ट हो, पर पापग्रहों की उस पर छाया न हो और ऐसा चंद्र स्वयं अपनी ही राशि कर्क में हो तो यह योग निष्पन्न होता है।

योग संख्या १९१ के अनुसार लग्न का स्वामी यदि नवम अथवा दशम भाव में हो और लग्न में पूर्ण बली चन्द्रमा हो तो रश्मि योग स्पष्ट हो जाता है।

योग १९२ के अनुसार यह आवश्यक है कि सूर्य वृष राशि का होकर ५वें या ९वें भाव में स्थित हो और चन्द्रमा तथा बृहस्पति कर्क राशि पर हों तभी रश्मि योग बन जाता है।

यह योग केवल मकर या कन्या लग्न वालों की कुण्डली में ही घटित हो सकता है। चन्द्र, गुरु के एक साथ रहने से गजकेशरी योग भी बनता है।

योग संख्या १९३ के अनुसार सूर्य, चन्द्रमा, बुध और शुक्र मित्र राशियों पर स्थित हों तथा चारों ग्रह दशम भाव में हों, तो रश्मि योग बन जाता है। योग संख्या १९४ में मंगल मकर राशि का होकर कहीं भी स्थित हो, पर उसे सूर्य, चन्द्रमा और गुरु देख रहे होते हैं तो रश्मि योग बन जाता है। रश्मि योग भी राज योग का ही एक रूप है तथा इससे वे ही फल निष्पन्न होते हैं, जो राज योग होने से फल प्राप्त होता है।

तड़ित योग

परिभाषा—(१९५) जन्म-कुण्डली में चन्द्रमा से उपचय स्थान में लग्नेश हो तथा वह शुभ राशि या मित्र राशि या शुभ राशि के नवांश का होकर केन्द्र में स्थित हो तथा सभी पाप ग्रह वलहीन हों तो तड़ित योग होता है।

(१९६) जिस मनुष्य की जन्म-कुण्डली में सूर्य अपने मूल त्रिकोण में या उच्च राशि में हो, शुक्र और बुद्ध अपने-अपने नवांश का होकर चन्द्रमा से ३, ६, ८, वें भाव में हों तो तड़ित योग होता है।

(१९७) बुध लग्न में, गुरु सप्तम भाव में, पूर्ण चन्द्रमा कर्क राशि का होकर चतुर्थ भाव में तथा शुक्र दशम भाव में हो तो तड़ित योग होता है।

(१९८) जिसके जन्म-समय में पूर्ण निर्मल वलवान चंद्र केन्द्र स्थान में बैठा हो तो तड़ित योग होता है।

(१९९) जिस मनुष्य के जन्म-समय गुरु शुक्र के साथ होकर दूसरे भाव में बैठा हो तो तड़ित योग होता है।

(२००) लग्नेश केन्द्र में हो, दशमेश चतुर्थ भाव में हो और नवमेश एकादश स्थान में हो तो तड़ित योग होता है।

फल—तड़ित योग रखने वाला व्यक्ति राजा या राजा के तुल्य होता है तथा पूर्ण जीवन-सुख प्राप्त करता है।

टिप्पणी—उपचय स्थान निम्न भाव कहे जाते हैं।

लग्न से ३, ६, १०, ११ वें भाव उपचय भाव हैं, परन्तु योग संख्या १९५ में यह विधान है कि चन्द्रमा जहाँ बैठा हो उससे ३, ६, १०, ११ वें स्थान में लग्न राशि का स्वामी बैठा हो तथा वह लग्नेश या तो मित्र राशियों पर बैठा हो या मित्र राशि के नवांश में हो, पर जन्म-कुण्डली में केन्द्र स्थान (१, ४, ७, १०) में हो तो यह योग बनता है।

योग संख्या १९६ के अनुसार सूर्य मूल त्रिकोण या सिंह राशि का हो अथवा मेष राशि का हो। शुक्र और बुध अपनी राशियों के नवांश में होकर चन्द्रमा जहाँ पर स्थित है, उससे ३, ६ या ८ वें भाव में हों तभी यह योग बनता है।

योग १९७ केवल मेष लग्न रखने वाले जातकों की कुण्डली में ही घटित होता है। इस योग की परिभाषा स्वतः ही स्पष्ट है।

योग संख्या १९८ के अनुसार केवल एक चन्द्रमा ही इस योग को बनाने में समर्थ है, यदि चन्द्रमा पूर्ण बली एवं निर्मल होकर केन्द्र स्थान में हो। तड़ित योग भी एक प्रकार का राज योग ही है तथा इस योग से भी वे ही फल निष्पन्न होते हैं, जो राज योग से होते हैं। इस योग को रखने वाला व्यक्ति विख्यात, चतुर एवं प्रसिद्ध धनी तथा उच्चकोटि का नेता या नेता सदृश होता है।

योग सख्या १९९ की परिभाषा स्पष्ट है। इसके अनुसार यदि गुरु और शुक्र दोनों एक साथ जन्म-कुण्डली के दूसरे भाव में बैठे हों, तो तड़ित योग निष्पन्न करते हैं। कुण्डली में यदि अकेला शुक्र ही दूसरे भाव में बैठ जाता है तो जातक को पूर्ण सौभाग्यशाली और सम्पन्न तथा धनवान बना देता है और यदि गुरु और शुक्र दोनों साथ में सौम्य ग्रह होकर दूसरे भाव में बैठ जाएं तो निस्संदेह जातक अपने कार्यों में प्रसिद्धि पाने वाला एवं सौभाग्यशाली होता है तथा उसे जीवन में किसी भी बात का अभाव नहीं रहता।

योग संख्या २०० के अनुसार लग्न का स्वामी केन्द्र स्थानों (१, ४, ७, १०) में से किसी एक स्थान में हो तथा दशम भाव का स्वामी चौथे भाव में और नवम भाव का स्वामी जन्म कुण्डली के एकादश भाव में हो तो तड़ित योग निष्पन्न होता है।

(२०१—२०३)
कैलाश योग

परिभाषा—(२०१) जिसके जन्म काल में बुध-सूर्य के साथ होकर भी यदि मिथुन राशि या मूल त्रिकोण में हो तो कैलाश योग होता है।

(२०२) जिसके जन्म-समय सूर्य और बुध चौथे भाव में, शनि और चन्द्रमा दशम भाव में और मंगल लग्न में हो तो कैलाश योग होता है।

(२०३) यदि शनि और मंगल १०वें, ५वें या लग्न में हों और पूर्ण चन्द्रमा गुरु की राशि में हो तो कैलाश योग होता है।

फल—कैलाश योग में उत्पन्न जातक राजा या राजा के तुल्य होता है तथा जीवन में पूर्ण आनन्दभोग करता है।

टिप्पणी—कैलाश योग भी राजयोग का ही एक रूप है तथा इस योग से भी वे ही फल निष्पन्न होते हैं, जो राजयोग में संभव हैं।

योगसंख्या २०१ के अनुसार सूर्य, बुध साथ होने आवश्यक हैं। यों

तो सभी ग्रह सूर्य के साथ बैठने से या सूर्य द्वारा दृष्ट होने पर अस्त हो जाते हैं, परन्तु बुध केवल एक ऐसा ग्रह है, जो सूर्य के साथ बैठने पर भी अस्त नहीं होता तथा अपना फल प्रदान करने में समर्थ होता है। इस प्रकार इस योग में सूर्य तथा बुध मिथुन राशि में बैठे हों या बुध की मूल त्रिकोण राशि कन्या पर ये दोनों ग्रह बैठे हों तो कैलाश योग होता है।

योग संख्या २०२ के अनुसार उसकी परिभाषा स्पष्ट ही है, अतः इस परिभाषा के विवेचन की आवश्यकता नहीं।

योग २०३ के अनुसार यदि शनि और मंगल दोनों एक साथ लग्न में, पाँचवें भाव में दशवें भाव में हों और निर्मल एवं वलवान चन्द्रमा धनु या मीन राशि का हो तो कैलाश योग वन जाता है।

(२०४—२०९)
अरविन्द योग

परिभाषा—(२०४) लग्नेश वली होकर केन्द्र में हो तथा मित्र ग्रह से दृष्ट हो तो अरविन्द योग होता है।

(२०५) यदि उच्चगत लग्नेश चन्द्रमा को देखता हो तो प्रवल अरविन्द योग वनता है।

(२०६) लग्न के अतिरिक्त केन्द्र (४, ७, १०) स्थान में चन्द्रमा पूर्ण बली हो तथा उसको बृहस्पति एवं शुक्र देखते हों तो अरविन्द योग होता है।

(२०७) जिस मनुष्य के जन्म-समय में लग्नेश नीच, अस्त या शत्रु राशि का न हो तथा केन्द्र में हो और उसके साथ दूसरा कोई भी ग्रह न बैठा हो तो अरविन्द योग होता है।

(२०८) जिस मनुष्य के जन्म-समय में गुरु, चन्द्र और सूर्य पंचम, तृतीय और धर्म भाव में स्थित हों तो अरविन्द योग होता है।

(२०९) धनु लग्न में वलवान सूर्य हो, दसवें भाव में चन्द्र मंगल हो, ग्यारहवें या वारहवें भाव में शुक्र हो तो अरविन्द योग होता है।

फल—अरविन्द योग रखने वाला व्यक्ति राजा या राजा के सदृश होता है तथा पूर्ण धनवान एवं प्रख्यात व्यक्ति होता है।

टिप्पणी—अरविन्द योग भी एक प्रकार से राज योग ही है तथा

इस योग को रखने वाला व्यक्ति उच्च पद पर प्रतिष्ठित होने के साथ-साथ आर्थिक दृष्टि से पूर्ण सम्पन्न एवं धनी होता है। योग संख्या २०४ के अनुसार लग्न का स्वामी बलवान होकर केन्द्र भाव में बैठा हो तथा उसे मित्र ग्रह देख रहें हो तो अरविन्द योग सिद्ध होता है। पाठकों की जानकारी हेतु भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ० राधाकृष्णन् की कुण्डली दे रहा हूँ, जिस में अरविन्द योग सिद्ध हुआ
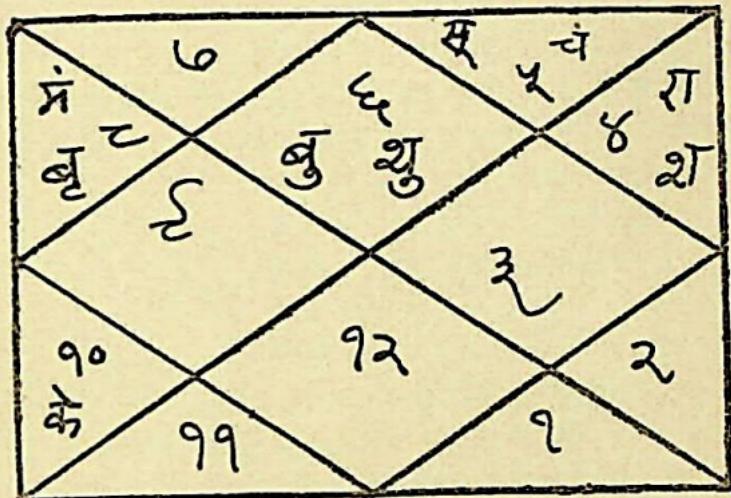
डॉ० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् (भूतपूर्व राष्ट्रपति, भारत)

है। लग्न का स्वामी बुध केन्द्र स्थान में ही नहीं अपितु लग्न में स्थित है तथा उसका मित्र ग्रह शुक्र उसके साथ होने से वह अधिक प्रबल हो गया है। अरविन्द योग के फलस्वरूप ही संबंधित जातक शिक्षा एवं दर्शन शास्त्री होते हुए भी राजनीति में इतने उँचे उठ सके और सर्वोच्च पद प्राप्त कर सके।

योग संख्या २०५ के अनुसार लग्न का स्वामी अपनी उच्च राशि पर स्थित हो तथा चन्द्रमा को पूर्ण दृष्टि से देख रहा हो तो अरविन्द योग सिद्ध होता है।

योग सख्य २०६ की परिभाषा स्वतः ही स्पष्ट है कि चन्द्रमा ४, ७ या १०वें भाव में हो तथा उसको कहीं पर भी (चाहे अलग-अलग) बैठकर गुरु और शुक्र देख रहे हों तो अरविन्द योग निष्पन्न होता है। इस योग में यह आवश्यक नहीं रखा गया है कि गुरु और शक्र साथ ही बैठे हों।

योग संख्या २०७ के अनुसार लग्न के स्वामी के बारे में विशेष सतर्कता बरती गई है। जिसके अनुसार लग्नेश (१) सूर्य के साथ न बैठा हो, (२) सूर्य से देखा नहीं गया हो, (३) अपनी नीच राशि पर स्थित न हो, (४) अपने शत्रु की राशि पर न बैठा हो और न शत्रु ग्रहों से देखा गया हो, तथा (५) ऐसा निर्मल लग्नेश केन्द्र भाव (१, ४, ७, १०) में हो तथा इस प्रकार के लग्नेश के साथ दूसरा कोई भी ग्रह न बैठा हो तो अरविन्द योग सिद्ध होता है।

योग संख्या २०८ के अनुसार गुरु पंचम भाव में हों, चन्द्रमा जन्म कुण्डली में तीसरे स्थान पर हो तथा सूर्य नवम भाव में हो तभी अरविन्द योग बनता है।

योग संख्या २०९ अधिकतर उन्हीं व्यक्तियों की कुण्डली में घटित होता है, जो पौष मास में जन्म लेते हैं। इसके लिए यह आवश्यक है कि धन लग्न हो तथा धनु लग्न में ही सूर्य बैठा हो। दसवें भाव में चन्द्र मंगल एक साथ बैठने से प्रबल चन्द्र मंगल योग बना ही देते हैं तथा बारहवें भाव में बैठा शुक्र जातक को पूर्ण सांसारिक सुख प्रदान कर देता है। इस प्रकार इन योगों से बना यह योग जातक को प्रबल बलवान और विख्यात बना देता है।

(२१०—२१३)
ब्रह्माण्ड योग

परिभाषा—२१०. जिस मनुष्य के जन्म-समय में समस्त पापग्रह ३, ६ और ११वें भाव में तथा लग्नेश शुभ ग्रहों से दृष्ट हों तो ब्रह्माण्ड योग होता है।

२११. जन्म-कुण्डली में मंगल बलवान होकर मकर राशि में हो, शनि नवें या बारहवें भाव में हो, सूर्य और चन्द्रमा सप्तम भाव में एक साथ बैठे हों तो ब्रह्माण्ड योग होता है।

२१२. शनि तथा चन्द्र एकादश भाव में या सुख स्थान में अथवा दसवें में हो तो ब्रह्माण्ड योग होता है।

२१३. गुरु और चन्द्रमा वृष राशि में हों और बलवान लग्नेश कोण में होकर यदि शनि और मंगल से दृष्ट हो तो ब्राह्मण्ड योग होता है।

फल—ब्रह्माण्ड योग में उत्पन्न व्यक्ति राजा या राजा के सदृश होते हैं तथा धनवान होते हैं।

टिप्पणी—ब्रह्माण्ड योग भी राज योग की ही तरह है तथा इस योग से भी वे ही फल निष्पन्न होते हैं, जो राज योग से संभव हैं।

योग संख्या २१० के अनुसार समस्त पापग्रह सूर्य, मंगल, शनि और क्षीण चन्द्रमा) ३, ६ और ११वें भाव में स्थित हों, परन्तु लग्न का स्वामी शुभ ग्रहों से युक्त होना आवश्यक है तभी यह योग निष्पन्न होता है।

योग संख्या २११ के अनुसार मंगल अपनी उच्चराशि में होना जरूरी है तथा शनि नवम भाव में हो अथवा व्यय भाव में हो। सूर्य चन्द्रमा के बारे में स्पष्टीकरण दिया जा चुका है।

योग संख्या २१२ में शनि चन्द्र संबंध से योग निष्पन्न हुआ है। शनि तथा चन्द्रमा एक साथ ग्यारहवें भाव में हों या चौथे भाव में हों अथवा दसवें भाव में हों तो ब्रह्माण्ड योग निष्पन्न होता है।
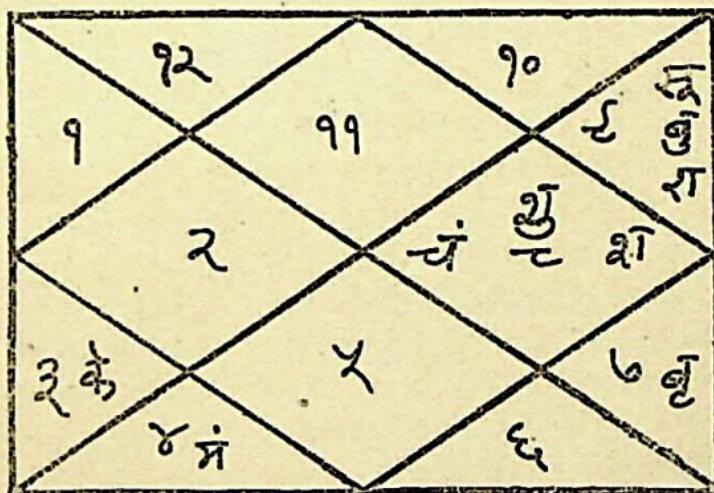
श्रीमती भण्डारनायके (श्री लंका) विश्व की प्रथम महिला प्रधानमंत्री

ऊपर श्रीलंका की प्रथम महिला प्रधानमंत्री श्रीमती भंडारनायके की कुण्डली दी जा रही है जिसमें ब्रह्माण्ड योग निष्पन्न हुआ है। चन्द्रमा और शनि दोनों एक ही साथ दशम भाव में स्थित हैं, जिसके फलस्वरूप संबन्धित जातक जीवन में इतना ऊँचा उठ सका और ख्याति प्राप्त कर सका।

योग संख्या २१३ के अनुसार गुरु चन्द्रमा एक साथ वृष राशि में बैठे हों। वृष राशि में होने के कारण चन्द्र उच्च का हो जाता है

तथा गुरु साथ में रहने से गजकेशरी योग भी बन जाता है। साथ ही लग्न का स्वामी बलवान होकर पाँचवें या नवें भाव में हो, परन्तु इसके साथ ही यह भी जरूरी है कि ऐसे लग्नेश पर शनि और मंगल दोनों ग्रहों की पूर्ण दृष्टि हो तभी यह योग फलदायक होता है।

(२१४—२१६)

राज राजेश्वर योग

परिभाषा—२१४. सूर्य मीन राशि का हो तथा कर्क लग्न में चन्द्रमा हो तो राज राजेश्वर योग होता है।

२१५. एक भी ग्रह अपने मित्र से दृष्ट होकर उच्च राशि में बैठा हो और एक मित्र ग्रह के साथ बैठा हो तो राज राजेश्वर योग होता है।

२१६. धनु, मीन, तुला, मेष, मकर या कुम्भ लग्न में शनि हो, तो राज राजेश्वर योग होता है।

फल—राज राजेश्वर योग भी प्रबल राज योग माना गया है तथा यह योग होने से जातक पूर्ण सुखी, धनवान एवं ऐश्वर्यभोगी होता है।

योग संख्या २१४ के अनुसार सूर्य, मीन राशि पर ही स्थित हो तथा लग्न कर्क राशि का हो, जिसमें चन्द्र बैठा हो।

योग नं० २१५ भी सरल है। इस योग में कोई भी एक ग्रह उच्च का हो तथा उसके साथ कम से कम एक मित्र ग्रह स्थित हो तथा एक भिन्न ग्रह देख रहा हो और उस ग्रह पर किसी भी पापग्रह की दृष्टि न हो तभी यह योग निष्पन्न होता है।

योग संख्या २१६ की परिभाषा अत्यन्त सरल है। जिसके अनुसार ६ लग्नों को मान्यता दी है और वे लग्न हैं—धनु, मीन, तुला, मेष, मकर या कुम्भ, पर यह जरूरी है कि इन छः राशियों में से एक राशि लग्न में हो और लग्न में ही शनि स्थित हो।

पृष्ठ ११७ पर कार्ल मार्क्स की कुण्डली है, जिसमें स्पष्टतः राज-राजेश्वर योग निष्पन्न हुआ है। मार्क्स की कुण्डली की लग्न राशि कुम्भ है तथा लग्न में ही शनि व्यवस्थित है, जो कि स्वराशि का होने के कारण अति बलवान हो गया है। साथ ही मित्र ग्रह मंगल की पूर्ण दृष्टि होने से वह कुण्डली में कारक ग्रह हो गया है, जिसके कारण सम्बन्धित व्यक्ति जीवन में इतना अधिक ऊँचा उठ सका और विश्व में ख्याति प्राप्त कर सका।

कार्ल मार्क्स
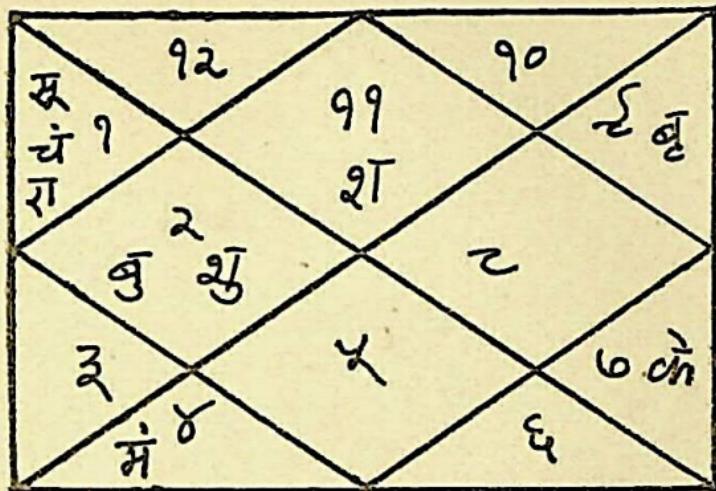
(२१७—२१९)

राजभंग योग

परिभाषा—२१७. यदि सूर्य तुला राशि में अति नीच भाव से युक्त हो तो राजभंग योग होता है।

२१८. लग्न से छठे स्थान में चन्द्रमा और सूर्य हों तथा उन्हें शनि देखता हो तो राजभंग योग होता है।

२१९. शनि केन्द्र में या लग्न में हो, उसको शुभ ग्रह न देखते हों तथा मंगल की काल होरा में उत्पन्न हो तो भी राजभंग योग होता है।

फल—राजभंग योग होने पर जातक दुःखी, परेशान, मानसिक चिन्ताओं से ग्रस्त तथा दरिद्र जीवन व्यतीत करता है।

टिप्पणी—राजभंग योग यदि किसी जातक की कुण्डली में पड़ा हो तो चाहे कितने भी ऊँचे ग्रह क्यों न हों और चाहे कुण्डली में राज योग ही क्यों न हो, वह एक बार अवश्य दरिद्र बन जाता है।

संक्षिप्ततः राजभंग योग होने पर राज योग का प्रभाव नष्ट हो जाता है। उदाहरणार्थ किसी जातक की जन्म-कुण्डली में राज योग हो एवं साथ ही साथ राजभंग योग भी हो तो जातक का राज योग समाप्त हो जाता है। इस प्रकार की सैकड़ों कुण्डलियाँ मेरी आँखों के सामने से गुजरी हैं, जिनमें राज योग एवं राजभंग योग दोनों ही विद्यमान थे। ऐसी स्थिति में ज्योतिष के पाठकों को चाहिए कि वे उक्त कुण्डली

का गहराई के साथ मनन करें। मेरे अनुभव के अनुसार ऐसा होता है कि राज योग बनाने वाले ग्रहों की दिशा में जातक उन्नति करता है, राजावत् जीवन यापन करता है, परन्तु जिन ग्रहों से राजभंग योग बना है, उनकी दशा आने पर उनका पतन भी हुआ है और धन गँवाकर दरिद्र जीवन बिताने को बाध्य होते हैं। परन्तु यदि जीवन के प्रारम्भ में राजभंग योग बनाने वाले ग्रहों की दशा आती है तो उसका प्रारम्भिक जीवन अत्यन्त दीन और दरिद्र होता है। परन्तु आगे चलकर राज योग से संबंधित ग्रह दशा आने पर वे उन्नति कर उच्च पद पर भी पहुँचते देखे गये हैं। केन्द्रीय सरकार के एक उच्च अधिकारी का प्रारम्भिक जीवन अत्यन्त विपन्न और दरिद्र था और जिस समय वह मेरे सम्पर्क में आया और मैंने उसे उच्च राज योग के फल बताये और भावी जीवन के वर्षों की ओर इंगित किया तो वह विद्रूप की हँसी हँस पड़ा और बोला, मेरे जीवन में ऐसा शायद ही हो, पर ज्यों ही राज योग के ग्रहों की दशा आई, वह उच्च अधिकारी बना और आज पूर्ण सुख भोग रहा है। मेरे कहने का तात्पर्य यह है कि ग्रह अपनी दशा में फल अवश्य देते हैं, परन्तु योग देखने वाले व्यक्ति को चाहिए कि वह कुण्डली का स्थिरमति एवं गंभीरतापूर्वक अध्ययन कर फल निर्देश करे। यदि एक ही ग्रह राज योग ग्रहों में भी हो और राजभंग ग्रहों में भी हो तो ऐसी स्थिति में उससे सम्बन्धित दूसरे ग्रह की दशा में सम्बन्धित फल समझना चाहिए।

आर्ष ऋषियों ने कई राजभंग योग सिद्ध किये हैं, उनमें से कुछ मुख्य राजभंग योग स्पष्ट कर रहा हूँ।

योग संख्या २१७ के अनुसार सूर्य तुला राशि में हो, क्योंकि तुला राशि का सूर्य नीच राशि का सूर्य माना जाता है तथा तुला राशि में भी अति नीच भाग अर्थात् १ से १० अंशों तक ही हो तो ऐसा योग होने पर राजभंग योग होता है।

योग २१८ के अनुसार जन्म-कुण्डली में लग्न से छठे भाव में चन्द्रमा और सूर्य हों तथा उन दोनों को शनि पूर्ण दृष्टि से देख रहा हो तो राजभंग योग होता है।

योग संख्या २१९ के अनुसार शनि या तो केन्द्र (१, ४, ७, १०) स्थान में हो या लग्न भाव में हो तथा इस प्रकार के शनि को कोई शुभ ग्रह नहीं देख रहा हो, साथ ही भौम की काल होरा जन्म के समय चल रही हो, तो राजभंग योग होता है।

परिभाषा—(२२०) चन्द्रमा मंगल के साथ मेष राशि में हो, उसको शुभ ग्रह न देखता हो और उस पर शनि की दृष्टि पड़ रही हो तो राजभंग योग होता है।

(२२१) केन्द्र में शनि, चन्द्र और सूर्य एक साथ बैठे हों तो राजभंग योग होता है।

(२२२) शनि केन्द्र स्थान में हो, चन्द्रमा लग्न भाव में हो और गुरु बारहवें भाव पर बैठा हो तो राजभंग योग होता है।

(२२३) नवम भाव का स्वामी बारहवें भाव में पापग्रह होकर बैठा हो तथा केन्द्र में भी एक पापग्रह हो तो राजभंग योग होता है।

(२२४) बृहस्पति राहु या केतु के साथ हो तथा उसे पापग्रह देख रहा हो तो राजभंग योग होता है।

फल—राजभंग योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति दुःखी, परेशान, मानसिक चिन्ताओं से ग्रस्त तथा दरिद्र जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

टिप्पणी—योग संख्या २२० चन्द्र मंगल योग का विनाशक है, जिसके अनुसार यदि चन्द्रमा और मंगल मेष राशि में हों और उसे शनि ३, ७ या १०वीं दृष्टि से देख रहा हो, साथ ही इस प्रकार के चन्द्र मंगल पर शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो ऐसा बना हुआ योग राजभंग योग माना जाता है।

योग संख्या २२१ की परिभाषा अत्यन्त स्पष्ट है, जिसके विवेचन की विशेष आवश्यकता नहीं है।

योग क्रमांक २२२ के अनुसार राजभंग करने वाले तीन ग्रह हैं: चन्द्र, गुरु और शनि। इनमें से भी शनि केन्द्र स्थान (१, ४, ७, १०) में हो तथा लग्न में चन्द्रमा हो एवं बृहस्पति जन्म-कुण्डली में १२वें भाव पर पड़ा हो तो ऐसा योग राजभंग योग कर देता है।

योग क्रमांक २२३ के अनुसार नवम भाव का स्वामी बारहवें भाव में हो और पापग्रह हो, पर व्यवहार में यह देखा गया है कि नवम भाव का स्वामी शुभग्रह होकर भी बारहवें भाव पर पड़ा हो, तब भी यही फल होता है, पर दोनों ही परिस्थितियों में यह आवश्यक है कि केन्द्र स्थान में एक पापग्रह अवश्य हो।

योग संख्या २२४ की परिभाषा अपने आपमें स्पष्ट है।

परिभाषा—(२२५) बृहस्पति नीच राशि में नीच गत ग्रह से देखा जाता हो तो राजभंग योग होता है।

(२२६) लग्नेश या चन्द्रमा नीच राशि में होकर सूर्य के साथ हो तथा उसे शनि देखता हो तो राजभंग योग होता है।

(२२७) नवमेश द्वादश भाव में हो, तृतीय में पापग्रह हो, व्ययेश दूसरे में हो तो राजभंग योग होता है।

(२२८) सभी ग्रह नीच राशि में शत्रु के नवांश में हों, दशम से भिन्न स्थान में स्थित हों तो राजभंग योग होता है।

(२२९) यदि लग्नेश बारहवें भाव में हो, दसवें भाव में पापग्रह हो, उसमें मंगल चंद्रमा के साथ हो तो राजभंग होता है।

(२३०) यदि लग्नेश और जन्म-राशि ये दोनों शुभग्रहों से युक्त नहीं हों अथवा असंगत हों तथा नवमेश १२वें भाव में हो तो राजभंग योग होता है।

फल—राजभंग योग में जन्म लेने वाला जातक दुःखी, परेशान मानसिक चिन्ताओं से ग्रस्त तथा दरिद्र जीवन करने वाला होता है।

टिप्पणी—योग संख्या २२५ के अनुसार गुरु नीच राशि अर्थात् मकर राशि में हो तथा उसे ऐसा ग्रह देख रहा हो, जो स्वयं नीच राशि में बैठा हो, तो इस प्रकार के बने योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति निरक्षर अथवा अल्पाक्षर एवं मन्दबुद्धि, चिड़चिड़ा, दुःखी एवं निर्धन होता है।

योग संख्या २२६ के अनुसार लग्न का स्वामी नीच राशि में बैठा हो या चन्द्रमा नीच राशि में बैठा हो तथा इस नीच ग्रह के साथ सूर्य भी बैठा हो जिसे शनि ३, ७ या १०वीं दृष्टि से देख रहा हो तो राजभंग योग हो जाता है।

योग संख्या २२७ में स्पष्ट है कि नवम भाव का स्वामी कुण्डली के बारहवें भाव में हो तथा तीसरे भाव में पापग्रह (सूर्य, मंगल, शनि) बैठा हो। बारहवें भाव का स्वामी भी दूसरे भाव में बैठा हो तो राजभंग योग हो जाता है।

योग संख्या २२८ के अनुसार राजभंग योग के लिए यह आवश्यक है कि सभी ग्रह अपनी-अपनी नीच राशियों में स्थित हों या शत्रु की नवांश राशियों में बैठे हों एवं कुण्डली का दशम स्थान खाली पड़ा हो तो राजभंग योग हो जाता है।

योग क्रमांक २२९ के अनुसार लग्न का स्वामी बारहवें भाव में जाकर बैठ गया हो तथा दसवें भाव में मंगल, चंद्र और पापग्रह स्थित हो गया हो तो राजभंग योग बन जाता है।

योग संख्या २३० की परिभाषा स्वतः ही स्पष्ट है जिसे विवेचन की आवश्यकता नहीं।

(२३१—२३५)

परिभाषा—(२३१) लग्न से केन्द्र स्थान में शुभ तथा अशुभ दोनों प्रकार के ग्रह हों, चन्द्रमा लग्नेश से देखा जाता हो और वह शनि का नवांश में हो तो राजभंग योग होता है।

(२३२) जन्म-कुण्डली के सातवें भाव में बुध शुक्र हों, पाँचवें भाव में बृहस्पति हो, चौथे भाव में पापग्रह हो, और चन्द्रमा से अष्टम स्थान में भी पापग्रह हो तो राजभंग योग होता है।

(२३३) चन्द्रमा दशम भाव में हो, शुक्र सप्तम भाव में हो, और पापग्रह नवें स्थान में हो तो राजभंग योग होता है।

(२३४) शुक्र, बुध और चन्द्रमा केन्द्र में हों तथा जन्म लग्न में राहु हो तो राजभंग योग होता है।

(२३५) सौम्य राशि लग्न हो तथा लग्न में भी सौम्य ग्रह बैठे हों एवं उसे दो पापग्रह देख रहे हों तो राजभंग योग होता है।

फल—राजभंग योग होने पर जातक दुःखी, हीन, सुख-सुविधाओं से वंचित एवं धनहीन जीवन व्यतीत करता है।

टिप्पणी—योग संख्या २३१ की परिभाषा स्वतः ही स्पष्ट है कि केन्द्र भावों (१, ४, ७, १०) में शुभ ग्रह हों तथा पापग्रह भी हों तथा लग्न का स्वामी चन्द्रमा को पूर्ण दृष्टि से देख रहा हो, साथ ही चन्द्रमा शनि की नवांश राशि पर स्थित हो।

योग संख्या २३२ की परिभाषा भी स्पष्ट है। इसमें बुध, गुरु, शुक्र को प्रधानता दी गई है। तदनुसार जन्म-कुण्डली में सप्तम भाव में बुध और शुक्र हों, पाँचवें भाव में गुरु हो, चौथे भाव में पापग्रहों में से कोई एक ग्रह हो, फिर वह चाहे सूर्य हो, मंगल हो या शनि हो या इनमें से कोई भी एक से ज्यादा हो, साथ ही अष्टम स्थान में भी पापग्रह स्थित हो तो राजभंग योग होता है।

योग २३३ की परिभाषा के अनुसार दशम भाव पर चन्द्र, सप्तम भाव पर शुक्र तथा नवम भाव पर पापग्रह स्थित होने से राजभंग योग बन जाता है।

योग संख्या २३४ स्वतः ही स्पष्ट है जिसका विवेचन करने की जरूरत नहीं।

योग नं० २३५ को समझने की जरूरत है, जिसके अनुसार लग्न भी सौम्य राशि हो। सौम्य राशि से तात्पर्य सौम्यग्रहों की राशि से है, इसके अनुसार वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धनु, मीन राशियाँ सौम्य राशियाँ कही जाती हैं। साथ ही उस सौम्य राशि में सौम्य ग्रह भी पड़े हों, परन्तु उन सौम्य (शुभ) ग्रहों को कम से कम दो पापग्रह पूर्ण दृष्टि से देख रहे हों तो राजभंग योग हो जाता है और जातक राजा के घर में जन्म लेने पर भी राज्य-विहीन रहता है।
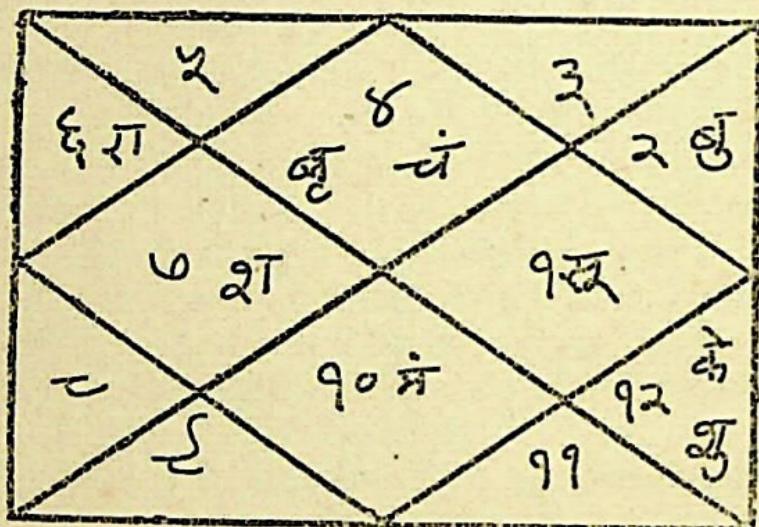
मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र

पाठकों की विशेष जानकारी के लिए मैं त्रेतायुग के महान वीर रघुवर श्री दशरथ सुत मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र की जन्म-कुण्डली दे रहा हूँ जिसमें योग संख्या २३५ के अनुसार राजभंग योग स्पष्ट है। लग्न में चन्द्रमा की राशि कर्क सौम्य राशि है तथा सौम्य राशि प्रधान लग्न में ही दो सौम्य ग्रह अवस्थित हैं—बृहस्पति और चन्द्र। बृहस्पति और चन्द्र लग्न भाव में बैठकर गजकेशरी योग बनाते हैं, जो कि राज योग का ही एक प्रकार है, परन्तु पाठक देखेंगे कि कुण्डली में दशम भाव में उच्च राशि का सूर्य भी अवस्थित है। इस प्रकार सूर्य, चन्द्र और गुरु तीनों ने मिलकर प्रबल राजयोग बनाया है, परन्तु साथ ही साथ ध्यान में देने योग्य बात यह भी है कि सौम्य राशिस्थ

ग्रह चन्द्र एवं बृहस्पति को दो पापग्रह भी देख रहे हैं। मंगल सप्तम भाव में बैठकर लग्न तथा पूर्ण दृष्टि रख रहा है तथा शनि चतुर्थ भाव में बैठकर लग्न को पूर्ण दृष्टि से देख रहा है, इस प्रकार शनि और मंगल ने प्रबल राजभंग योग भी प्रस्तुत किया है।

अब देखने की बात यह है कि प्रस्तुत कुण्डली में राज योग तथा राजभंग योग दोनों ही विद्यमान हैं, जिसका फल जातक के जीवन से देखा जाता है। जैसा कि मैं पहले कह चुका हूँ कि यदि किसी कुण्डली में राजयोग तथा राजभंग योग दोनों ही विद्यमान हों तो जिन ग्रहों से राजयोग निर्मित होता है उन ग्रहों की दशा आने पर वह व्यक्ति उच्च पद पर प्रतिष्ठित होता है, परन्तु राजभंग योग निर्मित ग्रहों की दशा आने पर वे भी अपना फल बता ही देते हैं।

जिस समय श्री राम का राजतिलक संस्कार हो रहा था, उस समय शनि में मंगल का अन्तर चल रहा था अर्थात् महादशा शनि की थी और अन्तर्दशा मंगल की थी। चूंकि ये दोनों ग्रह राजभंग योग से सम्बन्धित हैं फलस्वरूप वे राज-सिंहासन पर न बैठ सके और उन्हें बनवासी जीवन जीने को बाध्य होना पड़ा।

ज्योतिष के विद्यार्थियों को चाहिए कि वे कुण्डली का अध्ययन और उसमें निहित योगों का अध्ययन करते समय कुण्डली में चल रही दशा-अन्तर्दशा को भी ध्यान में रखकर फलाफल निर्देश करें।

(२३६—२४०)

परिभाषा—(२३६) चन्द्रमा और सूर्य सप्तम भाव में हों तथा शनि द्वारा दृष्ट हों तो राजभंग योग होता है।

(२३७) बृहस्पति या सूर्य नीच राशि में होकर केन्द्र में स्थित हो, साथ में पापग्रह बैठा हो तो राजभंग योग बनता है।

(२३८) गुरु अष्टम भाव में हो, केन्द्र में पापग्रह हो तथा उन पर शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो राजभंग योग होता है।

(२३९) चन्द्रमा और बुध दशम में हों, पाप ग्रह से देखे जाते हों और पापग्रह से युक्त भी हों तथा शुभ ग्रह की दृष्टि से रहित हों तो राजभंग योग होता है।

(२४०) यदि लग्नेश चन्द्रमा से पंचम स्थान में हो या दूसरे में हो और पापग्रह अष्टम राशि में हो, चन्द्रमा दशम में हो तो भी राजभंग योग होता है।

फल—राजभंग योग होने पर जातक दुःखी, हीन भावना से

ग्रस्त, व्यथित और दरिद्र जीवन बिताने वाला होता है।

टिप्पणी—योग संख्या २३६ की परिभाषा के अनुसार सप्तम भाव में सूर्य और चन्द्रमा दोनों एक साथ बैठे हों और उस पर शनि की पूर्ण दृष्टि हो तो राजभंग योग हो जाता है।

योग संख्या २३७ के अनुसार गुरु या सूर्य से राजभंग योग स्पष्ट किया है जिसके अनुसार या तो गुरु मकर राशि में हो अथवा कुण्डली में सूर्य तुला राशि का हो तथा इस प्रकार का सूर्य या गुरु केन्द्र भाव (१, ४, ७, १०) में स्थित हो एवं उसके साथ एक या एक से ज्यादा पापग्रह भी हों तो राजभंग योग स्पष्ट हो जाता है।

योग २३८ के अनुसार अष्टम भाव में गुरु हो और केन्द्र में पापग्रह हों, जिस पर शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो। गुरु अष्टम भाव में बैठकर मारक बन जाता है तथा कुण्डली के राजयोग को नष्ट करने में वह अकेला ही समर्थ होता है। फिर केन्द्र स्थानों में भी पापग्रह हो जाय, तब तो प्रबल राजभंग योग बन जाता है।

योग २३९ की परिभाषा के अनुसार दशम भाव में बुध व चन्द्र एक साथ बैठे हों तथा उनको पापग्रह देखते हों, साथ ही बुध एवं चंद्र के साथ भी पापग्रह बैठे हों, परन्तु इस तथ्य का ध्यान रखना आवश्यक है कि दशम भाव पर किसी भी शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं हो तभी राजभंग योग सफल होता है।

योग संख्या २४० की परिभाषा स्वतः ही स्पष्ट है, जिसके विवेचन की यहाँ आवश्यकता नहीं।

(२४१—२४५)

परिभाषा—(२४१) शुक्र और गुरु नीच राशि के हों तथा गुरु या शुक्र के नवांश में शनि हो तो राजभंग योग होता है।

(२४२) सभी पापग्रह यदि केन्द्र या नीच या शत्रुग्रह में स्थित हों तथा उन्हें ६, ८, १२वें भावगत शुभग्रह देखते हों तो राजभंग योग होता है।

(२४३) शनि, चन्द्र और सूर्य केन्द्र में स्थित हों तथा शुभग्रह से दृष्ट न हों तो राजभंग योग बनता है।

(२४४) यदि नीच राशिस्थ शुक्र पापग्रह से युक्त होकर नवम या दशम भाव में हो, उसे पापग्रह देखते हों तो जातक की कुण्डली में राजभंग योग होता है।

(२४५) लग्न में शुक्र की राशि हो, जिस पर चन्द्र हो तथा

केन्द्रस्थ भौम उसे देखता हो तथा बारहवें भाव में शनि हो तो राज-भंग योग होता है।

फल—राजभंग योग होने पर जातक दीन, विपन्न, चिन्तातुर एवं द्रव्यहीन जीवन बिताने वाला होता है।

टिप्पणी—योग संख्या २४१ के अनुसार शुक्र अपनी नीच राशि में हो तथा गुरु भी नीच राशि मकर पर स्थित हो तथा इन दोनों ग्रहों की नवांश राशियों में से किसी एक राशि पर शनि हो तो राज भंग योग होता है।

योग २४२ में दो बातें स्पष्ट हैं: अशुभ भाव—६, ८, १२, शुभ भाव—१, ४, ७, १०, ५, ६

अशुभ भावों में यदि शुभ ग्रह होते हैं तो स्वतः ही अशुभ फल प्रदान करते हैं और यदि सभी शुभ ग्रह इन अशुभ भावों (६, ८, १२वें भाव में) में हों तो कुण्डली साधारण बन जाती है। इसी प्रकार शुभ भावों में यदि अशुभ ग्रह बैठ जाते हों तो वे अशुभ फल ही प्रदान करते हैं। इस प्रकार इस योग के अनुसार सभी शुभग्रह ६, ८, १२वें भाव में हों तथा पापग्रह नीच राशि के होकर अथवा शत्रु घरों में बैठकर केन्द्र भाव में हों और उन पर शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो राजभंग योग स्वतः ही प्रबल हो जाता है।

योग संख्या २४३ में तीन ग्रह राजभंग करने में समर्थ होते हैं। वे ग्रह हैं सूर्य, चन्द्र और शनि। यदि ये तीनों ग्रह केन्द्र में स्थित हों पर उन पर शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो तो वे राजभंग योग कर देते हैं। क्योंकि सूर्य तथा शनि पापग्रह हैं, जो केन्द्र भावों में बैठकर प्रबल अशुभ ग्रह बन जाते हैं, साथ ही क्षीण चन्द्रमा (एक से ५ अंशों तक) भी पापग्रह माना जाता है।

योग संख्या २४४ के अनुसार शुक्र कन्या राशि पर हो तथा किसी भी एक या एक से अधिक पापग्रहों को साथ लेकर नवम या दशम भाव पर हो तथा उसे पापग्रह देखते हों तो राजभंग योग होता है।

(२४६—२५०)
रेका योग

परिभाषा—(२४६) बलहीन लग्नेश को अष्टमेश देखता हो और बृहस्पति सूर्य के साथ अस्त हो तो रेका योग होता है।

(२४७) चतुर्थेश अष्टमेश से युक्त होकर षष्ठेश से देखा जाता हो तो रेका योग होता है।

(२४८) दशमेश पाँचवें भाव में हो और लग्नेश नीच में हो तो रेका योग होता है।

(२४९) यदि शुभग्रह ६, ८, १२वें भाव में हों, पापग्रह केन्द्र और कोण में हों और लाभेश निर्बल हो तो रेका योग होता है।

(२५०) लग्नेश पापग्रह के साथ हो, शुक्र और गुरु अस्त हों तो रेका योग होता है।

फल—रेका योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति मलिन बुद्धि एवं जड़ मति होता है। द्रव्य के लिए दुःखी रहता है तथा आजीविका के लिए भटकता रहता है। क्रोधी स्वभाव, चिड़चिड़ा, सौभाग्यहीन चतुर, विवादी, चुगलखोर तथा परिवार में कलह रखने वाला होता है।

टिप्पणी—रेका योग भी एक प्रकार से राजभंग योग की ही तरह है। यदि कुण्डली में प्रबल राजयोग हो और साथ ही साथ कुण्डली में रेका योग भी हो तो कुण्डली का राजयोग साधारण अथवा नष्ट हुआ समझना चाहिये।

परिभाषा २४६ के अनुसार यदि लग्नेश (लग्न भाव का स्वामी) बलहीन हो तथा अष्टम भाव का स्वामी कहीं पर भी बैठकर लग्न-भाव के स्वामी को देख रहा हो तथा गुरु और सूर्य साथ में बैठे हों तो रेका योग फलित हो जाता है। जैसा कि मैं पहले के पृष्ठों में स्पष्ट कर चुका हूँ कि बुध के अतिरिक्त कोई भी अन्य ग्रह सूर्य के साथ बैठा हो या सूर्य के द्वारा देखा जाता हो तो वह ग्रह 'अस्त' कहलाता है और उसका प्रभाव क्षीण हो जाता है।

योग संख्या २४७ के अनुसार चौथे भाव का स्वामी आठवें भाव के स्वामी के साथ कहीं पर भी बैठा हो, उसे छठे भाव का स्वामी देख रहा हो तो जातक रेका योग प्राप्त कर दरिद्र जीवन बिताने को बाध्य होता है।

योग संख्या २४८ भी रेका योग का उदाहरण है, जिसके अनु-सार दशम भाव का स्वामी पाँचवें भाव में हो और लग्न का स्वामी अपनी नीच राशि पर पड़ा हो तो रेका योग निष्पन्न हो जाता है।

पाठकों को यह ध्यान रखना चाहिए कि लग्न भाव का स्वामी यदि नीच अथवा अस्त होता है तो जातक के जीवन में विविध कठि-नाइयाँ आती रहती हैं तथा उसे कठिन परिश्रम करने को बाध्य होना पड़ता है।

योग संख्या २४६ के अनुसार भी दो वर्ग स्थापित किये हैं।

१. शुभ ग्रह (चन्द्र, बुध, गुरु, शुक्र) २. अशुभ ग्रह (सूर्य, मंगल, शनि)। यदि शुभग्रह ६, ८, १२वें भावों में हों तथा पापग्रह या अशुभ ग्रह केन्द्र तथा त्रिकोण (५, ६) भावों में हों तो रेका योग हो जाता है, पर साथ ही यदि लग्न का स्वामी बलहीन होता है तो यह योग प्रबल हो जाता है।

योग संख्या २५० भी रेका योग का ही उदाहरण है, जिसके अनुसार लग्न का स्वामी किसी भी पापग्रह के साथ हो तथा शुक्र और गुरु सूर्य के साथ बैठे हों या सूर्य के द्वारा दृष्ट होने से अस्त हों तो रेका योग बन जाता है।

(२५१—२५५)

परिभाषा—(२५१) चतुर्थ भाव का स्वामी पापग्रह के साथ होकर अस्त हो तो रेका योग होता है।

(२५२) भाग्यपति सूर्य के साथ अस्त या लग्नेश नीच हो और द्वितीयेश भी नीच हो तो रेका योग होता है।

(२५३) कोई भी तीन ग्रह नीच हों, अस्त हों और लग्नेश दुष्ट स्थान में हो अथवा निर्बल हो तो रेका योग होता है।

(२५४) पापग्रह १, २, ६, १०, ११, ४, ५, ३, ७ भावों में स्थित हों, नीच या शत्रुग्रह में स्थित हों या पापग्रह से दृष्ट हों तो रेका योग बनता है।

(२५५) १, ४, ७, १० भावों में एक भी पापग्रह यदि शत्रु-ग्रह, पापग्रह या नीचगत ग्रह से दृष्ट हो तो रेका योग होता है।

फल—जिस जातक की जन्मकुण्डली में रेका योग होता है, वह आलसी, नीचमति, कुटुम्बी जानों का विरोध करनेवाला, हीन भावनाओं से ग्रस्त और धनहीन, दरिद्र जीवन बिताने वाला होता है।

योग संख्या २५१ के अनुसार चौथे भाव का स्वामी सूर्य के साथ या सूर्य के द्वारा देखा गया हो तो रेका योग हो जाता है।

योग संख्या २५२ के अनुसार भाग्यपति अर्थात् नवम भाव का स्वामी सूर्य के साथ बैठकर या दृष्ट होकर अस्त हो, लग्नपति तथा दूसरे भाव का स्वामी भी नीच राशि में हो तो रेका योग बन जाता है।

योग संख्या २५३ के अनुसार यदि कुण्डली में कोई भी तीन या तीन से अधिक ग्रह नीच राशि में बैठे हों या सूर्य के साथ अस्त हो गये

हों, साथ ही लग्न का स्वामी भी शत्रुक्षेत्री हो तो रेका योग बन जाता है।

योग संख्या २५४ के अनुसार १, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११ भावों में पापग्रह हों, साथ ही वह नीच राशिगत हों या शत्रुग्रह में स्थित हों तो रेका योग स्पष्ट हो जाता है।

योग संख्या २५५ की परिभाषा स्पष्ट है, जिसके विवेचन की आवश्यकता नहीं है।

(२५६—२६०)
दरिद्र योग

परिभाषा—(२५६) गुरु लग्नेश होकर केन्द्र के बाहर सूर्य के साथ अस्त हो और लाभेश निर्बल हो तो दरिद्र योग होता है।

(२५७) भाग्य भाव में शनि हो, उसे पापग्रह देखते हों तथा लग्न में सूर्य युक्त बुध नीच अंश में हो तो दरिद्र योग होता है।

(२५८) गुरु, मंगल, शनि और बुध नीचस्थ होकर एकादश, षष्ठ, द्वादश, अष्टम, पंचम स्थान में स्थित हों या सूर्य से आक्रान्त हों तो दरिद्र योग होता है।

(२५९) जन्म-कुण्डली में शुक्र, गुरु, चन्द्रमा और भौम ये नीच राशि में होकर लग्न, दशम, नवम, सप्तम और पंचम भाव में स्थित हों तो दरिद्र योग होता है।

(२६०) बारहवें भाव का स्वामी लग्न में हो और लग्नेश बारहवें भाव में हो तथा किसी एक के साथ सप्तमेश हो या सप्तमेश देख रहा हो तो दरिद्र योग होता है।

फल—दरिद्र योग में जन्म लेने वाले जातक निर्धन, दुःखी चिन्तातुर और आजीविका से असंतुष्ट रहते हैं।

टिप्पणी—योग संख्या २५६ दरिद्र योग का उदाहरण है। दरिद्र व्यक्ति जीवन में दुःखी और परेशान रहते हैं, उन्हें न तो पूरी सुविधाएँ मिल पाती हैं और न जीवन में ऊँचा पद ही प्राप्त कर सकते हैं। इस प्रकार के व्यक्ति न सामाजिक दायित्वों को निभा पाते हैं और न बच्चों को सन्तोषजनक शिक्षा ही दे पाते हैं। दरिद्र योग रखने वाले व्यक्ति जीवन में धनाभाव से चिंतित और आजीविका से असन्तुष्ट रहते हैं। योग संख्या २५६ के अनुसार बृहस्पति यदि लग्न का स्वामी हो तथा १, ४, ७, १०वें भावों के अलावा किसी भी भाव में पड़ा हो और उसके साथ सूर्य भी हो, साथ ही दूसरे भाव का स्वामी निर्बल और

अशक्त हो तो दरिद्र योग सम्पन्न होता है। कोई भी ग्रह निर्बल या अशक्त इन स्थितियों में होता है: १. नीच राशि का होने पर, २. शत्रु-क्षेत्री या शत्रु के घर में बैठने पर, ३. सूर्य के साथ होने पर, ४. सूर्य के द्वारा देखे जाने पर, ५. शुभग्रह हो तो ६, ८ या १२वें भाव में बैठने पर। परन्तु पाठकों को इस तथ्य की ओर भी ध्यान देना चाहिए कि यदि किसी भी नीच राशिगत ग्रह को कोई अन्य नीच राशिगत ग्रह पूर्ण दृष्टि से देख लेता है तो वे दोनों नीच राशिगत ग्रह निर्मल होकर शुद्ध हो जाते हैं, सामान्य स्थिति में हो जाते हैं अर्थात् उनका नीच दोष समाप्त हो जाता है।

योग संख्या २५७ के अनुसार नवम भाव में शनि हो जिसे पाप-ग्रह (सूर्य, मंगल) देख रहे हों, तथा लग्न भाव में सूर्य १० अंशों में ही होकर बुध के साथ बैठा हो तो दरिद्र योग हो जाता है।

योग संख्या २५८ के अनुसार शनि, मगल, गुरु और बुध नीच राशि के हों तथा सूर्य इन ग्रहों को देख रहा हो तो दरिद्र योग होता है, परन्तु मेरे अनुभव में ऐसी कई कुण्डलियाँ आई हैं, जिनमें यदि उपर्युक्त चार ग्रह केवल नीच राशि के ही हों तो भी जातक दरिद्र जीवन बिताने को बाध्य हो जाता है।

योग संख्या २५९ में भी नीच राशि के ग्रहों से दरिद्र योग निर्मित हुआ है अर्थात् शुक्र, गुरु, चन्द्र और भौम नीच राशि के हैं। ये ग्रह निम्न प्रकार से नीच राशि के होंगे।

शुक्र—कन्या राशि, गुरु—मकर राशि, चन्द्र—वृश्चिक राशि, मंगल—कर्क राशि। ये ग्रह अग्रलिखित राशियों पर हों और कुण्डली में १, ५, ७, ९, १०वें भावों पर ही हों तो दरिद्र योग बन जाता है।

योग संख्या २६० में यदि लग्नेश और द्वादशेश ने परस्पर अपने-अपने भाव बदल दिये हों तथा इन दोनों में किसी एक के साथ सप्तम भाव का स्वामी हो या किसी एक ग्रह को सप्तम भाव का स्वामी देख रहा हो तो दरिद्र योग बन जाता है।

(२६१—२६५)

परिभाषा—(२६१) चन्द्र दूसरे भाव में या सातवें भाव में हो तथा लग्न का स्वामी छठे भाव में तथा छठे भाव का स्वामी लग्न में हो तो दरिद्र योग होता है।

(२६२) लग्न में केतु और चन्द्रमा एक साथ बैठे हों तो यही योग होता है।

(२६३) लग्नेश अष्टम स्थान में हो तथा उसके साथ द्वितीयेश या सप्तमेश हो तो दरिद्र योग होता है।

(२६४) लग्नेश ६, ८ या १२वें भाव में बैठा हो तथा उसके साथ द्वितीयेश या सप्तमेश हो तो दरिद्र योग बन जाता है।

(२६५) पंचमेश छठे भाव के स्वामी या अष्टम भाव के स्वामी अथवा द्वादशेश के साथ हो तो दरिद्र योग हो जाता है।

फल—दरिद्र योग में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति निर्धन, दुःखी, चिन्तातुर और आजीविका से असन्तुष्ट रहने वाला होता है।
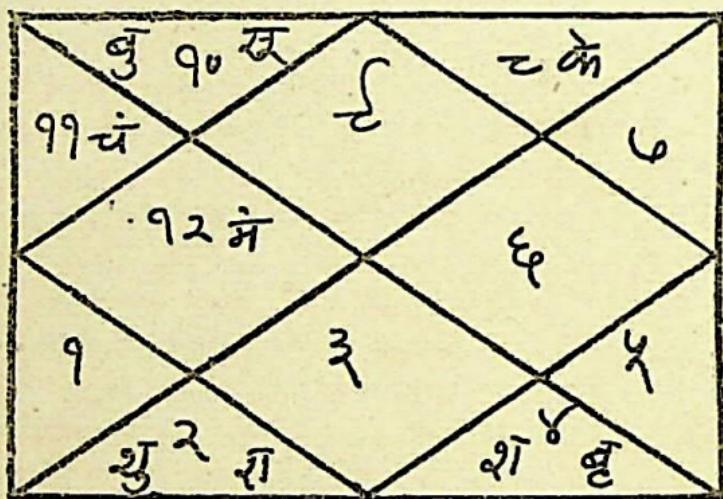
टिप्पणी—योग संख्या २६१ और २६२ की परिभाषा अत्यन्त स्पष्ट है, जिसके विवेचन की आवश्यकता नहीं।

योग संख्या २६३ के अनुसार लग्न का स्वामी अष्टम स्थान में हो तथा उसके साथ दूसरे या सातवें भाव का मालिक भी हो तो दरिद्र योग निष्पन्न होता है।

योग संख्या २६४ के लिए यह आवश्यक है कि लग्न का स्वामी ६, ८ या १२वें भाव में स्थित हो तथा लग्नेश के साथ ही दूसरे भाव का स्वामी या सप्तम भाव का स्वामी हो तो वह जातक दरिद्र जीवन बिताने को बाध्य होता है।

योग संख्या २६५ के अनुसार पंचम भाव का स्वामी छठे भाव के स्वामी या आठवें भाव के स्वामी अथवा बारहवें भाव के स्वामी के साथ बैठा हो तो दरिद्र योग बन जाता है।

(२६६—२७०)

भिक्षुक योग

परिभाषा—(२६६) शुक्र लग्न में, बृहस्पति पंचम में, मंगल एकादश भाव में तथा चन्द्रमा तृतीय भाव में होकर नीच राशि में हो तो भिक्षुक योग होता है।

(२६७) गुरु छठे भाव बारहवें भाव में हो, जो कि उसकी राशि न हो तो भिक्षुक योग होता है।

(२६८) स्थिर लग्न में जन्म हो तथा समस्त पापग्रह केन्द्र या त्रिकोण में हों तथा सभी शुभ ग्रह शुभ स्थानों के बाहर हों तो भिक्षुक योग होता है।

(२६९) चर राशि का लग्न हो तथा जातक का जन्म रात्रि को हुआ हो, शुभग्रह निर्बल होकर केन्द्र या त्रिकोण में हों और पापग्रह केन्द्र में न हो तो भिक्षुक योग होता है।

(२७०) पापग्रह लग्न में द्वितीयेश या अष्टमेश के साथ हों तो भिक्षुक योग होता है।

फल—भिक्षुक योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति भाग्यहीन, स्त्री-पुत्र से निन्दित, विषम स्थिति में रहने वाला, आजीविका के प्रति चिंतित, उग्र वचन बोलने वाला तथा धनाभाव से चिंतित रहता है।

टिप्पणी—योग संख्या २६६ कम ही दिखाई देता है, क्योंकि यह अधिकतर कन्या राशि के लग्न में ही घटित हो सकता है। यों भी किसी की कुण्डली में तीन से अधिक ग्रह नीच राशि स्थित हो जाते हैं तो जातक को भाग्यहीन ही समझना चाहिए, जबकि यहाँ योग संख्या २६६ में चार ग्रह नीच राशि के बताये हैं, फलस्वरूप भिक्षुक योग प्रबल होता है।

योग संख्या २६७ सरल है, जिसमें केवल गुरु से ही भिक्षुक योग निष्पन्न हुआ है। इसके अनुसार यदि किसी कुण्डली का छठा भाव या बारहवाँ भाव गुरु की राशि न हो अर्थात् धनु या मीन राशि न हो और गुरु छठे या बारहवें भाव में स्थित हो तो जातक ने भिक्षुक जीवन बिताया ही है ऐसा समझना चाहिए।

योग संख्या २६८ में स्थिर राशि का लग्न हो। स्थिर राशि के लग्न ये हैं: वृष राशि का लग्न, सिंह राशि का लग्न, वृश्चिक राशि का लग्न, कुम्भ राशि का लग्न। इनमें से कोई लग्न हो तथा समस्त पापग्रह (सूर्य, क्षीण, चन्द्र, मंगल, शनि) केन्द्र (१, ४, ७, १०)

भाव तथा त्रिकोण (५, ९) भाव में हों और शुभग्रह केन्द्र स्थानों के बाहर हों तो भिक्षुक योग हो जाता है।

योग संख्या २६९ को भी विवेचन की जरूरत है, जिसके अनुसार लग्न चर राशि का हो, चर राशि के लग्न निम्न रूपेण हैं :

मेष राशि का लग्न, कर्क राशि का लग्न, तुला राशि का लग्न, मकर राशि का लग्न।

उपर्युक्त चारों में से कोई एक लग्न हो, पर यह आवश्यक है कि जातक का जन्म रात्रिकाल में हुआ हो। शुभग्रह (बुध, गुरु, शुक्र, एवं बलवान चन्द्रमा) निर्बल होकर केन्द्र (१, ४, ७, १०) या त्रिकोण (५, ९) भाव में हों और सभी पाप ग्रह केन्द्र स्थानों से बाहर हों तो भिक्षुक योग बन जाता है।

योग संख्या २७० के अनुसार लग्न में पापग्रह हो तथा उसके साथ दूसरे भाव का स्वामी या अष्टम भाव का स्वामी अथवा दोनों ही हों, क्योंकि कुण्डली में लग्न से अष्टम भाव मारक भाव कहा जाता है तथा मारक भाव से अष्टम भाव (अर्थात् द्वितीय भाव) भी मारक भाव कहा जाता है तथा इन दोनों के स्वामी भी मारकेश कहे जाते हैं। अतः लग्नेश तथा मारकेश एक साथ होने से भिक्षुक योग बन जाता है।

(२७१—२७३)
प्रेष्य योग

परिभाषा—(२७१)—रात्रि का जन्म हो तथा चर राशि का लग्न हो एवं सूर्य १०वें, चन्द्र ७वें, शनि ४थे, मंगल ३रे, गुरु २रे भाव में हो तो प्रेष्य योग होता है।

(२७२) स्थिर राशि का लग्न हो एवं शुक्र ९वें, चन्द्र ७वें, मंगल ८वें और गुरु लग्न में या दूसरे भाव में स्व राशि का हो तो प्रेष्य योग होता है।

(२७३) मकर का बृहस्पति अष्टम या द्वादश में हो, चन्द्रमा लग्न से चतुर्थ में हो तो प्रेष्य योग होता है।

फल—प्रेष्य योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति दीन वचन सुनने वाला, कटुभाषी, विद्या एवं भाग्य से हीन, चलचित्त एवं उम्र भर गुलामी करने वाला होता है।

टिप्पणी—योग संख्या २७१ में यह जरूरी है कि लग्न १, ४, ७, १० वीं राशि में से किसी एक राशि का हो तथा जातक का जन्म रात्रि में हुआ हो। साथ ही जन्म-कुण्डली में सूर्य १०वें भाव में, चन्द्र ७वें

भाव में, शनि ४थे भाव में, मंगल ३रे, गुरु २रे भाव में हों तो प्रेष्य योग सम्पन्न होता है।

योग संख्या २७२ के अनुसार प्रेष्य योग तब होता है, जब स्थिर राशि का जन्म हो। २, ५, ८, ११वीं राशि के लग्न स्थिर राशि के कहे जाते हैं। इस प्रकार की कुण्डली में शुक्र नवम भाव में, चन्द्र सप्तम भाव में, मंगल अष्टम भाव में तथा गुरु लग्न में या दूसरे भाग में स्व राशि का होकर बैठा हो। यह योग केवल वृश्चिक और कुंभ राशि की लग्न कुण्डली में ही घटित हो सकता है, अन्यत्र नहीं।

योग संख्या २७३ केवल कुंभ या मिथुन लग्न वालों की कुण्डली में ही घटित हो सकता है, क्योंकि तभी बृहस्पति मकर राशि का होकर अष्टम भाव या द्वादश भाव में स्थित हो सकता है। साथ ही चन्द्र चतुर्थ भाव में हो तो प्रेष्य योग घटित होता है।

(२७४—२७५)
अंगहीन योग

परिभाषा (२७४)—शनि सप्तम भाव में हों तथा मंगल एवं राहु नवम भाव में हों तो अंगहीन योग होता है।

(२७५) जन्म-कुण्डली में चन्द्रमा लग्न से दशम भाव में हो, मंगल सप्तम भाव में, सूर्य दूसरे भाव में हो तो अंगहीन योग होता है।

फल—अंगहीन योग में जातक के शरीर का कोई हिस्सा कटा हुआ या विकलांग हो।

टिप्पणी—योग संख्या २७४ तथा २७५ स्पष्ट हैं, अतः इनके विवेचन की आवश्यकता नहीं है।

(२७६)
कूबड़ योग

परिभाषा—कर्क लग्न हो तथा चन्द्रमा कर्क राशि में ही हो एवं उस पर शनि मंगल की पूर्ण दृष्टि हो तो कूबड़ योग होता है।

फल—कूबड़ योग में उत्पन्न जातक की पीठ बाहर निकल जाती है और सीना अन्दर की ओर धंस जाता है एवं उसका व्यक्तित्व शिथिल हो जाता है।

टिप्पणी—परिभाषा स्पष्ट है, अतः विवेचन की आवश्यकता नहीं।

(२७७)
एक पाद योग

परिभाषा—मीन राशि का लग्न हो एवं उस पर शनि, चन्द्रमा एवं मंगल की पूर्ण दृष्टि हो तो एक पाद योग होता है।

फल—एक पाद योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति एक पैर से लँगड़ा होता है।

(२७८)
जड़ योग

परिभाषा—चन्द्रमा और पापग्रह चौथे भाव में हों तथा लग्नेश छठे स्थान मे हो तो जड़ योग होता है।

फल—जड़ योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति बहरा होता है।

(२७९—२८७)
नेत्रनाश योग

परिभाषा—(२७९)—छठे घर का स्वामी और दसवें घर का स्वामी एवं दूसरे घर का स्वामी ये तीनों ग्रह एक साथ लग्न में बैठे हों तो नेत्रनाश योग होता है।

(२८०) बारहवें भाव में चन्द्र हो तो नेत्रनाश योग होता है।

(२८१) द्वादश भाव में सूर्य हो तो भी यही योग होता है।

(२८२) सिंह लग्न हो तथा लग्न में सूर्य हो तो भी यही योग होता है।

(२८३) कर्क लग्न में सूर्य हो तो नेत्रनाश योग होता है।

(२८४) यदि सूर्य लग्न या सातवें भाव में हो, उसे शनि देखता हो या शनि सूर्य के साथ हो तो यही योग होता है।

(२८५) लग्न में या सातवें भाव में सूर्य, राहु और मंगल बैठे हों तो यही योग होता है।

(२८६) सूर्य, चन्द्र बारहवें भाव में हों, छठे, आठवें या बारहवें भाव में पापग्रह हों तो नेत्रनाश योग होता है।

(२८७) यदि द्वितीयेश शुक्र और चन्द्रमा के साथ होकर लग्न में हो तो यही योग होता है।

फल—नेत्रनाश योग होने पर जातक आँखों से कमजोर होता है तथा नेत्र-पीड़ा से व्यथित रहता है।

टिप्पणी—नेत्रनाश योग तभी लागू होता है, जब संबंधित ग्रह की दशा आती है। ऊपर जो-जो योग निर्दिष्ट किये हैं उनके फल विशेष
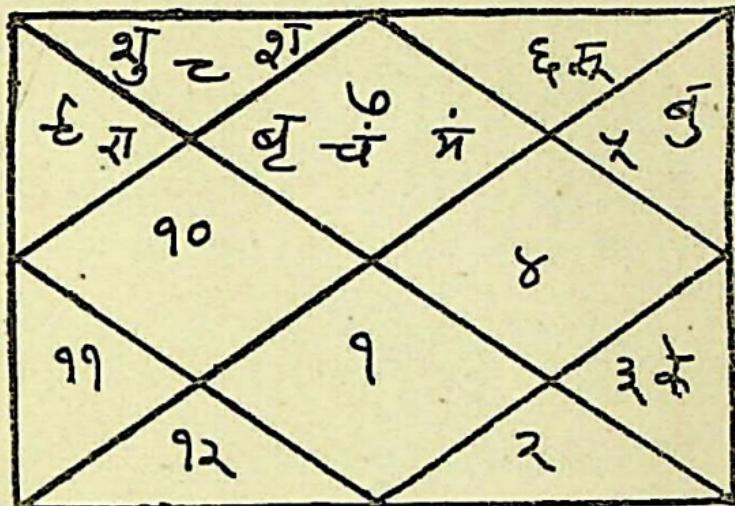
रूप से इस प्रकार होंगे।

२७९—आँखों में भयंकर पीड़ा। दूसरे घर के स्वामी की दशा में वाम आँख चली जाती है।

२८०—चन्द्र दशा में वाम नेत्र की हानि।

२८१—सूर्य की दशा में दाहिने नेत्र की हानि।

२८२—रात्र्यन्ध होता है। (सूर्य की दशा में)

२८३—छोटी आँखों वाला तथा नेत्रों से पानी गिरना प्रारम्भ हो जाता है।(सूर्य की दशा में)

२८४—सूर्य की दशा में दायीं आँख नष्ट होती है।

२८५—सूर्य की दशा में बायीं आंख नष्ट होती है।

२८६—षष्ठेश की दशा में वाम नेत्र तथा अष्टमेश की दशा में दाहिने नेत्र की हानि होती है।

२८७—चन्द्रमा की दशा में रात्र्यन्ध होता है।

नेत्रनाश योग में यह भी ध्यान रखना चाहिए कि यदि लग्नेश निर्बल होता है तो लग्नेश की महादशा और संबंधित ग्रह की अन्तर्दशा में भी यह योग लागू हो जाता है। इस प्रकार द्वितीयेश और अष्टमेश की महादशा में संबंधित ग्रह की अन्तर्दशा आने पर भी यह योग लागू हो जाता है।

(२८८—२९५)

अंध योग

परिभाषा २८८—बुध और चन्द्रमा द्वितीय भाव में बैठे हों तो

अंध योग होता है।

२८६—लग्नेश और द्वितीयेश दोनों ग्रह सूर्य के साथ दूसरे भाव में बैठे हों तो यही योग होता है।

२९०—सिंह लग्न में सूर्य और चन्द्र हों, उन्हें मंगल और शनि देखते हों तो अंध योग होता है।

२९१—सूर्य और चन्द्रमा दोनों बारहवें भाव में हों तो अंध योग होता है।

२९२—यदि मंगल दूसरे भाव का स्वामी होकर सूर्य और चन्द्रमा से ८वें भाव में हो और शनि ६ठे या १२वें भाव में हो तो अंध योग होता है।

२९३—शनि मंगल साथ में बैठे हों और चन्द्रमा ६, ८, १२वें भाव में हो तो अंध योग होता है।

२९४—चन्द्रमा ६ठे हो, सूर्य आठवें हो, लग्न से १२वें शनि हो और दूसरे भाव में मंगल हो तो अंध योग होता है।

२९५—दूसरे भाव का स्वामी लग्नेश के साथ ६, ८·१२वें भाव में हो तो अंध योग होता है।

फल—अंधयोग में उत्पन्न होने वाला जातक अंधा होता है।

टिप्पणी—आँखों की ज्योति और दृष्टि का विवेचन विशेष रूप से सूर्य और चन्द्रमा से किया जाता है, इनमें भी विशेष रूप से चन्द्रमा पर ध्यान देना चाहिए। यदि किसी जातक की कुण्डली में सूर्य तथा चन्द्रमा नीच राशि के या शत्रु क्षेत्री हों तो जातक की दृष्टि निर्बल समझनी चाहिए। इस पर भी ६ ८, १२वाँ भाव सूर्य तथा चन्द्रमा के लिए अकारक भाव है अर्थात् इन भावों में पड़कर ये दोनों ग्रह तुरन्त अशुभ फल प्रदान करते हैं। यह योग मुख्यतः चन्द्रमा की महादशा या संबंधित ग्रह में चन्द्रमा की अन्तर्दशा में लागू होता है। जिस जातक की कुण्डली में चन्द्रमा नीच का या अस्त अथवा शत्रु क्षेत्री हो उसे चाँदी अँगूठी में मोती पहनना चाहिए।

योग संख्या २८८ से २९५ अंध योग ही है, परन्तु इनमें भी २९४ वाँ योग प्रबल जन्मांध योग है, इस योग में उत्पन्न जातक अत्यन्त बाल्यावस्था में ही अंधा हो जाता है या अंधा ही जन्म लेता है।

सभी योगों की परिभाषाएँ स्पष्ट हैं, अतः विवेचन की विशेष आवश्यकता नहीं।

(२९६)

शीतला योग

परिभाषा—लग्न में मंगल हो और उसे शनि और सूर्य पूर्ण रूप से देखते हों तो शीतला योग होता है।

फल—शीतला योग होने वाले व्यक्ति के जीवन में उसे चेचक रोग से संघर्ष लेना ही पड़ता है।

(२९७—२९९)

सर्प भय योग

परिभाषा—२९७—तीसरे भाव का स्वामी राहु से संबंधित राशि के स्वामी से युत हो तो सर्प भय योग होता है।

२९८—तीसरे भाव का स्वामी राहु के साथ लग्न में हो तो सर्प भय योग होता है।

२९९—कुण्डली में समस्त ग्रह राहु और केतु के बीच में ही स्थित हों तो सर्प भय योग होता है।

फल—सर्प भय योग जिस जातक की कुण्डली में होता है, उसे जीवन में साँप काटता है और संबंधित ग्रह बलवान होने पर सर्प के काटने से जातक की मृत्यु भी हो जाती है।

टिप्पणी—योग संख्या २९७ को विवेचन की जरूरत है। इसके अनुसार राहु जिस राशि पर बैठता है, उस राशि का स्वामी तीसरे भाव के स्वामी के साथ कुण्डली में हो तो सर्प भय योग होता है।

योग सख्या २९८ की परिभाषा स्पष्ट है, इसमें तीसरे भाव का स्वामी यदि राहु के साथ लग्न में हो तब भी सर्प भय योग बन जाता है।

योग २९९ के अनुसार समस्त ग्रहों के एक ओर राहु हो तथा दूसरी ओर केतु हो तो सर्प भय योग बन जाता है। कुछ विद्वान योग संख्या २९९ को 'काल सर्प योग' भी कहते हैं। यह योग होने पर जातक की मृत्यु निश्चित ही सांप के काटने से होती है।

(३००)

ग्रहण योग

परिभाषा—यदि चन्द्रमा और राहु दोनों एक ही भाव में बैठे हों या चन्द्रमा को राहु पूर्ण दृष्टि से देख रहा हो तो ग्रहण योग होता है।

फल—जिस जातक की कुण्डली में ग्रहण योग होता है, वह परेशानियों से ग्रस्त और हीन भावना का शिकार होता है।

टिप्पणी—विशेषत: जिस भाव में भी चंद्रमा और राहु एक साथ बैठ जाते हैं, उस भाव को समाप्त कर देते हैं। उदाहरणार्थ यदि पंचम भाव में राहु और चंद्र साथ बैठे हों तो जातक विद्या एवं सन्तान से अभागा ही रहता है।

(३०१)

चांडाल योग

परिभाषा—गुरु और राहु या गुरु और केतु एक साथ बैठे हों अथवा गुरु पर राहु या केतु की पूर्ण दृष्टि पड़ती हो तो चांडाल योग होता है।

फल—चांडाल योग में उत्पन्न व्यक्ति भाग्यहीन, मंद बुद्धि, आजीविका से असन्तुष्ट और शरीर पर घाव का चिन्ह लिये हुए होता है।

टिप्पणी—अनुभव से ऐसा देखा गया है कि गुरु राहु या गुरु केतु जिस भाव पर भी स्थित होता है उस भाव को साधारण कोटि का बना देता है।

(३०२—३०४)

गल रोग योग

परिभाषा—३०२—तृतीय भाव का स्वामी बुध से युक्त होकर लग्न भाव में हो तो गल रोग योग होता है।

(३०३)—तीसरे भाव में नीच राशि का ग्रह या शत्रु राशिस्थ या अस्त होकर पापग्रह से देखा जाता हो तो गल रोग योग होता है।

(३०४)—पापग्रह तीसरे भाव में हो तथा मंगल से देखा जाता हो तो गल रोग योग होता है।

फल—गल रोग योग में जातक के गले में रोग हो जाता है तथा वह गले के रोग से व्यथित रहता है।

(३०५—३०६)

व्रण योग

परिभाषा—३०५ मंगल अष्टम भाव में पापग्रह से देखा जाता हो। केतु दूसरे भाव में या अष्टम भाव में हो तो व्रण योग होता है।

३०६—छठे भाव का स्वामी लग्न में पापग्रह से युक्त हो या अष्टम भाव में हो तो व्रण रोग योग होता है।

फल—व्रण योग में उत्पन्न जातक की मृत्यु घाव से या घाव के सड़ने से होती है।

(३०७)

लिंगश्च्छेदन योग

परिभाषा—छठे भाव का स्वामी बुध और राहु के साथ लग्न में हो तो लिंगश्च्छेदन योग होता है।

फल—यह योग होने पर जातक का लिंग या तो किसी वजनी वस्तु से कुचल जाता है या जातक स्वयं लिंग को काट देता है।

(३०८—३१०)

उन्माद योग

परिभाषा—३०८ लग्न में सूर्य हो तथा सप्तम में मंगल हो तो उन्माद योग होता है।

(३०९) लग्न में शनि, सातवें, पाँचवें या नवें भाव में मंगल हो तो उन्माद योग होता है।

(३१०) धनु लग्न हो, लग्न (१) या त्रिकोण (५, ९) में सूर्य और चन्द्रमा साथ बैठे हों, गुरु तीसरे भाव में या केन्द्र (१, ४, ७, १०) भाव में हो तो उन्माद योग होता है।

फल—उन्माद योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति बातूनी, बकवादी, जोर-जोर से व्यर्थ में बोलने वाला और गप्पबाज होता है।

टिप्पणी—यदि ग्रह बलिष्ठ हों तो जातक पागल हो जाता है

(३११)

कलह योग

परिभाषा—चन्द्रमा पापग्रह के साथ राहु से युक्त होकर १२वें या ५वें या ८वें भाव में हो तो कलह योग होता है।

फल—कलह योग होने पर जातक का जीवन कलहपूर्ण होता है तथा कलह के अतिरेक से व्यथित होकर ही उसकी मृत्यु होती है।

(३१२—३१५)

कुष्ठ रोग योग

परिभाषा—(३१२) मंगल और बुद्ध के साथ यदि लग्न का स्वामी चौथे या बारहवें भाव में हो तो कुष्ठ रोग योग होता है।

(३१३) शनि चन्द्रमा के साथ गुरु छठें भाव में हो तो कुष्ठ रोग योग होता है।

(३१४) लग्नपति को छोड़ अन्य सब पाप ग्रह लग्न में हों तो कुष्ठ रोग योग होता है।

(३१५) शनि या मंगल से युक्त चन्द्रमा, कर्क, मीन या मकर

राशि में हो तथा शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो तो कुष्ठ रोग योग होता है।

फल—जातक कुष्ठ रोग से पीड़ित होता है।

टिप्पणी—कुष्ठ रोग एक भयानक रोग है, जिसके होने पर सारे शरीर में सफेद-सफेद दाग पड़ जाते हैं, व्यक्ति का शरीर बदरंग हो जाता है तथा घाव सड़ने पर पीव पड़ जाती है। अभी तक चिकित्सा-विज्ञान इस रोग का उत्तम निदान नहीं ढूंढ़ सका है। ज्योतिष-विज्ञान से इस रोग का पूर्व पता चल जाता है और समय भी ज्ञात किया जा सकता है कि किस उम्र में यह रोग होगा। यदि समय से पूर्व इसका उपचार कर लिया जाय या संबंधित रोग के टीके लगाये जाएँ तो जातक कुछ स्वस्थ रह सकता है।

मैंने सैकड़ों ऐसी कुण्डलियाँ देखी हैं और समय से पूर्व इस संबंध में मैंने भविष्यवाणियाँ की थीं, जो पूर्णतः सही उतरीं। ग्रह शांति से भी इस रोग में न्यूनता लाई जा सकती है।

(३१६—३१७)
जलोदर रोग योग

परिभाषा—(३१६) शनि कर्क राशि का हो, चन्द्रमा मकर का हो तो जलोदर रोग योग होता है।

(३१७) छठे भाव में मंगल से युक्त शनि को सूर्य और राहु देखते हों एवं लग्नेश निर्बल हो तो जलोदर रोग होता है।

फल—जलोदर रोग में पेट में पानी भर जाता है और पेट फूलता रहता है। अंत में इसी रोग से जातक की मृत्यु हो जाती है। जलोदर रोग योग रखने वाले जातकों को यह रोग अवश्य होता है।

(३१८)
चाप योग

परिभाषा—जन्म-कुण्डली में दशम स्थान से अगले सात स्थानों में एक-एक करके सभी ग्रह स्थित हों तो चाप योग होता है।

फल—चाप योग में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति अपने जीवन के प्रारंभिक वर्षों तथा अन्तिम वर्षों में सुख भोगता है। ऐसा व्यक्ति अधिकतर भ्रमणशील होता है और आजीविका का माध्यम भी ऐसा चुनता है, जो भ्रमण प्रधान हो। जातक अभिमानी भी होता है तथा शिकारी वृत्ति वाला होता है।

(३१९)

छाप योग

परिभाषा—लग्न का स्वामी लग्न भाव में ही हो तथा दशम भाव का स्वामी चतुर्थ भाव में एवं चतुर्थ भाव का स्वामी दशम भाव में स्थित हो तो छाप योग होता है।

फल—छाप योग में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति उच्च पद प्राप्त कर जीवन आनन्दपूर्वक व्यतीत करता है तथा आर्थिक दृष्टि से सौभाग्यशाली होता है।

टिप्पणी—मेरे अनुभव के आधार पर यह योग पूर्णतः सही उतरता है और ऐसा व्यक्ति बैंक मैनेजर या ट्रेजरी आफीसर अथवा ऐसा कार्य जिसमें रुपयों का लेन-देन प्रधान होता है करता है या नौकरी करता है।

(३२०—३२१)

भेरी योग

परिभाषा—(३२०) यदि किसी जातक की कुण्डली में १, २, ७ और १२वें भाव में ग्रह हों तथा दशम भाव का स्वामी बली हो तो भेरी योग होता है।

(३२१) बृहस्पति से केन्द्र में शुक्र और लग्नेश हों और नवम भाव का स्वामी बलवान हों तो भेरी योग होता है।

फल—भेरी योग में उत्पन्न होने वाला व्यक्ति, दीर्घायु, धनवान गुणवान, चतुर, रोग-भय से रहित, धन, भूमि-स्त्री से सम्पन्न, पराक्रमवान, शत्रुओं का संहार करने वाला तथा उच्च विचारों वाला, उच्च पद प्राप्त करने वाला व्यक्ति होता है।

टिप्पणी—पिछले कई वर्षों के अनुभव के आधार पर मैं स्पष्ट कह सकता हूँ कि जिस जातक की कुण्डली में भेरी योग होता है वह निश्चित रूप से उन्नति करता है तथा उसके जीवन में धन का अभाव नहीं अपितु सहज ही वह उच्च पद पर आसीन होता है। योग संख्या ३२० के अनुसार यदि लग्न से १, २, ७ और १२वें भाव ग्रह युक्त हो तो भेरी योग सम्पन्न होता है। ब्रिटेन के भूतपूर्व प्रधानमन्त्री चर्चिल की जन्म-कुण्डली में भेरी योग स्पष्ट है।

इसी प्रकार योग संख्या ३२१ भी भेरी योग का ही उदाहरण है, इसके अनुसार भेरी योग तब होता है, जब बृहस्पति से गणना करने पर उससे (१, ४, ७, १०) वें भावों में ही लग्न का स्वामी
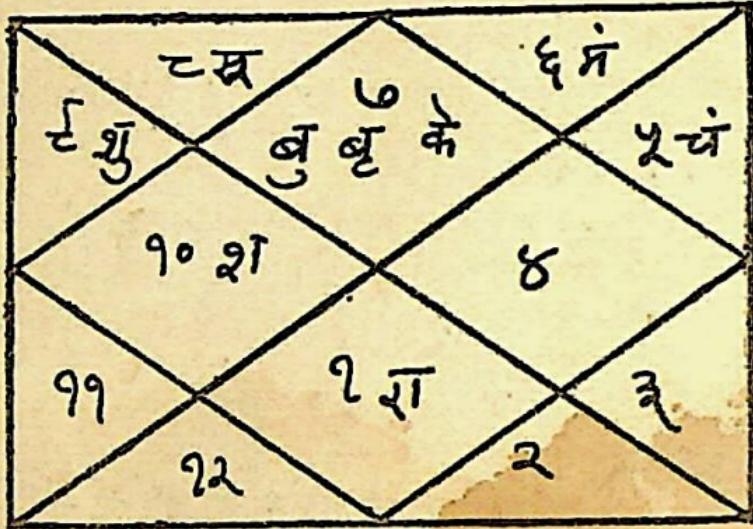
विन्सेन्ट चर्चिल (भूतपूर्व प्रधानमन्त्री, ब्रिटेन)

और शुक्र स्थित हों। यह आवश्यक नहीं कि लग्नेश और शुक्र एक साथ ही बैठे हों। नीचे दी गई कुण्डली प्रसिद्ध लेखक एच० जी० वेल्स की है जिसमें भेरी योग (संख्या ३२१) स्पष्ट है। गुरु से केन्द्र भाव (१०वें भाव) में शुक्र और शनि स्थित हैं। शनि लग्न का स्वामी है। अतः भेरी योग स्पष्ट है।
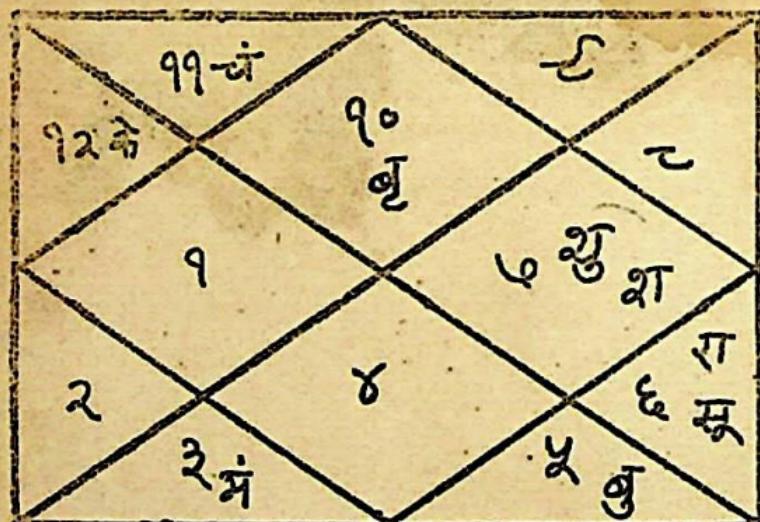
(एच० जी० वेल्स)

(३२२)

मृदङ्ग योग

परिभाषा—यदि उच्च गत ग्रह का नवांशपति केन्द्र या कोण हो और अपने उच्च गृही या स्वगृही हो, बलवान हो और लग्नेश भी बली हो तो मृदङ्ग योग होता है।

फल—मृदङ्ग योग रखने वाला व्यक्ति राज्य में उन्नति करता है तथा अपने कार्यों से ख्याति प्राप्त करता है। वह प्रत्येक कार्य को विशेष योग्यता एवं दक्षता से निवटाता है तथा दूसरे लोगों पर अपना प्रभाव डालने में होशियार होता है।

टिप्पणी—कुण्डली में कोई भी एक ग्रह अपनी उच्च राशि में हो, उस ग्रह का नवांशपति यदि जन्म-कुण्डली में लग्नेश से केन्द्र (१, ४, ७, १०) या कोण (५, ९) में हो, साथ ही वह या तो स्वगृही हो या उच्च गृही हो एवं बली हो, साथ ही लग्न का स्वामी भी बली हो तो मृदङ्ग योग होता है।

(३२३)

श्रीनाथ योग

परिभाषा—सप्तम भवन का स्वामी दशम भाव में हो और दशम भाव का स्वामी अपनी उच्च राशि में स्थित होकर नवम भाव के स्वामी के साथ हो तो श्रीनाथ योग होता है।

फल—श्रीनाथ योग में जन्म लेने वाला व्यक्ति पूर्ण धनवान होता है, उसका पारिवारिक जीवन अत्यन्त सुखी होता है तथा स्त्री एवम् बच्चों से प्रेम करने वाला होता है। भाग्य निरन्तर उसका साथ देता रहता है तथा उच्च पद पर प्रतिष्ठित होता है।